

आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 जुलाई 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जुलाई 2022
ISSN : 2456-611X



राम चमकते भानु समाना

वर्ष : 60 अंक : 07
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

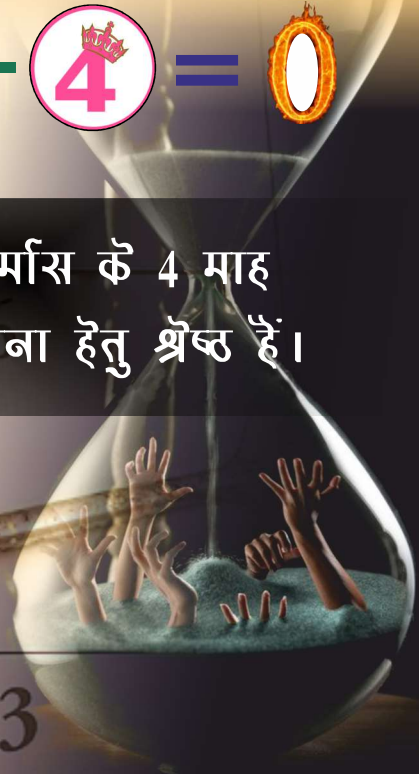
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक

$$12 - 4 = 0$$

चातुर्मास के 4 माह
आराधना हेतु श्रेष्ठ हैं।



बिन्दु से सिन्धु तक

—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

- जो 'पास' है वो 'पाश' है अर्थात् वो बंधन का कार्य करता है।
- समाधि का अर्थ है हर परिस्थिति में स्वयं को समरूप - एकरूप बनाए रखना।
- साधना के सम्यक् भाव हेतु अतुल उत्साह की आवश्यकता है और वह उत्साह प्राप्त होता है दृढ़ मनोबल से।
- मानसिक क्षमता का प्रभाव शरीर तंत्र पर अवश्य पड़ता है। यदि मन एकाग्र है तो शरीर-काया से एकाग्रता सहज सिद्ध हो सकती है।
- त्याग की भावना ज्यों-ज्यों प्रबल बनती है वैसे-वैसे लेश्याओं का परिमार्जन होता जाता है।
- कठिनाइयों में मन को कमजोर मत होने दो, ये तुम्हारी सुप्त शक्तियों को जागृत करने आती हैं।
- धन संग्रह तुम्हारे जीवन को असुरक्षित कर देगा, वह रक्षा में समर्थ नहीं है, उल्टे तुम्हें ही उसका रक्षक बनना पड़ेगा।
- हमारी समझ की यही कमी है कि जहाँ प्रकाश है, वहाँ वस्तु टूटने लगते हैं, लेकिन वह जहाँ खोई है उस जगह प्रकाश करके नहीं टूटते।
- यदि चारित्र्य को स्वीकार कर केवल आलस्य और प्रमाद में क्षण जा रहे हैं, तो वह आराधना नहीं, विराधना का स्वरूप बन जाएगा।
- जब तक हमारी आँखों पर किसी विशेष रंग का चश्मा चढ़ा है तब तक वस्तु का वैसा ही रंग एवं स्वरूप दिखाई देगा।
- मन को वश में करने के लिए शरीर को वश में करना होगा और फिर मन शरीर के निर्देशानुसार कार्य में तत्पर होगा।
- केवल चिन्तन-मनन से जीवन संस्कारित नहीं होता। जैसे घड़े को आग में पकाया जाता है, वैसे ही संस्कार के लिए जीवन को तपाना होता है, साधना करनी होती है।
- सत्य कड़वा होता है, पर याद रखिये कि सत्य कड़वा नहीं होता, अपितु हमें कड़वा लगता है। मलेरिया है तो गेंहूँ की रोटी कड़वी लगेगी। कफ की प्रवृत्ति है तो पानी में कड़वाहट लगेगी। वास्तव में रोटी और पानी कड़वे नहीं होते, कड़वापन तो हमारे भीतर होता है।
- बाल्टी झुकती है तो उसके भीतर की वायु बाहर निकलती है और उसमें पानी भर जाता है। उसी प्रकार जब हम मन, वचन और काया के योग को भावों में जोड़कर अपने जीवन-पात्र को झुकाते हैं तो अर्हता हमारे भीतर समाविष्ट हो जाती है, हमारा मनोबल बढ़ जाता है।



आगमवाणी

एयं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसई किंचणं।
अहिंसा समयं चेव, एतावत्तं वियाणिया॥

–सूत्रकृतांग (1/1/4/10)

ज्ञानी होने का सार यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। 'अहिंसामूलक समता ही धर्म का सार है' बस इतनी बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए।

The essence of learning is in being non-violent towards all the living. One must know that the equanimity based on non-violence is the essence of the faith.

अट्टा हणंति, अणट्टा हणंति।

–प्रश्नव्याकरण (1/1)

कुछ लोग प्रयोजन से हिंसा करते हैं और कुछ लोग बिना प्रयोजन भी हिंसा करते हैं।

Some are violent by nature. They kill on purpose and without purpose as well.

कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति।

–प्रश्नव्याकरण (1/1)

कुछ लोग क्रोध से हिंसा करते हैं, कुछ लोग लोभ से हिंसा करते हैं और कुछ लोग अज्ञान से हिंसा करते हैं।

Some kill for anger, some for greed and some due to ignorance.

पाणवहो चंडो, रूद्धो, खुद्धो अणारियो,
निग्घिणो, निसंसो, महब्भयो।

–प्रश्नव्याकरण (1/1)

प्राणवध (हिंसा) चंड है, रौद्र है, क्षुद्र है, अनार्य है, करुणारहित है, क्रूर है और महाभयंकर है।

Violence is fierce, terrible, mean, ignoble, cruel, merciless and highly fearsome.

साभार- प्राकृत मुक्तावली





अनुक्रमणिका

जीवनी / धर्म देशना

PAVE THE WAY	07
विहंगावलोकन	09
चातुर्मास स्वयं के लिए उपयोगी बने	12
ताला जो आज लगेगा	14

ज्ञान सार

ऐसी वाणी बोलिये...	17
श्रीमद् भगवती सूत्र	19
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र	20

संस्कार सौरभ

संतों का मोन संदेश	16
महारानी राजीमती	26
चातुर्मास है समय की दस्तक.....	30
अन्तर्जगत् के बोध प्रदाता प्रभु महावीर	31
चातुर्मास के लाभ	37
चातुर्मास और विज्ञान	38
शाकाहार, यूनानी दार्शनिकों की दृष्टि में	40
भगवान महावीर और चातुर्मास	41
सबसे बड़ा मूर्ख	42

तत्त्व ज्ञान

समकित के 67 बोल	22
प्रत्याख्यान मार्गदर्शिका	33

विविध

Good Box	43
बालमन में उपजे ज्ञान	47
चातुर्मास में अवश्य करणीय	50
गुरुचरण विहार	52

भक्ति रत्न

सच्चे गुरु	08
चातुर्मास	36
चातुर्मास : कुछ तो खास हो	39
भीतरी सफाई का मौका है चातुर्मास	49

चिन्तन पराग

चातुर्मास कल्प

—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री नानालालजी म.सा.

शास्त्रीय मर्यादानुसार जैन मुनियों के लिए जिन कल्पों का विधान किया गया है उनमें चातुर्मास कल्प एक महत्वपूर्ण कल्प है। शास्त्र में निर्दिष्ट है कि मुनि वर्ष के आठ मास संयम और तप से आत्मा को भावित करता हुआ ग्रामानुग्राम विचरण करे। जैसे बहता हुआ पानी निर्मल होता है वैसे ही विचरण करता हुआ मुनि भी अनासक्त, अप्रतिबद्ध और निर्ममत्व होने के कारण निर्मल बना रहता है। अधिक समय तक एक स्थान पर रहने से ममत्व पैदा होने की संभावना रहती है। उसको टालने के लिए मुनि को अप्रतिबद्धविहारी होना चाहिए। जिस संयम की साधना और रक्षा हेतु शेषकाल में विहार की अनुज्ञा है, उसी संयम की साधना और रक्षा हेतु ही चातुर्मास काल में एक स्थान पर रहने की भी अनुज्ञा है। जीवोत्पत्ति विशेष होने के कारण गमनागमन द्वारा उनकी विराधना टालने के लिए चातुर्मास कल्प में मुनियों को एक स्थान पर रहने का शास्त्रीय निर्देश है।

इस कल्प का उद्देश्य मुनियों की आत्मसाधना तो है ही, परन्तु इसके साथ ही संघ, तीर्थ, समाज और सर्वसाधारण के कल्याण की भावना भी इसमें सन्निहित है। मुनि जहाँ चातुर्मास करते हैं, वहाँ की जनता को धर्मासाधना की प्रेरणा करते हैं। सर्वसाधारण जनता को अवलम्बन की आवश्यकता होती है। मुनियों के अवलम्बन से जनता में धार्मिक भावनाएँ जागृत होती हैं। धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न होती है और उनकी प्रेरणा से जनता का नैतिक और आत्मिक धरातल समुन्नत

होता है। प्रभु महावीर की शासन व्यवस्था बहुत ही उत्तम कोटि की है। इसमें व्यक्तिगत कल्याण के साथ ही साथ समष्टि का कल्याण भी सन्निहित है। इसी दृष्टिकोण से चातुर्मास कल्प जहाँ मुनियों के लिए आत्मकल्याण का साधन है, वहीं संघ एवं समाज के लिए भी अत्यन्त हितावह और कल्याणकारी है। साधु-संत आत्मकल्याण के साथ ही सर्वसाधारण को बिना किसी भेदभाव के आशंसा रहित होकर, एकान्त परमार्थ दृष्टि से उपदेश देकर उनके जीवन को संस्कारित करने का प्रयत्न करते हैं। वे स्वयं भी संयम मार्ग की आराधना करते हैं और अन्यो को भी संयम मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

साभार— नानेशवाणी—45

चातुर्मासिक मर्यादा की पृष्ठभूमि

—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलालजी म.सा.

चातुर्मास एक मर्यादा है, कल्प है। ऊपरी तौर पर अनेक प्रश्न उपस्थित हो सकते हैं कि साधु को एक स्थान पर इतना क्यों रुकना? अधिक गाँवों में भ्रमण करने पर अधिक जनसम्पर्क होगा। अधिक लोग धर्म के प्रति अग्रसर होंगे। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रश्न उठते हैं। इनका समाधान मात्र तर्क से संभव नहीं है। कल्प/मर्यादा आदि का संबंध भावनात्मक है। उसके मूल में अहिंसा की प्रतिष्ठा है। जीवदया साधना का प्रमुख अंग है। चातुर्मासिक मर्यादा में वही पृष्ठभूमि है।

दिनांक : 22 नवम्बर, 1999

संवेदनहीन होती मानसिकता

जय जिनेन्द्र!

भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से अहिंसा को बड़ा महत्त्व दिया गया है। भगवान महावीर ने अहिंसा को सर्वोपरी मानते हुए “अहिंसा परमो धर्मः” का नारा दिया था।

समस्त जीव राशि के प्रति संवेदनशीलता रखते हुए उनकी रक्षा करने को बड़ा महत्त्व दिया जाता रहा है। किन्तु वर्तमान समय में कुछ असामाजिक तत्त्वों द्वारा संवेदनहीनता की पराकाष्ठा को पार करते हुए निरीह प्राणियों तथा मानवों की हत्या करने में भी संकोच नहीं किया जा रहा है। समाचार पत्रों तथा अन्य सामाजिक माध्यमों से प्रतिदिन ऐसी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जहाँ असंवेदनशीलता के कारण हिंसा कर दी जाती है।

हाल ही में उदयपुर शहर में मानवता को शर्मसार करने वाली एक घटना घटित हुई है। विभिन्न समाचार तथा अन्य सूचना माध्यमों से प्राप्त जानकारी के अनुसार भिन्न धार्मिक मान्यता होने के कारण एक पक्ष के लोगों द्वारा दूसरे पक्ष के एक बेगुनाह व्यक्ति की हत्या कर दी गई।

इस घटना तथा ऐसी ही अन्य घटनाओं के पीछे मुख्य कारण है संवेदनहीन मानसिकता। जहाँ स्वयं की मान्यता को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए हिंसा करने में भी संकोच नहीं किया जाता है। किसी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक या अन्य प्रभाव या बहकावे में आकर अपने स्वविवेक का उपयोग किए बिना क्षणिक आवेग में मानव जघन्य अपराध कर देता है। उनकी विवेक शक्ति आवेग के क्षणों में लुप्त हो जाती है। मनोविज्ञान के अनुसार विकृत और संवेदनहीन विचारधारा या मानसिकता इस प्रकार की घटनाओं के लिए उत्तरदायी है। दार्शनिक दृष्टिकोण से यह संवेदनशीलता और संवेदनहीनता, करुणा और क्रूरता, दया और निर्दयता के मध्य लड़ाई का परिणाम है।

करुणा प्रधान भारतीय समाज में इस प्रकार की घटनाएँ घटित होना अत्यंत चिंताजनक विषय है। इस प्रकार की घटनाएँ यह प्रदर्शित करती हैं कि मानव में संवेदनशीलता की भावना कम होती जा रही है। इस प्रकार की घटनाओं को तत्काल रोका जाना आवश्यक है, अन्यथा भविष्य में स्थिति अत्यंत भयावह हो सकती है।

ऐसी घटनाओं के कारण हमारी आने वाली पीढ़ियों पर अत्यंत घातक प्रभाव होता है। उनकी विचारधारा पर भी ऐसी घटनाएँ नकारात्मक प्रभाव डालती है। बढ़ती हुई नकारात्मकता तथा संवेदनहीनता को कम किया जाना अत्यंत आवश्यक है। हमें सकारात्मक, संवेदनशील तथा सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक वातावरण बनाने के लिए प्रयास करने होंगे। कई बार अनजाने में या प्रमादवश कुछ लोग हिंसा को बढ़ावा देने में सहयोगी बन जाते हैं। उदाहरण स्वरूप किसी सोशल मीडिया ऐप पर प्राप्त संदेश, सूचना या वीडियो को बिना तथ्य जाँचे फॉरवर्ड कर देना भी कभी-कभी हिंसा का कारण बन जाता है। इसी प्रकार किसी अफवाह पर ध्यान देकर या उसे सच मानकर आगे फैलाने से भी हिंसा हो सकती है।

आप सभी अपनी जिम्मेदारी समझें तथा ऐसी कोई भी घटना या परिस्थिति, जो किसी प्रकार की हिंसा का कारण बन सकती है; पर स्वविवेक का प्रयोग करते हुए संवेदनशीलता से प्रतिक्रिया व्यक्त करें तथा अपने आस-पास के लोगों को भी विवेक का प्रयोग करते हुए आचरण करने का सुझाव दें। आप सभी मिलकर ही इस प्रकार की असामाजिक घटनाओं की कड़ी को तोड़ने का कार्य कर सकते हैं।

इस कार्य की शुरुआत आप स्वयं कर सकते हैं। स्वयं को अकेला ना समझें, क्योंकि अच्छे कार्य के लिए कई लोग तैयार हो जाते हैं, लेकिन उन्हें किसी शुरुआत करने वाले (मुखिया) की आवश्यकता होती है। आप बनें शुरुआत करने वाले। यह कार्य ज्यादा मुश्किल नहीं है, क्योंकि आप सभी के सामने हिंसा, नकारात्मकता तथा असामाजिकता फैलाने वाले लोगों की संख्या नगण्य है।

इस लेख को पढ़ने के बाद आप यह प्रतिज्ञा करें कि कभी भी किसी भी माध्यम से असामाजिकता या हिंसा को पोषण देने वाली पोस्ट को आगे बढ़ाने या उग्रता दिलाने वाली कोई बात किसी से नहीं कहेंगे तथा किसी सोशल मीडिया पर शेयर भी नहीं करेंगे। इसके साथ ही प्रतिदिन विश्वशान्ति की मंगलभावना भाएँगे। इसी शुभ भावना के साथ...

सह-सम्पादिका

PAVE THE WAY

Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

Under the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Puja Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.A.

Continued from 15-16 June 2022

Dear children!

The voice of Hukm's conscience created such an enthusiasm in his mind that one who never dared to disobey his father's orders, never back answered his father's decision, the same Hukm smiled and bowed at his father's feet and said - "Father! The dreams you have, for which you have asked me to welcome the guests so that they like me and get their daughter engaged to me; I want to clearly tell you that I have fixed my engagement with 'Deeksha Kumari'. I have come here only to get your permission so that I can spend the rest of my life at the feet of Puja Shri Lalchand Ji M.S. and practice abstinence. I wish to follow the path of Lord Mahavir and other great souls to get rid of all sins, seeking the same liberation."

I have already pledged to observe the vow of celibacy for the rest of my life so that no power can distract me. Such as my determination. I humbly request that you give your blessings by allowing me to follow this path of restraint and express your gratitude by offering me at Guru's feet.

Upon listening to these words from their son's mouth, honorable Ratanchanji and mother Motibai was stunned. The palace of their imagination collapsed. Started Ratanchand Ji and mother Motibai said- "Oh Hukmichand! What have you decided? What will happen to us now? We brought you up with so many great desires. We thought that we will spend our old age happily, peacefully, and by doing charity.

But O Hukm! You have decided to leave us alone in the middle and engage yourself in self-meditation. Who will be our life support now?"

Seeing the father mourn, Hukmichand said - "Father, you being a steadfast, righteous devotee, how are you stuck in this emotional bondage (मोहदशा). Just think, whenever saints arrive, you always sit at the forefront and sing the glory of renunciation of great men like Jambu Kumar Ji, etc. You were never hurt by singing glorious songs such as - 'घणी खम्मा, सत्य वचन, धन्य है उन माता-पिता को', and today when it came onto you, why are you lamenting?"

"Father, please think that they were also sons to some parents. Those parents also quenched their thirst for attachment and motherhood and allowed their children to move on the path of restraint. If you also rise above the feeling of motherhood and ponder, then you will realize that this is the most significant outcome of having a child."

"Children of only those parents with a great virtue (पुण्य), move on the path of restraint and increase the pride of seven generations of their parents' family. Otherwise, many children are such that they tarnish the next seven generations. Oh, father! I firmly assure you that I will practice restraint by self-realization with complete determination and increase the pride of your family as well as the glory of Jinshasan (जिनशासन)."

In this way, listening to Hukmichand's resolute statement, Ratanchand Ji too, being

fully acquainted with Jinavani (जिनवाणी), began to think that after all, the significance of this human life lies in this, for which we think of the three manoraths (त्रय मनोरथ) every day. Due to the rise of our character attachment, the sense of restraint has not yet awakened in us, but it seems that Hukmichand has gotten rid of this attachment cycle (मोह). Therefore, the parents decided in their mind that since Hukm is determined to take restraint in his full youth, it will be preferable to give permission and allow him to take restraint by renouncing his

attachment and motherhood.

Then he again addressed Hukmichand and said - "Son! For so long, we were talking to you under the influence of attachment and love. But now we want to rise above that attachment and want to know whether you have thought with a firm determination in your mind about enduring all the hardships (परीषह, लोच, विहार) that comes on this path of self-control, and that you will continue to move forward with your efforts and never let us down?"

Continued...

सच्चे गुरु

भक्ति रस

-पायल वया, बम्बोरा

मानव इंसान में जो भेद बताए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

जीवन-पथ पर चलना जो सिखाए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

जो धैर्यता का पाठ पढ़ाए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

संकट में जो हँसना सिखाए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

पग-पग पर परछाई-सा साथ निभाए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

जिसे देख आदर से सिर झुक जाए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

जो धर्म अहिंसा की सीख दें,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

जो सत्य बोलना ही सिखलाए
वही सच्चा गुरु कहलाए।

जो जीवों की रक्षा करना सिखाए,
वही सच्चा गुरु कहलाए।

ऐसे हमारे गुरुदेव हैं,
नाना-राम में दुनिया समाये,
वही सच्चे गुरु कहलाएँ।

विहंगावलोकन

गतांक 15-16 जून 2022 से आगे...

आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. के देवलोकगमन पर पूरे राष्ट्र के अनेक धर्मस्थलों पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया था। गुणानुवाद के अन्तर्गत विरल आचार्य प्रवर के कई ऐसे गुण सामने आए जो शायद उनके सानिध्य में रहने वाले व्यक्ति को ही दृष्टिगत हो सकते हैं। ऐसे अद्भुत योगी आचार्य प्रवर के कुछ गुणों की व्याख्या आपके समक्ष प्रस्तुत है-

ऐसे युगप्रधान पुरुषों के सद्गुणों का वर्णन करना यद्यपि सागर को गागर में भरने के समान उपहासजनक और अशक्य है, फिर भी उनके चरित्र की कुछ घटनाओं पर दृष्टि-निक्षेप कर उनमें से कुछ सार बोध ग्रहण करने हेतु यथामति, यथाशक्ति, यत्किंचित् प्रयास प्रस्तुत है-

ज्ञानबल

ब्रह्मचर्य का प्रभाव, तीव्र जिज्ञासापूर्वक परम पुरुषार्थ, सुयोग्यसद्गुरु का सुयोग और विनयादि आवश्यक गुण एवं ज्ञान प्राप्ति के परमावश्यक साधनों की पूज्यश्री में सम्पूर्ण विद्यमानता थी, जिससे उन्हें अल्प समय में अद्भुत तत्त्वबोध हो गया था। श्री आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांगसूत्र, विपाकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, नन्दीसूत्र, चारों छेदसूत्र (व्यवहार, निशीथ, बृहत्कल्प और दशाश्रुतस्कंध) तथा सूत्रों के सार रूप करीब 150 श्लोक (थोकड़ा प्रकरण) उन्हें कंठस्थ थे। शेष सूत्र भी पुनः पुनः पढ़ने, मनन करने से हस्तामलकवत् (अच्छी तरह समझ में आना) आ गए थे। इनके सिवाय श्वेताम्बर, दिगम्बर मत के अनेक तात्त्विक ग्रन्थों का भी उन्होंने सूक्ष्म अवलोकन किया था और उनका जैनेतर दर्शनशास्त्रों का पठन भी अतिविशाल रूप में किया था। उन्हें ऐतिहासिक ग्रन्थ पढ़ने का अत्यन्त शौक था। इसके सिवाय आधुनिक वैज्ञानिकों ने नए-नए आविष्कार, उसी तरह हर्वर्ट स्पेन्सर, डार्विन इत्यादि पाश्चात्य दार्शनिकों के सिद्धान्त जानने की भी उन्हें अत्यन्त

जिज्ञासा रहती थी। वे स्वयं अंग्रेजी पढ़े हुए न होने से ऐसे प्रसंग अन्य अंग्रेजी जानने वाले विद्वानों से सुनते थे।

राजकोट के चातुर्मास में नई रोशनी लाने वाले बी.ए., एम.ए. और वकील, बैरिस्टर पूज्यश्री के साथ जब दर्शनशास्त्र, विज्ञानशास्त्र और भूगोल-खगोल सम्बन्धी चर्चा करते तब उन्हें आचार्यश्री की कुशाग्र बुद्धि और ज्ञान की उत्कृष्टता देख अत्यन्त आश्चर्य होता और चर्चा में भी बहुत आनन्द आता था।

दर्शनार्थ आने वाले श्रावकों एवं जिज्ञासुजनों को ज्ञानामृत का आस्वादन कराने के लिए ज्ञानचर्चा करने हेतु पूज्यश्री अनुग्रह करते। शिष्य के पूछे हुए एक प्रश्न का संतोषजनक समाधान होते ही 'और पूछो' वाक्य प्रायः उनके मुखकमल में से खिले बिना नहीं रहता था। उनकी वाणी में अद्वितीय आकर्षण था। उनके द्वारा समाधान देने के बाद शंका को भाग्य से ही मौका मिलता था। उनके साथ ज्ञानचर्चा करने वाले सूत्र के ज्ञाता श्रावक उनके विशाल शास्त्रज्ञान पर बड़ा आश्चर्य प्रकट करते थे। **एक सिद्धान्त का समर्थन करने के लिए वे एक के पश्चात् एक शास्त्रीय प्रमाण अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक प्रस्तुत करते थे।**

चारित्र विशुद्धि

पूज्यश्री का चारित्र अत्यन्त निर्मल था। वे आत्मार्थी, पापभीरु और निरतिचार चारित्र पालने में सावधान रहते थे। साधुओं में ज्ञान थोड़ा हो या अधिक इसकी चिंता नहीं, परन्तु चारित्र विशुद्धि तो अवश्य होनी चाहिए।

ज्ञान का फल ही चारित्र है। “ज्ञानस्य फलं विरतिः” जिस ज्ञान से विरति अथवा चारित्र प्राप्त न हो वह ज्ञान विफल (निष्फल) समझना चाहिए। सद्चरित्र ही समस्त विश्व को वश में करने वाला अद्भुत वशीकरण मंत्र है। जनसमूह पर विद्या, लक्ष्मी या अधिकार की अपेक्षा चारित्र का प्रभाव विशेष और चिरस्थायी पड़ता है। चारित्र बल से ही महात्मा गांधी भी विश्ववन्दनीय हैं।

पूज्य आचार्यश्री को अविश्रान्त परिश्रम के कारण प्राप्त हुए सर्वज्ञप्रणीत शास्त्र के अपूर्व ज्ञान के सुफलरूप उदार, अनुकरणीय और अतिचाररहित चारित्र की प्राप्ति हुई थी। श्री वीर प्रभु की आज्ञा ही उनका मुद्रा लेख था और यही उनका पवित्र धर्म था। इन आज्ञाओं को पालने में वे प्रमाद को त्याग और शुद्धोपयोगपूर्वक संयम के सुखद सुपथ में विचरते थे। वे दिन-रात ज्ञान-ध्यान में निमग्न रहते और ज्ञानादि की चर्चा-वार्ता कर समय का सदुपयोग करते थे।

आधाकमी-सदोष आहार-पानी न लेने हेतु वे अत्यन्त सावधान रहते थे। अजमेर कॉन्फ्रेंस के समय उन्हें ज्ञात होने पर कि स्वधर्मी रागवश दोषयुक्त आहार-पानी बहरावेंगे अथवा साधु निमित्त पहले या पीछे आरंभ-समारंभ करेंगे। ऐसा संभव समझ पूज्यश्री ने आहार-पानी न लाने बाबत अपने शिष्यों को बिल्कुल मना कर स्वयं तेले का पारणा कर दूसरा तेला कर लिया और सात दिन में एक दिन आहार लिया था। किसी समय साधुओं की बड़ी संख्या किसी एक ग्राम में एकत्रित हो जाती तो पूज्यश्री और उनके साधु छठ, अठम, चोले, पचोले की धुन लगा देते थे और ऐसे प्रसंग में कई बार कच्चा आटा लाकर पानी में डाल पी जाते थे। पूज्यश्री विशेषतः मक्की और जौ की रोटी गरीबों के यहाँ से गोचरी में लाते। विगय का त्याग करना या आयम्बिल करना उनका खास शौक था। इन्द्रियों को वश में रखने का कार्य सचमुच बड़ा कठिन है, जिसमें भी रसनेन्द्रिय को वश में करना सबसे अधिक दुष्कर है। शरीर से

मूर्च्छा उतरती है तब ही शरीर को पोषण देने वाले खाद्य पदार्थों से भी मूर्च्छा उतर सकती है।

जब आचार्य प्रवर मांगरोलवंदर पधारे तब उन्हें भोजनशाला में रुकवाने की संघ की इच्छा थी। पूज्यश्री ने भोजनशाला देखी। विशाल और श्रेयस्कर मकान तथा जैनों की बस्ती और साधुओं का उपाश्रय अधिक समीप होने से यह स्थान पूज्यश्री को अधिक पसंद आया। पूछताछ करने पर पूज्यश्री को पता चला कि यह भोजनशाला गंदी पड़ी हुई थी और उन्हीं के लिए साफ कराई गई है, तो आपश्रीजी वहाँ न ठहर कर ग्राम से बाहर एक झोंपड़ी में ठहरे। ऐसी ही घटना मोरवी में भी घटी थी।

कल्पविहार करने में भी वे अप्रमत्त रहते और बहुत कष्ट सहते थे। कई बार उनके पाँव में असह्य वेदना होती थी, तो भी वे कल्प उपरान्त अधिक नहीं ठहरते थे। संवत् 1972 के कार्तिक वदी 1 के दिन उदयपुर शहर के मध्य से होकर जब वे सूरजपोल महंत की धर्मशाला में पधारे उस समय का दृश्य जिन्होंने आँखों से देखा हैं वे कहते हैं कि उस समय पूज्यश्री के पाँव में अतुल वेदना थी। पाँव की तली छिल रही थी एवं ऊपर का भाग सूज रहा था। तो भी वे दृढ़ हृदय कर विश्राम लेते-लेते चलते थे और अत्यन्त कष्ट होने से उनके नेत्रों से मोती की तरह अश्रुबिन्दु टपकते थे, जिसे देख भाविक भक्तों के हृदय थर-थर धूज उठते थे। ऐसी स्थिति में उन्होंने एक बार नहीं अनेक बार विहार किया है।

वाक्पटुता

प्रिय और पथ्य वाणी किसी विरले महापुरुष की ही होती है, ऐसे विरले महापुरुषों में पूज्यश्री का दर्जा अति उच्च था। उनका वाक्चातुर्य अति प्रशंसनीय था। धर्म और हृदय की उच्च भावनाओं से मिश्रित तथा विचार के प्रवाह से प्रवाहित हुई उनकी असाधारण वाणी में अजब आश्चर्य था, अद्भुत शक्ति थी और परिपूर्ण निरवद्यता थी।

"Give the ears to all But Tongue to the few" इस न्याय से पूज्यश्री सब सुनते, परन्तु विचार कर बहुत कम बोलते थे। जरूरत से ज्यादा न बोलते और जो

कुछ बोलते वह जिनागम के अनुकूल ही बोलते थे। पूज्यश्री का व्याख्यान अनुपम था। विविध तापों से तप्त शोकाकुल, निराश आत्माओं को यह प्रतापी महात्मा नवीन उत्साह देते। इनकी मधुरवाणी श्रवण करते ही आनन्दसागर उछलता। आप जिनवाणी रूप अमृत से भरपूर, अति मधुर जीवन राग सुनाकर कायरों की कायरता दूर करते, उन्नति का मार्ग बताते, निडरता और साहसिकता के पाठ पढ़ाते थे। कर्तव्यपालन में प्राण की भी परवाह न करना उनके उपदेश का सार था। उनके लिए जीना-मरना समान था। उनका देह-प्रेम छूट गया था। इसलिए वे अप्रतिबद्ध, सम्पूर्ण, स्वतंत्र, अपरिमित, सामर्थ्यवान और विशुद्ध चारित्रवान बन गए थे। तीव्र वैराग्य के कारण समाधि लाभ हमेशा उनके समीप बैठा रहता था।

कभी-कभी उनके सद्बोध का गूढ़ रहस्य अल्पमति श्रोता समुदाय भी समझ सकता था। उनकी वाणी का प्रभाव ऐसा अलौकिक था कि वह भव्यात्माओं के अन्तरपट को खोल देता था। पूज्यश्री की शास्त्रीय शैली ने निराश हुए कई श्रावकों, अत्यन्त सहृदय आत्माओं को उत्साह और आशा दिला सचेत किया है। मलिन वृत्तियों को हटाकर, सात्विक वृत्तियों को जागृत कराने वाले पूज्यश्री के हृदय-सारंगी के तार से उत्पन्न हुआ हृदयभेदक संगीत कर्ण को विशेष प्रिय लगता था। सात्विक भावना के प्रकाश दीप को प्रकटाना तो अनुभवी उपदेशकों के भाग्य में ही लिखा है। सिर्फ कर्णेन्द्रिय को प्रिय हो वह क्या काम का है? अर्थ गम्भीरता आत्मा को प्रसन्न कर दे तब ही असर होता है।

पूज्यश्री की वाणी सत्य और हितकारी थी किन्तु सर्वथा सबको प्रियकर हो, ऐसी वाणी उच्चारण करना उनकी प्रकृति के अनुकूल था। कभी-कभी किसी व्यक्ति को इनकी वाणी में कटुता प्रतीत होती थी। क्योंकि ज्वर पीड़ित मनुष्य को चतुर व्यक्ति शक्कर या मिश्री के बदले चिरायता या ऐसी ही कटु दवा देते हैं। ऐसे ही पूज्यश्री उन्मार्गगामियों को सन्मार्ग पर लगाने के

वास्ते कटु वचन भी कह देते थे।

पूज्यश्री की वाणी में गुणीजनों के गुणगान का भी मौका आता था। अपनी प्रशंसा या परनिन्दा तो वे कभी करते ही न थे। चर्चा के शब्दों की मारामारी में चाहे जैसे वकालत चलाई जाए, परन्तु शब्दों की अब कीमत नहीं। कहने की अपेक्षा करके दिखाने का ही यह जमाना है। उनकी बातें कभी भूली नहीं जाती।

**सुन्दर सब सुख आन मिले, पण संत समागम दुर्लभ भाई
धनवंत को आदर करे, निर्धन को रखे दूर
एऊ तो साधु न जाणिये, वो रोटियाँ को मजूर
रंग घणा पण पोत नहीं, कुण लेवे उस साड़ी को ?
फूल घणा पण बास नहीं, कुण जावे उस बाड़ी को ?
निर्भयता**

भय मानव जीवन की उन्नति में पीछे हटाने वाला भयंकर आवरण है। एक विद्वान् ने कहा है कि 'भय मनुष्य के आस-पास कटुता फैलाता है व मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का नाश करता है तथा कितनी ही दफा मृत्यु तक का अवसर पैदा करता है। वह सर्वशक्ति और विकास का नाश कर देता है।

पूज्यश्री में बालवय से ही निर्भयता भरी हुई थी। खादेड़ा प्रतिगमन, कानोड़ में साँप के साथ चार माह तक निवास, मांडलगढ़ से कोटा जाते समय भयंकर जंगल से विहार, सुनेल में सत्याग्रह इत्यादि अवसरों से वे कितने निर्भय बने हुए थे, वह अनेक लोगों को विदित ही है।

लोकापवाद का भय भी उन्हें कदापि कर्तव्यविमुख न बना सका था। सम्प्रदाय परिवर्तन तथा अनेक बड़े-बड़े साधुओं का संयम विरुद्ध व दोषयुक्त आचरण होने के कारण बहिष्कार इत्यादि प्रवृत्तियों के ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत हैं। सामान्य मनुष्यों के लिए लोकापवाद की भयंकर दीवार लांघना अति कठिन है।

साभार- अद्भुत योगी

-क्रमशः



चातुर्मास स्वयं के लिए उपयोगी बने

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

इस विराट विश्व में यदि कोई श्रेष्ठतम मार्ग है तो वह है- सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रूप मोक्ष मार्ग। इस मार्ग पर चलकर आत्मा ऐसे स्थान पर पहुँच सकती है जहाँ वह अनन्त-अनन्त सुख में तल्लीन हो जाती है। इस मार्ग का अतीव सरस वर्णन तीर्थंकर महापुरुषों ने अपनी अमृतोपम वाचना के माध्यम से किया था। अनन्त उपकारी गणधरों ने उसे सूत्र रूप में गूथा और वह आचार्यों की परम्परा से सुरक्षित रहा।

प्रभु महावीर का गरिमामय जैन धर्म हमें बता रहा है कि हमारे भीतर भी महावीरत्व छिपा हुआ है। उसे सदप्रयत्नों से, संयमनिष्ठ आचरण से उजागर कर सकते हैं। उस महावीरत्व को उजागर करने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान माता, पिता एवं गुरु का होता है, पर आज के माता-पिताओं की स्थिति बड़ी विचित्र होती जा रही है। जब अमरावती से राजस्थान की ओर विहार हो रहा था, तब बीच रास्ते में एक ऐसा गाँव आया, जहाँ- गोचरी के घर बहुत कम होने से ज्यादा रुकने का प्रसंग नहीं बना। वहाँ से जल्दी ही विहार कर दिया। जो लोग पहुँचाने के लिए आए थे। उनमें एक 12-13 वर्षीय बालक भी था, जिसके पिताजी ने कहा- म.सा. इस बालक को आप अपने साथ ले जाओ और दीक्षा दे दो। तब मैंने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कुछ सोचा और पूछा कि आप इतने उदार कैसे बन रहे हैं, जिससे इस नन्हे से बच्चे को दीक्षा दिलवाने के लिए तैयार हो गए? तब उन्होंने कहा कि यह लड़का बड़ा नटखट, उद्वण्ड एवं चंचल है। कभी मेरे ऊपर और कभी अपनी माँ के ऊपर भी हाथ उठा लेता है। तब मैंने पूछा कि कभी आप पति-पत्नी में भी लड़ाई होती है

क्या? वह बोला- हाँ कभी-कभी हो जाती है। तब मैंने कहा- आपके ही संस्कारों का परिणाम है कि बच्चा उद्वण्ड बन गया है। जब तक माता-पिता नहीं सुधरेंगे, तब तक बच्चे को सुधारना संभव नहीं है। शिशु जीवन को सौम्य बनाने के लिए माता-पिता के सुन्दर कर्तव्य ही बच्चों में संस्कार का रूप लेते हैं। जीवन दीप की ज्योति प्रज्वलित रखने के लिए संस्कार स्नेह (तेल) का कार्य करता है। शिशु जीवन में पड़े सुन्दर या असुन्दर प्रभाव उसके पूरे जीवन को बनाने या बिगाड़ने के लिए उत्तरदायी होते हैं। संस्कार बीज हैं जीवन वृक्ष को पल्लवित करने के लिए। शैशव में ही उदारता, वीरता, विनम्रता, धार्मिकता के गुण उसे माता के दूध के साथ मिलते रहने चाहिए। माता चाहे तो अपने बालक को कर्ण या भामाशाह बना सकती है। बालक को महावीर या भरत बनाना भी माता के हाथ में ही है और चूहे की खड़खड़ाहट में घर छोड़कर भाग जाने वाला बुजदिल बनाना भी माता के ही हाथ में है। माता चाहे तो ब्रह्मचर्य के प्रज्ञापुंज से दीप्तिमान भीष्म भी बना सकती है और रावण बनाना भी उसी के हाथ में है। बालक के जीवन पर एक सुशिक्षित माता जो प्रभाव डाल सकती है, वहाँ सौ मास्टर्स का प्रयास भी उसमें असफल रहेगा। माता का वीरत्व बालक को विश्व विजयी बना सकता है। बन्धुओ! जो बात मैं आपको बतला रहा था, उस नटखट बालक को दीक्षा देने के लिए कहने वाले पिता को मैंने कहा कि “ऐसे बच्चे को आप हमें देना चाहते हैं, यह यहाँ आकर भी क्या करेगा? कहीं गुस्से में आकर हमारे पातरे फोड़ बैठेगा।” वह बोला- आप तो उसे सुधार सकते हैं। मैंने कहा- सुधार सकते हैं, पर कठिनाई

बालक को जन्म देने मात्र से ही माता-पिता के कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती, वरन् उसके जीवन को सुसंस्कारित बनाने का उत्तरदायित्व भी उन्हीं पर है।

यह है कि साधना के लिए तो सबसे पहले स्वभाव में सौम्यता आना जरूरी है।

साधना में बढ़ने वाले जिज्ञासुओं को चाहिए कि आज से वे अपनी आत्म-साधना में विशेष रूप से तल्लीन बन जाएँ। आत्मा के कर्म कलिमल को प्रक्षालित करने का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है। संत-सतियों के समागम एवं वीर-वाणी का अनवरत प्रवाह पुण्यशाली पुरुषों को ही मिलता है। ऐसे दुर्लभ अवसर को सार्थक बनाना है।

आज **चातुर्मासिक पक्खी** के प्रसंग से संत-सतियाँ जिन विशेष नियमों में आबद्ध हो जाएँगे, उनका चातुर्मास पर्यन्त पालन करेंगे। पक्खी की दृष्टि से आपको यह चिंतन करना चाहिए कि संत-सती वर्ग तो वर्षा ऋतु के कारण अपनी सारी प्रवृत्तियों में कितनी यतना बरतते हैं, ताकि उनका संयमी जीवन सुरक्षित रहे। वहाँ आप श्रावक-श्राविकाओं को भी **“अहिंसा परमोधर्मः”** का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। रात्रिभोजन करने वाला व्यक्ति कभी-कभी अपने जीवन को भी समाप्त कर देता है। अतः रात्रिभोजन नहीं करना चाहिए। कच्चे पानी में सात प्रकार के जीवों की नियमा बताई गई है। वे सात प्रकार के जीव हैं- पानी का मूल जीव, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, लीलन-फूलन के जीव तथा समुच्चय के जीव। अतः पीने के प्रसंग से कच्चा पानी चातुर्मास में काम में नहीं लेना चाहिए। धोवन पानी पीयें जो हर क्षेत्र में सुलभता से मिल सकता है। सिर्फ विवेक रखने की आवश्यकता है। सचित्त पदार्थों का भी बनती कोशिश त्याग करना चाहिए। इस चातुर्मासिक अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत का सद्अनुष्ठान जीवन में अपनाना चाहिए तथा परिग्रह वृत्ति का संकोच करना चाहिए। पुद्गलों से ममता हटाकर आत्मोन्मुखी बनें। क्रोधादि चार कषाय अनन्त संसारवर्द्धक हैं। शास्त्रकारों ने कहा है-

“सिंचन्ति मूलाइं पुण्णभवस्स”

ये कषाय भव-भवान्तरों के मूल का सिंचन करने वाले हैं। इनको जितनी मात्रा में जीतने का प्रयास करेंगे, उतनी ही आत्मिक शक्तियों का अभिवर्द्धन होगा। बनती

कोशिश असत्य वचनों का प्रयोग नहीं करना। किसी को धोखा नहीं देना, अपनी श्रद्धा कैसी है? इसका विचार करना और सुश्रद्धा को मजबूत बनाना। इन चन्द बातों को आप चिन्तन-मनन के साथ आत्मलक्ष्यी बनकर जीवन में अपनाएँ तो आपके लिए चातुर्मास की सार्थकता सिद्ध होगी।

चातुर्मास काल में साधु-साध्वी वर्ग का एक स्थान पर रहने का यही उद्देश्य है कि जीवों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए आत्म-आराधना में तन्मय बनकर आध्यात्मिक जीवन की साधना सम्यक् रूपेण कर सकें। आध्यात्मिक जीवन की धार्मिक खेती को पनपाने का यह सौम्य प्रसंग है। आध्यात्मिक जीवन की खेती अच्छी तरह करने के लिए आप कटिबद्ध बन जाएँ। चाहे कोई आपको कितना ही उत्तेजित करे, पर आप अपने क्षमा गुण से विचलित न हों। चाँटे का उत्तर चाँटे से नहीं दें। यह बात आपके जीवन को आदर्श बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। रतलाम में चातुर्मास का प्रसंग आया। वहाँ सुनने को मिला कि व्याख्यान मंडप में व्यवस्था करने वाले भाई कन्हैयालालजी बोथरा के एक भाई ने आवेश में आकर भरी सभा के बीच उनके चाँटा मार दिया। हालांकि वे स्वयं स्वभाव के तेज बतलाते हैं, पर आध्यात्मिक वायुमंडल का अनुपम प्रभाव हुआ कि उन्होंने किसी भी रूप से कुछ भी प्रतिकार नहीं करते हुए हाथ जोड़कर अपने क्षमा गुण का परिचय दिया। जीवन को सही ढंग से जीने के लिए इस क्षमा को अपनावें।

बन्धुओ! क्षमा से बढ़कर कोई तप नहीं है। आप अन्य कुछ भी नहीं कर सकें तो अपने जीवन में क्षमावृत्ति का अधिकाधिक विकास करने का लक्ष्य बनावें। क्रोध का निमित्त उपस्थित होने पर क्षमा के गुणों का चिंतन करने से क्रोध का निग्रह हो सकता है। क्षमा अमृत की धारा है जो क्रोध के विष को समाप्त कर अन्तःकरण को शांति से आप्लावित कर देती है और हमारी चित्तवृत्तियों को स्वस्थ बनाए रखती है। अतः इस गरिमामय चातुर्मासिक अवधि को क्षमा-गुण के विकास के साथ सफल बनावें।

दिनांक 01.07.1985

साभार- नानेशवाणी-15 (ऐसे जीएँ भाग-1)



आज चातुर्मासी का दिन है।

आज संध्या के समय प्रतिक्रमण होने के बाद संत-सतियाँजी चार महीने के लिए क्षेत्रविशेष में प्रतिबद्ध हो जाएँगे। आगमिक मर्यादा के अनुसार चारों दिशाओं में सात किलोमीटर उनका अवग्रह होता है। सात-सात किलोमीटर चारों दिशाओं के अलावा यदि उन्हें आपवादिक स्थिति में कहीं गमनागमन की आवश्यकता हो तो ही वे जा सकते हैं। पर वह स्थिति अपवाद की है, राजमार्ग नहीं है। वह अपवाद का मार्ग है। चातुर्मास आज प्रारम्भ हो रहा है। वैसे प्रारम्भ तो हो गया है किन्तु मर्यादा की चाबी से ताला लगाना है, वह प्रतिक्रमण के बाद से ही माना जाता है।

चातुर्मास कैसे स्थान पर किया जाना चाहिए, उसके लिए ज्ञानीजनों ने तेरह बोल बताए हैं। आने वाले समय में जो भी संघ अपने क्षेत्र में चारित्रात्माओं के सान्निध्य को चाहता है, उसे पहले गवेषणा करनी चाहिए कि मेरे गाँव में, मेरे क्षेत्र में इन तेरह बोलों में से कितने बोलों की जोगवाई है। अभी तो हमें यही पता नहीं होगा कि वे तेरह बोल कौन-कौन से हैं। यहाँ पर उन तेरह बोलों को

ध्यान में लेने की आवश्यकता रहेगी। इसमें खासकर जीव से जुड़ी बात है। वह है गोचरी-पानी की सुविधा, सुविधा, पथ्य-परहेज की परठने-परठाने की सुविधा, दलदल कम होना सुविधा, औषध-भैषज के समय में कच्चे रास्ते तो हैं सहित और भी कई बातें हैं। आज से जुड़े हुए हैं, फिर कीचड़ की नहीं। छोटे-छोटे गाँव भी सड़कों की हुई बातों की गवेषणा हमें बात है ही नहीं। जीवन से जुड़ी हमें लक्ष्य बनाना चाहिए कि करनी चाहिए। उसके बाद ही हम अपने क्षेत्र में चारित्र आत्मा को लाएँ।

गवेषणा का महत्त्व

हर स्थान पहले से साधु-साध्वियों का देखा हुआ नहीं होता। कभी उस ओर विचरण किया हुआ होता है तो कभी नहीं किया हुआ। उदाहरण के रूप में आप सिलचर का एक स्थान ले सकते हैं। वहाँ पहले कभी साधु-साध्वियों का विचरण नहीं हुआ। वहाँ पर पहला चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है। वहाँ पर इन बातों की सुविधा है या नहीं, इसकी गवेषणा कौन करेगा? एक समय था जब साधुओं में एक गवेषक दल हुआ करता था। वह दल पहले गवेषणा करके आता, तब जाकर अन्य साधु-साध्वियाँ वहाँ विचरण करते। कोलकाता में एक ट्रांसपोर्ट कम्पनी थी। वहाँ के भाई का नाम तो अभी भूल रहा हूँ। एक बार उन्होंने दर्शन किए और बातचीत में उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ से जो लम्बी-लम्बी गाड़ियों से बहुत सारा सामान ट्रांसफर किया जाता है, वह सब रोड मार्ग से किया जाता है। उसने बताया कि किसी का माल पहुँचाने से पहले हम गवेषणा करते हैं कि कौन से रास्ते से गुजरना होगा, कितना समय लगेगा, छोटे रास्ते से गुजरने पर गाड़ी मुड़ेगी या नहीं। कहाँ पर कितनी घाट कैसी है? कहाँ पर रोड का दायरा कितना है, वहाँ उस रास्ते से ट्रक पार हो पाएगा या नहीं हो पाएगा, ये सारी गवेषणा करने



की बातें होती हैं। इतनी गवेषणा के बाद ही हम माल को स्वीकार करते हैं और फिर जवाबदारी के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल को पहुँचाते हैं।

जैसे वे मार्ग की गवेषणा करते हैं, वैसे ही पुराने समय में एक गवेषक दल हुआ करता था। वह दल काफी कठिनाइयों को सहन करने में समर्थ होता था। जब इतनी सड़कें नहीं थी, आने-जाने के ज्यादा साधन नहीं थे, तब रास्ता चोर, डाकुओं, लुटेरों का तो नहीं है सहित पूर्ण गवेषणा करने के लिए गवेषक दल पहले जाता और फिर आकर कहता कि संत को इस दिशा में चलना ठीक है, आचार्य का यहाँ से विचरण करना ठीक है, तभी उस जगह पर चातुर्मास आदि की व्यवस्था होती। गवेषक दल ही रास्ता तय करता था। वह दल ऐसा नहीं कहता कि शॉर्टकट रास्ते से चलो।

वर्तमान में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। चूंकि बहुत से क्षेत्र सामान्यतया साधु-साध्वियों के विचरण किए हुए होते हैं। उनकी जानकारी में भी होते हैं। एक-दूसरे के समाचार आदान-प्रदान की व्यवस्था भी बनी हुई होती है। इसलिए अलग से किसी गवेषक दल को पहले से जाकर स्थान आदि देखने की परम्परा एक प्रकार से लुप्त-सी हो चुकी है। किन्तु श्रावक वर्ग को यह सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि हमारे क्षेत्र में यह सारी सुविधाएँ हैं या नहीं? यदि हों, तभी हमें वहाँ चातुर्मास कराने का लक्ष्य रखना चाहिए। एक-दो दिन का गुजारा कहीं भी चल सकता है। एक-दो दिन में परठने-परठाने की अनुकूलताएँ कोई ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती किन्तु चार महीनों का समय एक ही स्थान पर निकालना है तो वहाँ उसकी जरूरत रहती है। ऐसी स्थिति में श्रावक वर्ग केवल साधुओं के लिए स्थान की बात नहीं सोचें, गोचरी की ही बात नहीं सोचें, साथ में परठने-परठाने के स्थान का ध्यान भी रखें। कहाँ, क्या सुविधा हो सकती है, उसका भी ध्यान रखें। इसके लिए बहुत ही सुगम और सरल रास्ता है। मदनलालजी सुगम और सरल रास्ता कौन सा है? वह रास्ता यह है कि स्वयं

संवर, दया, पौषध करें। फिर स्वयं को परठने की जरूरत रहेगी या नहीं? अतः जो गवेषणा करनी पड़ती है, वह नहीं करनी पड़ेगी।

आचार्य पूज्य नानालालजी म.सा. मुम्बई में विचरण कर रहे थे। विचरण करते हुए माटुंगा में पधारना हुआ। उस समय शौच के लिए हम बाहर ही जाया करते थे। परठने के लिए बाहर जगह मिल जाया करती थी। माटुंगा संघ वालों को लग रहा था कि जगह नहीं है, कैसे होता होगा? गुरुदेव लगभग पूरा शेषकाल वहाँ विराजे थे। गर्मी के दिन थे, जेठ का महीना था। यह मुझे स्मृति में इसलिए है क्योंकि उस समय आचार्यश्री की जन्म जयन्ती मनायी गई थी। माटुंगा वालों ने पूछा कि आपको यहाँ बाहर की जगह कहाँ मिली? मैंने कहा कि वहाँ इतनी जगह है कि एक-दो नहीं, यदि पचास साधु भी मिल जायें तो भी जगह कम नहीं पड़ेगी। उन्होंने कहा कि हम भी देखना चाहते हैं ताकि हमारे भी कभी संवर, पौषध हो तो हम भी उसका उपयोग कर सकें या कोई अन्य वैसे साधु-संत आयें जो कि फलश आदि का प्रयोग नहीं करते हों, बाहर जाने के इच्छुक हों तो वे भी वहाँ जा सकें। वह स्थान देखने के लिए माटुंगा संघ के पाँच-सात भाई गुरुदेव के साथ चले। उन्होंने वह स्थान देखा जहाँ हम पंचमी के लिए जाते थे। कहने लगे कि यह आपने कहाँ देख लिया? हम तो इतने समय से यहाँ रह रहे हैं, हमें तो इस स्थान का पता ही नहीं था। जिसको जिसकी जरूरत होती है ना, उसको ही वह ढूँढ़ना होता है। उस समय उसकी दृष्टि खोजी की दृष्टि होती है। यदि हमें जरूरत नहीं है और हम उधर से निकल भी जाएँगे तो हमारी दृष्टि उधर नहीं पड़ेगी। हमारी दृष्टि जिस चीज को खोजती है वह चीज हमारी दृष्टि में आती है। हम जिसे देखना चाहते हैं वह चीज हमें दिखती है। जिसको नहीं देखना चाहते हैं वह हमारी दृष्टि में आ नहीं पाती। इसलिए हमें हमारी दृष्टि में थोड़ा परिवर्तन लाना होगा। जब हमें परठने की जगह की आवश्यकता होगी और हम स्वयं गवेषणा करेंगे तो हमें जगह ही जानकारी भी हो

जाएगी। फिर हम साधु-साध्वियों को भी बता सकेंगे कि यह जगह परठने-परठाने की दृष्टि से अनुकूल है। आप भी इसे उपयोग में ले सकते हैं। यह बड़े शहरों की ही बात नहीं है। आजकल तो छोटे गाँवों में भी यह कठिनाई आने लगी है।

प्रतिक्रमण करने के साथ ही चार महीने के लिए, साधु-साध्वियों का एक ही स्थान पर स्थिर होने का प्रसंग बनता है। वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना में अपने आपको संयुक्त करते हैं। चातुर्मास कोई मौज और शौक के लिए नहीं है। यह चार महीने का समय मिला है, सूरत में देखने लायक जितनी भी चीजें हैं, “जितनी भी दर्शनीय चीजें हैं उनको देख ले” - साधु के मन में इस प्रकार की कोई मंशा भी नहीं होनी चाहिए। साधु के मन में ऐसा विचार भी नहीं आए। वर्षा से छोटे-छोटे जीवों की उत्पत्ति होती है। वनस्पतिकाय के जीव, अप्काय के जीव, त्रसकाय के जीवों की यतना हो, उनका वध नहीं हो इस प्रकार का ध्येय रखते हुए अपने आपको उसके सम्मुख करना चाहिए। अपने आपको संयम की आराधना में लगाना चाहिए। जीवन का मुख्य उद्देश्य यतना है, उसमें स्वयं को लगाना चाहिए। चार महीने में

अपने आपको साधने का लक्ष्य रहे। चित्त की समाधि रहे। जितना यतना में रहेगा, एक चित्तवृत्ति होकर समाधि में रहेगा उसके लिए ठीक है। अन्यथा यदि वह लापरवाही करके रहता है तो उससे चित्त बिखरेगा। उसका चित्त शांत नहीं हो पाएगा। इसलिए साधु को अपनी धर्म-यतना में ही रमण करना चाहिए। उसमें वे रमण करेंगे और श्रावक-श्राविकाएँ किसमें रमण करेंगे? आरम्भ में? किसमें करेंगे? इसमें मेरा कोई आग्रह नहीं है कि आपको इतनी तपस्या करनी है। यहाँ आने के बाद शायद ही मैंने कहा होगा कि क्या हुआ, तपस्या नहीं हो रही है। जो भी हुआ कोई बात नहीं है। कुछ भी हो बस, हमारे जीवन में शांति, समाधि बढ़नी चाहिए। वही लक्ष्य होना चाहिए। उसके लिए मैं पहले कुछ बातें बोल गया हूँ। हम सारी बातों पर ध्यान केन्द्रित करें। हमें अपना जीवन परिवर्तन करने के लिए पूरा आगे बढ़ना है, अपने कदम आगे बढ़ाने हैं। हम इसी मार्ग पर आगे बढ़ेंगे तो ही हम इसमें समर्थ हो पाएँगे और अपने जीवन में आनंद, शांति, संतोष प्राप्त करने में भी समर्थ हो पाएँगे। इतना ही कहते हुए विराम।

08 जुलाई, 2017

साभार- श्री राम उवाच-13 (ताला उल्टा चाबी सीधी)

संस्कार सौरभ

संतों का मौन सन्देश

-श्रमणोपासक

पिपलियाकलां (राज.) के एक धार्मिक शिक्षण शिविर की बात है। आचार्य प्रवर श्री नानेश शिविरार्थियों के प्रश्नों का समाधान कर रहे थे। एक प्रशिक्षणार्थी ने प्रश्न किया- “गुरुदेव! आपके दर्शन करने आने वालों को आप बैठने तक का नहीं कहते।” आचार्यश्री ने हँसते हुए उत्तर दिया- “बन्धु! जिस भूमि पर मैं बैठा हूँ उसके लिए मैंने भी आज्ञा ली है। मैं भी किसी दूसरे के स्थान पर बैठा हूँ। यह स्थान मेरा नहीं है। दूसरे की भूमि पर बैठने का मैं कैसे कह सकता हूँ?” एक दूसरा

समाधान देते हुए कहा कि “दर्शन करने वाले के पास कितना समय यहाँ देने को है, क्या पता? उसे जाने की जल्दी हो और मैं कहीं आईए बैठिए। इस प्रकार कहकर मैं उसके कार्यक्रम में व्यवधान डाल सकता हूँ। इसलिए साधु भाषा में हम गृहस्थ जैसा नहीं कहते हैं। ऐसा ही जाने का भी नहीं कहते हैं क्योंकि गमनागमन के दोष के भागीदार फिर हम भी बनते हैं। सभी जिज्ञासु इस प्रकार का समाधान सुनकर मन ही मन आचार्यश्री को प्रणाम करते रहे।

ऐसी वाणी बोलिए

गतांक 15-16 जून 2022 से आगे...

‘ऐसी वाणी बोलिए’ धारावाहिक प्रतिमाह आपके समक्ष आ रहा है। क्रमशः इस धारावाहिक में आप ‘हित वचन’ के ध्यातव्य बिन्दु पढ़ रहे हैं। ऐसे वचन जो पर पीड़ाकारी एवं हिंसाकारी न हो इसमें 2 बिन्दु ‘एक-दूसरे को तोड़ने वाली सलाह देना व हिंसा का उपदेश देना’ पढ़ चुके हैं। अब कुव्यसनों व कुसंस्कारों का उपदेश देना आदि अन्य बिन्दु आप पढ़ेंगे। इसे पढ़कर जीवन में उतारने का प्रयास करें।

3 कुव्यसनों एवं कुसंस्कारों का उपदेश देना

पूर्वि बुद्धि पासेता, तत्तो वक्कमुदाहरे। अचक्खुओ व नेयारं, बुद्धिमन्नेसाए गिरा।।

पहले बुद्धि से परखकर फिर बोलना चाहिए। अंधा व्यक्ति जिस प्रकार पथ-प्रदर्शक की अपेक्षा रखता है, उसी प्रकार वाणी बुद्धि की अपेक्षा रखती है। (व्यवहार शास्त्र पीठिका 76)

★ अच्छे-अच्छे परिवारों के बच्चे, बिना किसी मान-मर्यादा के स्वच्छंद जीवन जीते हैं और अपने दोस्तों (Friends) को वैसा ही करने के लिए उकसाते हैं :- यथा

- ‘मेरे को बहुत टेंशन रहता था, पर जब से सिगरेट पीने लगा हूँ तब से मन शांत रहता है, तू भी पी के देख।’
- संस्कारी बच्चे को चिढ़ाना ‘ये तो बच्चा है दूध पीता है, बड़ा होता तो बीयर पीता’ / अथवा ‘क्या बिस्लरी पीता है, बीयर पी, एक बार पी के देख।’
- सीधा-साधा व्यापार करने वाले व्यक्ति को कहना ‘क्या दुकान-धंधे में लगा है। सट्टे में (जुए में) पैसा लगा, एक बार में करोड़पति बन जाएगा।’
- जिनके घर से घूमने की Permission (आज्ञा) नहीं मिलती, उन्हें उल्टी पट्टी पढ़ाना- ‘अरे झूठ बोलकर आ जा, किसी को पता नहीं चलेगा, ऐसे तो कभी घूम ही नहीं पाएगा।’
- ‘कोई बात मनवाना हो तो खाना-पीना छोड़ दिया कर, 2-4 आँसू टपका दिया कर, अपने आप सबको मानना पड़ेगा, ज्यादा सीधा बनने में फायदा नहीं है।’

Note - उपर्युक्त प्रवृत्तियाँ श्रावकाचार के विरुद्ध हैं। ऐसा करने पर उसके दूसरे व्रत में अतिचार (मोसोवाएसे-मृषा उपदेश) लगता है।

4 किसी का मर्म प्रकाशित करना

★ हर व्यक्ति को अपनी इज्जत प्यारी होती है, कोई भी नहीं चाहता कि उसकी भीतर की नहीं जानने योग्य बातें लोगों के सामने आए, परंतु कई लोग आवेश में आकर अथवा ईर्ष्यावश उसे कहते हैं :-

- पीठ पीछे लोगों को चुपके-चुपके बताना कि ‘अमुक व्यक्ति ने अमुक गलत कार्य किया था।’
- मुँह पर कह देना ‘मेरे सामने ऊँची नाक करके बोलता है, मैं तेरे और तेरे खानदान को जानता हूँ। तूने और तेरे पिता ने मिलकर कितने कुकृत्य किए थे, समाज का नाम खराब कर दिया था।’
- सुधरने के बाद पुरानी गलतियाँ याद दिलाना ‘तू तो चोरी करता था ना?’ अब सुधर गया या अब भी वही हाल है।’

Note - निकृष्ट से निकृष्ट कर्म करने वाला भी उत्कृष्ट बन सकता है जैसे रोहिण्य। अतः हमें पुरानी बातों को

पकड़कर नहीं रखना चाहिए और लोगों के सामने तो उनकी गलतियों को कतई प्रकट नहीं करना चाहिए। इससे व्यक्ति अपनी ही नजरों में इतना गिर जाता है कि कई बार दुःखी होकर आत्मघात तक कर बैठता है और वैसा न करे तो अन्दर ही अन्दर घुटता रहता है। इससे तीव्र असाता वेदनीय कर्म का बंध होता है।
(जीवों को झुराने से असाता का बंध होता है)

- कदाचित् कोई व्यक्ति वर्तमान में भी घृणित कार्य करने वाला हो तो भी उसे अपमानित नहीं करना चाहिए। इससे कलह और क्लेश की वृद्धि हो सकती है।

एक सेठानी, सेठ के पास खड़ी होकर पंखे से हवा दे रही थी, इसी बीच सेठ जोर से हँस पड़ा। इस दृश्य को उनकी बहू ने खिड़की से देख लिया। बाद में वो ससुरजी के पास गई और हँसने का राज पूछने लगी। पहले तो ससुरजी ने इनकार कर दिया, पर वह मानी ही नहीं तब उन्होंने बताया कि 'एक समय ऐसा था जब इसने मुझे कुएं में धक्का दे दिया था और आज हवा कर रही है, ये सोचकर मुझे हँसी आ गई।' बहू को बात मालूम तो चल गई, अब पेट में पचे कैसे? एक दिन सास-बहू में कुछ विवाद हुआ तो बहू ने मर्म प्रकाशित कर दिया- 'आप तो वही हो जिसने ससुरजी को कुएं में धक्का दे दिया।' सास को बात इतनी चुभ गई कि उसने आत्महत्या कर ली। सेठ को इतना दुःख हुआ कि मैंने गुप्त बात प्रकट की तो ऐसा हुआ। अतः उसने भी आत्महत्या कर ली। बहू भी इतनी दुःखी हुई कि मेरे कहने से ऐसा हुआ। अतः उसने भी आत्महत्या कर ली। फिर बचा उसका पति उसने सोचा मैं अकेला क्या करूंगा दुःखी होकर और उसने भी आत्महत्या कर ली। एक छोटा-सा मर्म प्रकाशित करने का कितना भयंकर दुष्परिणाम।

“किसी की गलती किसी और को बताने की आदत नहीं रखना।”

-क्रमशः...

श्री जवाहराचार्यजी की सहिष्णुता

प्रेरक प्रसंग

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के जीवन की घटना का मुझे स्मरण आ रहा है। आचार्यश्री जब जलगाँव में विराजमान थे, तब उनके हाथ में विषैला फोड़ा हो गया था। डॉक्टर मूलगावकर ने ऑपरेशन को अनिवार्य बताया। ऑपरेशन निश्चित हुआ। डॉक्टर ने उन्हें बेहोश करना चाहा। पूज्यश्री ने दृढ़ता से कहा- “बेहोश करने की आवश्यकता नहीं है। आप मेरे होश-हवास की स्थिति में भी मेरा ऑपरेशन कर सकते हैं।” डॉक्टर हैरान था। उसने पुनः आग्रह और निवेदन किया, परन्तु आचार्यश्री अपनी बात पर दृढ़ रहे। उन्होंने अपना हाथ लम्बा कर दिया। ऑपरेशन किया और वे उसे ऐसे देखते रहे जैसे किसी अन्य व्यक्ति का हाथ देख रहे हों। उनके मुख से चूँ तक नहीं निकली। कितनी दृढ़ता और सहिष्णुता है यह। आप में से कइयों ने उस महान विभूति के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया होगा।

उनके जीवन का एक और प्रसंग मेरी स्मृति में उभर रहा है। बीकानेर में आचार्यश्री के अदीठ फोड़ा हो गया था। वे स्वयं उठ नहीं पाते थे। संत सहारा देकर उठाते थे। एक बार संत उन्हें उठा रहे थे कि असावधानी से अंगुली फोड़े पर लग गई और खून निकल आया। संत घबरा गए। उस समय आचार्यश्री ने कहा- “कोई बात नहीं, क्यों घबरा रहे हो। जान-बूझकर तुमने ऐसा नहीं किया है। तुम्हारी कोई गलती नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।” उन्होंने ऐसा तनिक भी उपालंभ नहीं दिया कि जरा भी ध्यान नहीं रखते हो या अविवेक से काम करते हो। उन महापुरुष में ऐसी अनुपम सहिष्णुता थी। आज तो जरा-सा काँटा चुभ जाता है तो हाय-तौबा करते हैं। आचार्यश्री के चरित्र से दृढ़ता और सहिष्णुता की सीख लेनी चाहिए।

साभार- नानेशवाणी-46

श्रीमद् भगवतीसूत्र

गतांक 15-16 जून 2022 से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

प्र. 2301 धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अशरीरी जीव, परमाणु, शब्द, गंध, वायु, यह जीव जिन होगा या नहीं, यह जीव सिद्ध होगा या नहीं? क्या इन 10 बोलों को छद्मस्थ सर्वभाव से जानता-देखता है?

उत्तर इन 10 बोलों को छद्मस्थ सर्वभाव से नहीं जानता-देखता है किन्तु उत्पन्न केवलज्ञान-दर्शन के धारक अरिहंत-जिन-केवली ही इन सबको सर्वभाव से जानते-देखते हैं। छद्मस्थ अन्य पदार्थों को भी सर्वभाव से जानने में असमर्थ है किन्तु यहाँ 10 बोलों का ही कथन किया गया है।

प्र. 2302 सर्वभाव शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर प्रस्तुत प्रकरण में सर्वभाव शब्द के 2 अर्थ हैं। यथा-

1. साक्षात्, प्रत्यक्ष अर्थात् अवधि एवं मनःपर्यवज्ञानी इंद्रियों की सहायता के बिना अपनी आत्मा से अपने विषय को प्रत्यक्ष (साक्षात्) जानते-देखते हैं।
2. षट्द्रव्य की समस्त पर्यायों को जानना-देखना भी सर्वभाव है।

प्र. 2303 क्या अवधि और मनःपर्यवज्ञानी भी केवलज्ञानी की तरह सर्वभाव से जानते-देखते हैं?

उत्तर परम अवधिज्ञानी भी अपने विषय की समस्त पर्यायों को नहीं जानते-देखते हैं बल्कि असंख्यात काल की पर्यायों को ही जानते-देखते हैं यानी केवलज्ञानी की तरह ये अनन्तकाल की पर्यायों को नहीं जानते हैं। इसलिए कहा गया है कि ये सर्वभाव से नहीं जानते-देखते हैं।

प्र. 2304 अवधिज्ञानी किस प्रकार जान सकते हैं कि यह जीव जिन व मुक्त होगा?

उत्तर जीव की आत्मा पर अल्प-स्थिति वाली चतुस्पर्शी कर्मलताओं को देखकर एवं अठस्पर्शी लेश्या के अत्यंत निर्मल पुँज को देखकर अवधिज्ञानी जान लेते हैं कि यह जीव जिन व मुक्त होगा।

प्र. 2305 मनःपर्यवज्ञानी किस प्रकार जान सकते हैं कि यह जीव जिन व मुक्त होगा?

उत्तर 1. केवली भगवान मनोवर्गणा लब्धि सम्पन्न देव को उत्तर भेज रहे हों तो उन पुद्गलों को देखकर।
2. कोई सर्वज्ञों से सुनकर या पढ़कर मन में विचार कर रहा हो कि अमुक व्यक्ति जिन व मुक्त होगा तो उसके विचारों को देखकर।
3. वर्तमान के मनोगत भावों को देखते हुए जब भविष्य के असंख्यात वर्ष बाद के भावों का अनुमान नहीं लगा पाते हैं तब।

इन कारणों से मनःपर्यवज्ञानी जान सकते हैं कि यह जीव जिन व मुक्त होगा।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः



श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र**नवम् अध्ययन- नमिपव्वज्जा**

गतांक 15-16 जून, 2022 से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

[विवेचन- जब नमिराजर्षि ने देवलोक के समान सुखों को त्यागकर अभिनिष्क्रमण किया (दीक्षा ग्रहण की) तब पहले देवलोक के इन्द्र देवराज शक्रेन्द्र स्वयं राजर्षि की परीक्षा लेने ब्राह्मण वेश में आए कि यह त्याग क्षणिक आवेग है या वास्तविक वैराग्य है। देवेन्द्र ने नमिराजर्षि को लोक जीवन संबंधित (संसार के पक्ष में) प्रश्न उपस्थित किए- 1. मिथिला में कोलाहल का कारण, 2. जलते हुए अन्तःपुर सम्बन्धी, 3. नगर को सुरक्षित करने के सम्बन्ध में।

अब इसके आगे...]

नमिराजर्षि को अपने प्रासादों में राग है या नहीं? इस बात की परीक्षा लेने के लिए इन्द्र ने इस प्रकार कहा-

4. प्रासादादि निर्माण करने के सम्बन्ध में-**पासाए कारइत्ताणं, वद्ध-माण-गिहाणि य।****वालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया!!124!!****भावार्थ-** हे क्षत्रिय! प्रासाद अर्थात् राजभवन (महल), वर्धमान गृह, बालाग्रपोतिकाएँ बनवाकर तदनन्तर जाना।**वद्ध-माण-गिहाणि-** अनेक वास्तु विद्या से बने हुए सुखवर्द्धक भवन।**वालग्ग-पोइयाओ-** चन्द्रशालाएँ अर्थात् जल के मध्य में घर

इन्द्र द्वारा कथित हेतु और उदाहरण- जो क्षत्रिय होता है वो सामर्थ्य (परिपूर्ण) और प्रज्ञावान (दीर्घदृष्टि वाला) होता है। समर्थ होते हुए भी नमिराजर्षि आपने भरत चक्रवर्ती आदि की तरह अपने वंशजों के लिए मन एवं नेत्रों को लुभाने वाले राजमहल अभी तक नहीं बनवाए हैं। इससे उनमें प्रज्ञाशीलता घटित नहीं होती है। इसलिए राजर्षि का दीक्षा ग्रहण करना अनुचित है। देवेन्द्र की बात सुनकर नमिराजर्षि ने इस प्रकार कहा-

संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं।**जत्थेव गंतु-मिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं!!26!!****भावार्थ-** जो मोक्ष के विषय में संशय करता है, वह संसार में अपना घर बनाता है। अतएव जहाँ जाने की इच्छा हो वहाँ अपना शाश्वत घर बनाना चाहिए।

नमिराजर्षि के उत्तर का आशय यह है- संसार के अनन्त भवों में मैंने अनन्त राजभवन, वर्द्धमान गृह और चन्द्रशालाएँ बनवाए हैं। किन्तु मैं अभी तक शाश्वत (कभी न नष्ट होने वाला) गृह को प्राप्त नहीं कर पाया। वस्तुतः मैं तो इस बार शाश्वत गृह बनाने में प्रवृत्त हुआ हूँ। जब तक संदेह होता है कि मैं शाश्वत स्थान (सिद्धालय) तक पहुँच सकूँगा या नहीं, वही व्यक्ति संसार में बार-बार अपना घर बनवाते हैं। किन्तु मुझे तो दृढ़विश्वास है कि मैं मोक्ष पहुँचकर अपना शाश्वत घर बनाऊँगा। अतः मोक्षगृह ही गन्तव्य स्थान (लक्ष्य) है, वही शाश्वत सुख की प्राप्ति होगी। जो ऐसा नहीं होता तो वह स्थान मुमुक्षु के लिए गन्तव्य नहीं होता। जब नमिराजर्षि ने देवेन्द्र को इस प्रकार समझाया

5. चोर-डाकुओं से नगर रक्षा के सम्बन्ध में-

आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे।

नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया!!128!!

भावार्थ- हे क्षत्रिय! पहले आप लुटेरों को, प्राणघातक डाकुओं को, गाँठ काटने वालों को और सदा चोरी करने वाले तस्करों को निकालकर अपने नगर को सुखी बनाकर दीक्षा ग्रहण करना।

आमोसे- मार्ग में लूटकर सर्वस्व हरण करने वाला। **लोमहारे-** मारकर अथवा पीड़ा पहुँचाकर लूटने वाला।

गंठिभेए- गाँठ आदि को कुशलता से काटने वाला या नकली सोना बनाकर लोगों को ठगने वाला। **तक्करे-** सदैव चोरी करने वाला।

इन्द्र कथित हेतु और उदाहरण- जो क्षत्रिय होता है वो धार्मिक शासक होता है। वह अधार्मिकों का निग्रह (नियंत्रण, रोक कर) करके नगर में शान्ति स्थापित करता है। इसलिए चोर आदि अधार्मिक व्यक्तियों को नगर से निकाले बिना दीक्षा ग्रहण करना अनुचित है, क्योंकि इससे आपका शासकत्व (न्यायपूर्ण) एवं धार्मिकत्व घटित नहीं होता। नमिराजर्षि ने देवेन्द्र की बात सुनकर इस प्रकार कहा-

असइं तु मणुस्सेहि, मिच्छा-दंडो पउंजई।

अकारिणोऽथ बज्झंति, मुच्चई कारओ जणो॥30॥

भावार्थ- मनुष्यों द्वारा अनेक बार मिथ्या दण्ड अर्थात् अपराध रहित जीवों पर अज्ञानतावश या अहंकारवश दण्ड का विधान कर दिया जाता है। इसलिए जो चोरी आदि अपराध नहीं करते हैं वे बेड़ियों द्वारा बाँधे जाते हैं और जो मनुष्य अपराध करने वाले होते हैं, वे छूट जाते हैं।

नमिराजर्षि के उत्तर का आशय है- हे विप्र! चोर, लुटेरे, डाकू आदि सब जाने नहीं जा सकते हैं अतः ऐसे दंड विधान करने वाले राजा में धार्मिकता कैसे मानी जा सकती है? इसलिए आपका हेतु असिद्ध है। नगर को अपराधों से मुक्त करने का कथन एकान्ततः उपादेय (ग्रहण करने योग्य) नहीं माना जा सकता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से इन्द्रिय रूपी चोर ही मोक्ष अभिलाषी व्यक्तियों द्वारा दमन करने (त्यागने) योग्य हैं, क्योंकि ये सर्वस्व अपराधी होते हैं अर्थात् आत्मा के गुणों का घात करने वाले होते हैं। इसलिए धार्मिक पुरुष को इन्द्रिय और मन (नो इन्द्रिय) सर्वस्व निग्रह करने योग्य हैं।

-क्रमशः



भौतिकवाद/अध्यात्मवाद

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- आत्मा में जबरदस्त शक्ति है। वह संसार में उथल-पुथल कर सकती है। जिस विज्ञान ने आज संसार को कुछ का कुछ बना दिया है, उसके मूल में आत्मा की शक्ति है। आत्मा न हो तो संसार का काम एक क्षण भी नहीं चल सकता, क्योंकि वह स्वयं जड़ है।
- आज विज्ञान का दुरुपयोग किया जा रहा है। अगर विज्ञान का सदुपयोग किया जाए तो वह धर्म और संस्कृति की रक्षा करने में विशेष सहायक बन सकता है।

शुद्धि के तीन प्रकार समकित के 67 बोल

गतांक 15-16 जून 2022 से आगे...

-शकुन्तला लोढ़ा, ब्यावर

तत्त्व ज्ञान

ज्ञानोपार्जन व पठन की दृष्टि से समकित के 67 बोल आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

पिछले दो अंकों में आपने श्रद्धान् की विस्तृत विवेचना पढ़ी,

आगे चौथा बोल-शुद्धि तीन आप सभी के समक्ष उपस्थित है। निश्चय

ही आप इसे पढ़कर जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे और आत्मकल्याण की

ओर अग्रसर होंगे।

चौथा बोल- शुद्धि तीन

सम्यक्त्व प्राप्त हो जाने के बाद उसको और अधिक विशुद्ध बनाने के लिए मन, वचन, काया की तीन प्रकार की शुद्धियाँ बताई गई हैं। जिस क्रिया से सम्यक्त्व विशेष निर्मल बने उसे शुद्धि कहते हैं। शुद्धि का अर्थ है इस प्रकार की प्रवृत्ति की जाए जिससे सम्यक्त्व में कहीं पर भी दोष न लगे, वह मलिन और दूषित होने से बचे।

जिस प्रकार रक्त से भरे वस्त्र को रक्त से ही धोया जाए तो वह शुद्ध नहीं होता अपितु और अधिक मलिन होता है, उसी प्रकार आरंभ-परिग्रह आदि से मलिन आत्मा आरंभ के कार्य करने से विशुद्ध नहीं हो सकती। ऐसा करने से आत्मा की मलिनता और अधिक बढ़ती है। ऐसा जानकर सम्यग्दृष्टि जीव अपनी आत्मा को निर्मल बनाने के लिए मन, वचन, काया के आरंभ से निवृत्त होते हैं। जो देव-गुरु-धर्म आरंभ के कामों में संलग्न होते हैं उनका भी वे त्याग कर देते हैं, क्योंकि जैसी संगति की जाती है वैसी ही बुद्धि भी हो जाती है।

जो मनुष्य काम-क्रोध आदि से ग्रसित देव या गुरु का उपासक बनता है, उनके कहे धर्म का आचरण करता है, वह कामी-क्रोधी आदि होकर मायाजाल में फँस जाता है। इसके विपरीत जो कामादिक शत्रुओं को जीतने वाले देव-गुरु की उपासना करता है, उनके बताए धर्म का आचरण करता है, वह कामादि शत्रुओं का विजेता बनकर इहभव-परभव में परम आनन्द व परम सुख प्राप्त करने वाला बन जाता है। इस प्रकार तीनों शुद्धियों को निम्न

प्रकार से समझा जा सकता है-

मन शुद्धि- मन से वीतराग देव निर्ग्रथ गुरु एवं केवलि प्ररूपित निरारंभ धर्म को ही सारभूत समझना और शेष सब जगत् को असार मानना मन शुद्धि है।

मन शुद्धि सम्यक्त्व को शुद्ध करने वाली है, क्योंकि अनंतानुबंधी चार कषायों का क्षय होता है तो जीव को सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है और यदि सम्यक्त्व से पुनः गिर जाता है तो पुनः अनंतानुबंधी कषाय का उदय हो जाता है, जिससे सम्यक्त्व का घात होता है। अतः जहाँ अनंतानुबंधी के चार कषाय होंगे वहाँ पर सम्यक्त्व नहीं होगा और मन शुद्धि भी नहीं होगी।

सम्यक् दृष्टि जीव मन शुद्धि करके यह विचार करता है कि वीतराग देव, वीतराग देव प्ररूपित धर्म यह दोनों सार हैं। संसार में शेष सभी तत्त्व असार हैं।

कथा- पुष्पवतंसक उद्यान में चार ज्ञान के धनी गणधर नाम के गुरु भगवन्त पधारे। राजा नरवर्म को जब यह समाचार मिले तो उसे अति हर्ष हुआ और हस्ती पर बैठकर पुत्र, मित्र तथा चतुरंगिणी सेना को साथ लेकर आचार्य को वन्दन करने गए। गुरु ने उपदेश दिया कि भव्य जीवों! भव्य जीवों का मूल द्वार, धर्म का आधार, धर्म का निधान समकित है। देव को देव की बुद्धि गुरु को गुरु की बुद्धि, धर्म को धर्म की बुद्धि से जानना समकित है। इसके विपरीत मिथ्यात्व है।

सम्यक्त्व बिना मोक्ष प्राप्ति नहीं और मिथ्यात्व के बिना संसार की वृद्धि नहीं। राग-द्वेष रहित देव को जिनेश्वर मानना, पंच महाव्रतधारी साधु को गुरु मानना,

भगवान का कहा हुआ दया मूल धर्म को धर्म जानना। समकित पालन करने वाले पुरुष को नरक व तिर्यच गति कभी भी प्राप्त नहीं होती। उसे तो देवगति के सुख, मनुष्य गति के सुख, मोक्ष के सुख मिलते हैं। जो प्राणी एक अर्न्तमुहूर्त्त मात्र भी समकित को स्पर्श करता है वो निश्चय रूप से अर्द्धपुद्गल परावर्तन में मोक्ष प्राप्त करता है। गुरु के पास से धर्मोपदेश सुनकर राजा खुद के पुत्र सहित समकितपूर्वक श्रावक धर्म अंगीकार करके हर्षित हुआ और घर लौट आया। एक बार देवलोक में इन्द्र महाराज ने नरवर्म राजा की प्रशंसा की कि राजा समकित में इतना दृढ़ है कि देवता भी चलायमान नहीं कर सकता। ऐसा सुनकर सुवेग देवता को ये वचन सहन नहीं हुए। उसने सोचा मैं जाकर उसे समकित से चलायमान करूँ। वहाँ आकर अनाचारी साधुओं का झुण्ड बनाया तभी वहाँ से नरवर्म राजा अश्व-क्रीड़ा के लिए निकला। राजा ने देखा कि उस झुण्ड में एक साधु मदिरापान कर रहा है, एक साधु वेश्या के साथ क्रीड़ा कर रहा है, एक साधु हिरण को बाँध कर धनुष और तीर से मृग-क्रीड़ा कर रहा है। इस प्रकार की साधुओं की दुष्ट चेष्टाओं को देखकर राजा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा व्यापार क्या है? अनाचारी साधु कहने लगे कि हम लोगों को धर्मोपदेश देते हैं, परन्तु हम स्वयं यह क्रियाएँ करते हैं। राजा मन में सोचते हैं कि जिनशासन का मार्ग कठिन है, पर मोक्ष का मार्ग तो यही है। जो इस मार्ग से गिर जाता है उसका निश्चित ही पतन होता है और जो इस मार्ग को पाकर सही चलता है, गिरता नहीं है, डिगता नहीं है, वह उसका सौभाग्य समझना चाहिए। इस प्रकार का मन में विचार करने से राजा नरवर्म का सम्यक्त्व और अधिक दैदीप्यमान और दृढ़ हुआ। उसमें लेशमात्र भी मलिनता नहीं आई। जैसे अग्नि को पाकर सोना दीप्त (चमकता) होता है, वैसे ही इन अनाचारी साधुओं को देखकर राजा का सम्यक्त्व और दृढ़ हुआ। फिर राजा यतियों को शिक्षा देते हैं कि ऐसा चारित्र प्राप्त करके ऐसा गलत आचरण कर रहे हो। तुम नरक में जाओगे -ऐसा कहकर

उनको पाप से निवृत्त करते हैं। देवता अपने अवधिज्ञान से देखते हैं कि राजा का सम्यक्त्व तो नीचे गिरने के स्थान पर और दृढ़ हो रहा है। देव हर्षित हुआ और मूल रूप में आकर उनके चरणों में गिर गया और कहने लगा कि धन्य है आपकी दृढ़ श्रद्धा। इन्द्र महाराज ने सभा में आपकी जैसी प्रशंसा की आप उसके योग्य हैं। ऐसा कहकर सिर का मुकुट देकर राजा की गुण स्तुति करके देवलोक में चला गया। उस दिन से राजा निर्मल सम्यक्त्व पालने लगा। अंत में दीक्षा लेकर संयम पाला और तप करके वैमानिकी देवलोक में गया। अनुक्रम से मोक्ष भी प्राप्त करेंगे।

सम्यक्त्व के बारे में मन शुद्धि के ऊपर नरवर्म राजा का चारित्र सुनकर मन शुद्धि करनी चाहिए।

वचन शुद्धि- वचन से सुदेव, सुगुरु तथा निर्ग्रन्थ धर्म का गुणगान करना किन्तु किसी अन्य देव-गुरु-धर्म की प्रार्थना नहीं करना।

सुदेव-सुगुरु व सुधर्म की आराधना करने पर भी अन्तराय कर्म के कारण पुत्र, लक्ष्मी या अन्य सांसारिक भौतिक वस्तु सम्बन्धी कोई भी कार्य सिद्ध न हो तो उस कार्य के लिए अन्य देव जैसे- हरि, ब्रह्मा, चण्डी, चामुण्डा आदि की आराधना करने के लिए नहीं जाना। वचन से अरिहंत भगवन् की आराधना करना, अन्य देव की याचना नहीं करना वचन शुद्धि है।

कथा- एक बार किसी समय जितशत्रु राजा उत्तम घोड़े पर सवार होकर खाई के पास से गुजरने लगा। खाई की दुर्गंध से घबराकर उत्तरीय वस्त्र से अपना नाक ढक लिया और अपने साथियों से कहने लगा कि खाई के पानी का वर्ण, गंध, रस, स्पर्श बड़ा ही अमनोज्ञ है। जैसे- मरे हुए साँप की यावत् गाय आदि की दुर्गंध से भी अधिक दुर्गंध इसमें है। राजा का कथन सुनकर बहुत से अधीनस्थ राजा, वैभवशालीजन यावत् सार्थवाह आदि इस प्रकार बोले स्वामी! आप जैसा कहते हैं वही सत्य है। राजा के कहने पर सुबुद्धि बोला कि इस खाई के पानी

के सम्बन्ध में कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि जो पुद्गल वर्तमान में अशुभ दृष्टिगोचर होते हैं वे संयोग पाकर कालान्तर में शुभ में परिणत हो जाते हैं और जो शुभ नजर आते हैं वे अशुभ में परिणत हो जाते हैं ये पुद्गल परिणमन प्रयोग और स्वभाव दोनों ही प्रकार से होता है। राजा ने कहा- हे सुबुद्धि! तुम असत् को सत् के रूप में प्रतिपादित करते हुए मिथ्या प्ररूपणा कर रहे हो। यह सुनकर सुबुद्धि के मन में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि राजा जितशत्रु सर्वज्ञ प्ररूपित तत्त्व को यथार्थ रूप में स्वीकार नहीं करता है। इसलिए अच्छा हो कि मैं राजा को जिन प्ररूपित सद्भुत यथार्थ भावों को स्वीकार कराऊँ। सुबुद्धि ने विश्वस्त पुरुषों से मिट्टी के नए घड़े, पानी छानने के लिए कपड़ा और खाई का पानी मंगवाया और इस खाई के गंदे पानी को प्रयोग द्वारा शुद्ध स्वादिष्ट पानी में परिणत कर राजा को यथार्थ तत्त्व से अवगत कराया। सुबुद्धि प्रधान जीवाजीव रहस्यों को जानने वाला तत्त्वज्ञ श्रमणोपासक था, जबकि राजा जितशत्रु जिनधर्म से अनभिज्ञ मिथ्यादृष्टि था। अब राजा ने जिज्ञासा प्रकट की कि हे मंत्रीवर! यह बताओ कि आपने यह सत्य तथ्य कैसे जाना? सुबुद्धि ने उत्तर दिया- स्वामी! इस सत्य तथ्य का परिज्ञान मुझे जिनवाणी से हुआ। इस पर राजा ने उनसे जिनवाणी श्रवण करने की अभिलाषा प्रकट की। सुबुद्धि प्रधान ने राजा को जिनवाणी का स्वरूप समझाया। इसके पश्चात् जितशत्रु राजा व सुबुद्धि प्रधान ने स्थविर भगवन्तों के पास दीक्षा अंगीकार की और मोक्ष के अक्षय सुखों को प्राप्त किया।

काय शुद्धि- काया से सुदेव, सुगुरु तथा निर्ग्रथ धर्म को वन्दन-नमस्कार करना, भयंकर संकट आने पर भी किसी अन्य देव-गुरु-धर्म को नमन नहीं करना।

तलवार से छेदे जाने पर, घाणी में पीले जाने पर, अग्नि में जलाए जाने पर भी जिनेश्वर देवों को छोड़कर अन्य मिथ्यादृष्टि देवों के समक्ष जो पुरुष नहीं नमता है, उसको काय शुद्धि कहते हैं अर्थात् अरिहंत देव तथा श्री

अरिहंत देव की आज्ञा के प्रतिपालक साधु को प्रणाम करना, पर दूसरे को प्रणाम नहीं करना ही काय शुद्धि है।

दृढ़धर्मी कार्तिक सेठ सम्यक्त्व में अति दृढ़ थे। एक ढोंगी साधु के चरणों में न झुकने से उस साधु ने राजा को कहकर कार्तिक सेठ को बुलवाया और उसकी खुली पीठ पर गरम-गरम खीर युक्त थाली रखकर भोजन किया। कार्तिक सेठ ने उस भयंकर कष्ट को भी सहन कर लिया, लेकिन धर्म ढोंगी साधु के चरणों में नहीं झुका। ऐसे-ऐसे दृढ़ सम्यक्त्वी भी इस संसार में बहुत हैं। किन्तु आज हम जरा-जरा सी वेदना की उपशान्ति के लिए अन्य देव-देवियों के चरणों में झुकते फिरते हैं। इसका कारण यही है कि हम प्रियधर्मी तो हैं, पर दृढ़धर्मी नहीं हैं। हमें धर्म तो अच्छा लगता है, पर हम धर्म पर दृढ़ नहीं रह पाते हैं। पहले के श्रावक तो कठिन क्षणों में भी अडिग रह जाते थे और हम थोड़ी-थोड़ी सी बात में ही धर्म को खोने के लिए तैयार हो जाते हैं, जिनवाणी से विचलित हो जाते हैं। हमें हमारे देव-गुरु-धर्म के प्रति दृढ़ रहना चाहिए, जिससे हमारे जीवन से प्रेरणा लेकर अन्य भी समकितधारी बन सकें।

कथा- परिव्राजक देश में रहने वाला प्रभु भक्त अम्बड़ श्रावक भगवान को वन्दन करने चम्पानगरी आया। उपदेश सुनने के बाद वह राजगृह जाने लगा तो भगवान ने अम्बड़ से कहा- राजगृह में नाग नामक रथिक की पत्नी सुलसा सम्यक्त्व में दृढ़ अडिग सुश्राविका है। अम्बड़ ने सोचा कि सुलसा भगवान की कितनी भक्त है कि जिससे भगवान ने उसकी प्रशंसा की। उसकी परीक्षा करनी चाहिए।

अम्बड़ राजगृह के पूर्व की ओर उद्यान में गया और ब्रह्मा का रूप धारण करके पद्मासन लगाकर बैठ गया। लोग दर्शन करने उमड़े, परन्तु सुलसा नहीं गई।

दूसरे दिन अम्बड़ ने विष्णु का रूप बनाया और नगरी के दक्षिण भाग में प्रकट हुआ। नगरजन उमड़ पड़े, लेकिन सुलसा अप्रभावित रही।

तीसरे दिन शंकर रूप बनाकर पश्चिम दिशा में प्रकट हुआ, नागरिक जन दर्शनार्थ गए, परन्तु सुलसा तो अटल रही।

चौथे दिन पूर्व दिशा में जिनेश्वर भगवान का रूप धारण करके भव्य समवसरण में तीन छत्र युक्त सिंहासन पर बैठा हुआ शोभित हुआ। जब अम्बड़ ने सुलसा को नहीं देखा तो किसी पुरुष को भेजकर प्रेरित करवाया। उसने जाकर सुलसा से कहा- “जिनेश्वर भगवंत पधारे हैं और सभी लोग भगवान को वन्दन करने गए हैं।” सुलसा ने कहा- “भाई! ये भगवान महावीर प्रभु नहीं हैं। वे तो चम्पानगरी में विराज रहे हैं।” आगत व्यक्ति ने कहा- “ये तो पच्चीसवें तीर्थकर है।” सुलसा ने कहा- न तो पच्चीस तीर्थकर होते हैं और न एक तीर्थकर के रहते दूसरे तीर्थकर हो सकते हैं। यह कोई मायावी पाखण्डी होगा जो लोगों को ठगता है।

सुलसा को अडिग जानकर अम्बड़ को निश्चय हो गया कि वास्तव में सुलसा सम्यक्त्व में सुदृढ़ अटल है। अम्बड़ अपनी माया को समेट कर सुलसा के घर पहुँचा। अम्बड़ को देखकर सुलसा उठी और स्वागत करती हुई बोली- हे श्रावक जी! आपका स्वागत है और उन्हें आसन प्रदान किया। अम्बड़ ने कहा- “तुम धन्य हो। इस संसार में सर्वश्रेष्ठ श्राविका तुम ही हो। भगवान ने भरी सभा में तुम्हारी श्रद्धा की प्रशंसा की थी। ऐसी भाग्यशाली श्राविका और कोई जानने में नहीं आई।” तत्पश्चात् अम्बड़ ने पूछा- “देवी! इस नगर में अभी

ब्रह्मा आदि देव आए थे और नगरजन उनको वन्दन करने, धर्मोपदेश सुनने गए थे, परन्तु तुम नहीं गई। इसका क्या कारण है?”

सुलसा ने कहा- “महाशय! आप जानते हैं कि यह देव राग-द्वेष, काम-भोग और विषय-विकार युक्त हैं। जिसने वीतराग धर्म को हृदयंगम कर लिया हो वह वहाँ क्यों जाएगा? भगवान जिनेश्वर देव महावीर प्रभु को प्राप्त कर लेने के बाद फिर कौनसी कमी रह जाती है कि जिससे दूसरों की चाहना की जाए। अम्बड़ प्रसन्न हुआ और धन्य-धन्य कहकर चला गया। काय शुद्धि के ऊपर सुलसा सती का दृष्टान्त पढ़कर काया से शुद्ध समकित का पालन करना चाहिए।

सम्यक्त्वी जीव निरारंभी देव, गुरु, धर्म को मन से अच्छा समझता है, वचन से उनका ही गुणगान करता है और काया द्वारा उनको ही नमन करता है। ऐसा करने से उसके तीनों योगों के व्यापार-विचार, उच्चार और आचार पवित्र बनते हैं।

जिनेश्वर देव, उनके द्वारा प्ररूपित धर्म और उसका आचरण करने वालों के अतिरिक्त शेष जगत् कचरे के समान असार है। ऐसा चिन्तन करने से सम्यक्त्व की विशेष शुद्धि होती है और उसे ही क्षायिक समकित भी प्राप्त होता है।

-क्रमशः



पुरुषार्थ

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- मार्ग कितना ही लम्बा क्यों न हो, अगर धीरे-धीरे भी उसी दिशा में चला जाए तो एक दिन वह तय हो ही जाएगा, क्योंकि काल भी अनन्त है और आत्मा की शक्ति भी अनन्त है।
- जैसे दूध में से घी अलग किया जा सकता है, उसी प्रकार पुरुषार्थ द्वारा आत्मा और कर्मों का भी पृथक्करण हो सकता है।
- ऋद्धि का बीज पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ करने वाले ही ऋद्धि के पात्र बनते हैं।
- वर्तमान जीवन स्वल्पकालीन है और भविष्य का जीवन अनन्त है। इसलिए हे भद्र पुरुष! वर्तमान के लिए ही यत्न न कर किन्तु भविष्य को मंगलमय बनाने की भी चेष्टा कर।

भारतीय नारियों की सौरभ सुषमा किससे छिपी हुई है। उनके शौर्य भरे प्रेरक जीवन से अनेकानेक प्राणियों में अपूर्व परिवर्तन व सर्वांगीण विकास हुआ है।

इतिहास के पन्नों को पलटने पर उनके जीवन दर्शन का स्वरूप हासिल होता है। भारतीय गंगोत्री की द्विधारा इक्ष्वाकुवंश व यदुवंश से प्रभावित हुई, जिसमें एक ओर मर्यादा पुरुषोत्तम राम व सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति महासती सीता तथा यदुवंश में अन्धकवृष्णि, भोजवृष्णि नृप हुए।

अन्धकवृष्णि शौर्यपुर व भोजवृष्णि मथुरा में राज्य करते थे। महाराजा अन्धकवृष्णि के समुद्रविजय व वसुदेव आदि दस पुत्र हुए जो दशार्ह के रूप में जाने जाते थे। उनमें सबसे बड़े पुत्र समुद्रविजय से अरिष्टनेमि हुए थे। उनकी माता शिवादेवी थी। वसुदेव नृप के पुत्र श्रीकृष्ण हुए। उनकी माता देवकी थी।

भोजवृष्णि के एक भाई मृत्तिकावती नगर में राज्य करते थे। उनके एक पुत्र देवक व कन्या देवकी थी। भोजवृष्णि के पुत्र उग्रसेन की रानी से राजीमती का जन्म हुआ।

राजीमती रूप, लावण्य, गुण व शील से अद्वितीय थी। चन्द्रमा की कला के समान राजीमती बढ़ने लगी। राजीमती विवाह योग्य होने पर उसके माता-पिता विचारमग्न हो गए। राजीमती जैसी सुशील, सौन्दर्य से परिपूर्ण कन्या के लिए योग्य वर खोजने लगे। उसके लिए अरिष्टनेमि के सिवाय योग्य वर परिलक्षित नहीं हुआ। किन्तु अरिष्टनेमि संसार से विरक्त हो जीवनयापन कर रहे थे। उन्हें यादवों में भोगलिप्सा से ग्लानि थी। वे अविवाहित रहना चाहते थे।



इधर अरिष्टनेमि क्रमशः शारीरिक विकास में वर्द्धित होने व विवाह योग्य होने पर समुद्रविजय तथा शिवारानी विविध रूप से उन्हें समझाने लगे कि वैवाहिक बन्धन में बन्धकर आत्मकल्याण की ओर अग्रसर हों और हमें विवाहोत्सव देखने का सौभाग्य दें।

नेमिकुमार उनकी इन बातों को अधोसिर किए हुए सुनते गए। वे विचार कर रहे थे कि प्राणी कितना मोहग्रस्त है। वे विवाह बन्धन के लिए किस रूप में अपनी रूपरेखा बनाते हैं। ब्रह्मचर्य के उच्चादर्श से गिराने

का कितना निकृष्ट कार्य करने के लिए तत्पर रहते हैं। क्या संसार की बुद्धिमत्ता इसी पर अवलम्बित है? किन्तु मैं आजन्म अविवाहित रहते हुए ब्रह्मचर्य के उच्चादर्श से तनिक भी नहीं गिरूंगा। दुविधा में फँसे हुए नेमिकुमार ने बात टालने के अभिप्राय से कहा- अभी धैर्य रखें।

वे समुद्रविजय व शिवा के अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी किंचित् भी नहीं डिगे, केवल भरोसा दिलाते रहे।

एक दिन श्रीकृष्ण अपने राजभवन में बैठे हुए थे कि पाँचजन्य शंख ध्वनि से वायुमण्डल में अपूर्व आनंद वृष्टि हुई। श्रीकृष्ण ने सोचा मेरे अलावा पाँचजन्य की ध्वनि कोई और नहीं कर सकता। मेरे सिवाय दूसरा कौन वासुदेव हो गया है, जो पाँचजन्य ध्वनित कर रहा है। वे दौड़े-दौड़े आयुधशाला में आए। वहाँ अरिष्टनेमि को देखा कि उक्त पराक्रम अरिष्टनेमि का है। घोर शंका ने उनके मन को विकल कर दिया। तब बाह्य प्रसन्नता प्रकट करते हुए अरिष्टनेमि से कहा- आज तुमको अपनी शक्ति के समकक्ष पाकर हृदय हर्षातिरेक है। क्यों न हम भी अपनी शक्ति का परीक्षण कर लें। अरिष्टनेमि

भी तत्पर हुए।

श्रीकृष्ण ने अपनी भुजाओं को आगे बढ़ा दिया और कहा इसे झुका दो। अरिष्टनेमि ने शिरीष पुष्प की तरह श्रीकृष्ण की भुजाएँ झुका दी। इससे श्रीकृष्ण को निराशा नहीं हुई। उन्होंने अरिष्टनेमि को भुजा बढ़ाने को कहा, परन्तु पासा उल्टा पड़ा। श्रीकृष्ण उनकी भुजा को झुकाना तो दूर हिला भी न सके। श्रीकृष्ण ने उन्हें बाधा के रूप में देखा और निश्चय किया कि अरिष्टनेमि को वैवाहिक बंधन में बांधना अत्यावश्यक है, जिससे सारी समस्या का समाधान हो जाएगा।

इधर श्रीकृष्ण अरिष्टनेमि के पाणिग्रहण के लिए प्रयत्न करने लगे। “अरिष्टनेमि को समझाना टेढ़ी खीर है” ऐसा विचार कर श्रीकृष्ण ने इस कार्य के लिए सत्यभामा आदि रानियों की सहायता लेनी शुरू कर दी।

एक बार बसन्तोत्सव मनाने के लिए अरिष्टनेमि रेवतिक गिरि पर पहुँचे। जहाँ रानियाँ उन्हें बहुधा भाव-भंगिमा से प्रभावित करने लगीं। अनुनय-विनय के द्वारा प्रार्थना की कि अन्य तीर्थकरों ने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया, क्या आप भी एक कन्या से विवाह नहीं कर सकते। इससे यादव वंश को धक्का लगेगा। अरिष्टनेमि ने अपने ज्ञान में देखा कि भोगावली कर्म शेष हैं। अतः “मौनं स्वीकृति लक्षणं” उक्ति अनुरूप अनुमति दे दी।

श्रीकृष्ण विचार करने लगे कि अरिष्टनेमि के अनुरूप राजकन्या होनी चाहिए। तब सत्यभामा ने अपनी बहिन राजीमती के लिए प्रस्ताव रखा, जिसे सब ने सहर्ष स्वीकार लिया।

दोनों ओर विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। पराक्रम व सौम्यता की प्रतिकृति, लब्धप्रतिष्ठ, अरिष्टनेमि को पति रूप में प्राप्त कर राजीमती अत्यन्त प्रमुदित थी। उसकी मनःस्थिति उसके चेहरे पर झलक रही थी। वह प्रफुल्लित-सी होती हुई अपने मुखमण्डल पर अविस्मरणीय आभा प्रस्तुत कर रही थी।

अतिभव्यता, वैभव एवं चतुरंगिनी सेना सहित श्रीकृष्ण, बलराम, समुद्रविजय दशार्ह राजा आदि अनेकानेक जनसमूह बारात में सम्मिलित हुए। बारात आगे बढ़ रही थी, तब एक वृद्ध ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण के समीप आकर कहा कि यह अशुभ मुहूर्त है। श्रीकृष्ण ने इस पर ध्यान न देते हुए उल्टा उस ब्राह्मण को अपमानित कर मार्ग से हटा दिया। ब्राह्मण ने अपमान सहन करते हुए कहा कि मैं देखता हूँ कि यह विवाह कैसे होगा? वे ब्राह्मण के रूप में इन्द्र थे।

अरिष्टनेमि उक्त स्थिति से पूर्व परिचित थे किन्तु मौन रहे। उन्होंने किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी। धीरे-धीरे बारात आगे बढ़ते-बढ़ते मथुरा के राजमहल से कुछ दूर बारात रुक गई। उधर राजीमती का मन अधीर हो रहा था। सखियों में अनेक विध हास-परिहास व चुहलबाजी का दौर चल रहा था। सखियाँ अरिष्टनेमि की प्रशंसा करते हुए नहीं अघाती थी। राजीमती का मन एक बार वर की झलक देखने को आतुर था। तभी वर का रथ प्रासाद के समीप गवाक्ष तक पहुँचा। राजीमती अरिष्टनेमि की अलौकिक छवि का अवलोकन कर आश्चर्यचकित हो गई। उसके नयन झुक गए। वह अपने भाग्य पर इतराने लगी। सौन्दर्य-सुधा के पान से रोम-रोम अतिरंजित होने लगा। राजीमती हर्षातिरेक से प्रफुल्लित हो गई। सहसा उसकी दाहिनी आँख व भुजा फड़कने लगी। किसी अप्रिय घटना की संभावना लग रही थी।

सखियों ने धैर्य बंधाया, बहुविध प्रलोभन दिया, पर नतीजा शून्य रहा। उसका चित्त अस्थिर हो गया। बारात अतिनिकट पहुँच रही थी। वाद्यों की निनाद से वातावरण अत्यन्त रम्य बना हुआ था। तभी वहाँ पशु-पक्षियों के आर्त्तनाद की ध्वनि ने अरिष्टनेमि को आन्दोलित कर दिया। पक्षियों की फड़फड़ाहट व पशुओं के करुण क्रन्दन से उन्हें असह्य पीड़ा प्रतीत हो रही थी।

निकटवर्ती सारथी से पूछा कि इन निरीह पशु-पक्षियों को बाड़े व पिंजरे में क्यों आबद्ध किया है? सारथी ने बताया कि आपके विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में आए

बारातियों के भोज के लिए इन पशुओं को आबद्ध किया गया है। अपने विवाह के निमित्त इस क्रूर हिंसक कर्म से उनका मानस करुणार्द्र हो गया। उन्होंने रथ को प्रत्यावर्तन के लिए आदेश दे दिया एवं बाड़े में आबद्ध पशु-पक्षियों को सारथी द्वारा मुक्त करा कर अपने अमूल्य आभूषण उस सारथी को पुरस्कार में दे दिए।

रथ प्रत्यावर्तित होते ही राज्य में कौलाहल मच गया। समुद्रविजय व अन्य राजाओं ने रथ रोकने का बहुधा प्रयत्न किया, लेकिन अरिष्टनेमि ने एक ही उत्तर दिया कि हम सब कर्म से आविष्ट हैं। इनसे छूटे बिना मुक्ति असंभव है। इतना कहकर वह प्रस्थित हो गए। लौकान्तिक देवों ने दीक्षित होने हेतु प्रार्थना की।

अरिष्टनेमि ने एक वर्ष तक वर्षीदान दिया। द्वारिका से रेवतिक पर्वत पर अरिष्टनेमि दीक्षित हो आत्मध्यान में लीन हो गए।

इधर अरिष्टनेमि के लौट जाने पर राजीमती मूर्च्छित हो गई, जैसे किसी ने वज्रपात किया हो। वह जल बिन मीन की भाँति तड़पने लगी। उसे अपनी भाग्यहीनता का आभास हुआ। वह दुर्देव अपने को अपाधिनी मानने लगी। सखियाँ भी यह दृश्य देखकर विचलित हो उठी। विलाप व अतिशय क्रन्दन से वातावरण द्रवित हो गया। सखियाँ धैर्य बंधाने लगी, किन्तु राजीमती पर उसका यत्किंचित् भी प्रभाव न पड़ा।

राजीमती की विचार शृंखला टूटी। कैसी आसक्ति, जिस आसक्ति से आत्मा का अधःपतन हो ऐसा क्यों? उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया और पूर्व के आठ भव की पवित्र स्थितियाँ चित्रपट की तरह चित्रित होने लगीं।

जिस पथ पर पतिदेव आरूढ़ हुए हैं, उसी पथ का मैं अनुसरण करूंगी। जिसे मेरे पिता ने वाग्दान किया है, वे ही मेरी आत्मा के स्वामी हैं। मैं भी उन्हीं के राजमार्ग पर जीवन निर्वाह करूंगी।

राजीमती ने अनेक प्रकार से उसे समझाते हुए कहा कि मैं तुम्हारी भाभी हूँ, पर रथनेमि के मानस में उठा

तूफान शान्त नहीं हो रहा था। वह अन्य दिन आने का कहकर चला गया। अन्य दिन आने पर रथनेमि पुनः आया तो राजीमती ने रजत पात्र में खीर लाकर दी और स्वयं भी खाई। रथनेमि बहुत प्रसन्न हुआ किन्तु कुछ समय पश्चात् ही राजीमती को वमन होने लगी क्योंकि उसने खीर खाने से पूर्व ऐसी औषधि ले ली थी जिससे वमन होना स्वाभाविक था। वमन होते ही राजीमती ने रथनेमि से कहा- इस अवलेह को चाट लीजिए।

रथनेमि ने कहा- इस घृणित अखाद्य पदार्थ को कौन मूर्ख ग्रहण करेगा। तब राजीमती ने कहा- वैसे ही मैं भी तुम्हारे महाभाग्यवान भ्राता की परित्यक्ता हूँ। जैसे रजतपात्र में लाया हुआ खाद्य पदार्थ वमन कर देने पर अग्राह्य होता है, वैसे ही मैं भी अग्राह्य हूँ। राजीमती ने रथनेमि को अनेक प्रकार से इतना फटकारा कि वह शर्मिन्दा हो गया। रथनेमि ने अपने कृत्य के लिए क्षमा मांगी और वहाँ से विदा ली।

कालान्तर में एक वर्ष पश्चात् अरिष्टनेमि केवलज्ञान, केवलदर्शन से गौरवान्वित हुए और तीर्थ की स्थापना की व तीर्थकर पद पर विभूषित हुए।

पति वियोग से पीड़ित राजीमती को जब भगवान को केवलज्ञान होने के समाचार मिले तो उसका रोम-रोम खिल गया। तत्काल प्रब्रज्या ग्रहण करने की स्फुरणा जगी। तदर्थ माता-पिता से अनुमति ग्रहण कर श्रीकृष्ण वासुदेव से आशीर्वाद लिया। वासुदेव ने कहा- लुंचकेशी, जितेन्द्रिय भवसृति पार कर अपुनर्जन्मा भव दीक्षित हो।

राजीमती दृढ़ संकल्प के साथ आत्मोर्ष की ओर अग्रसर हो रही थी। भगवान रेवंतकगिरि पर विराज रहे थे। उन्हें वंदन, नमस्कार व दर्शनार्थ जा रही थी कि अचानक मेघाच्छन्न हो गए। समीरण का प्रवाह अत्यन्त दयनीय था। ज्ञात रहे यहाँ विराग अडिगता व मन धीर भावना की परीक्षा हो रही थी।

घटाटोप प्रयोग के संवर्षा से आर्द्रता छा गई।

राजीमती संग साध्वियाँ इधर-उधर उपत्यकाओं में बिखर गई। राजीमती भी एक कन्दरा में चली गई, जो अंधकारपूर्ण थी। राजीमती ने अपने आर्द्रवस्त्र सुखाने के लिए विकीर्ण कर दिए। उस कन्दरा में रथनेमि ध्यान उपक्रम कर रहा था। राजीमती की आहट से ध्यान भंग करके अट्टहास करने लगा।

प्रतिध्वनि से राजीमती एकदम विस्मित होती हुई अपनी भुजाओं से सर्वांग संगोपान करती हुई ललकारते हुए बोली- अपयश के इच्छुक, तुझे धिक्कार है। संयम लेकर वमन किए हुए पदार्थ को ग्रहण कर रहा है। इससे तेरा मरण धर्म श्रेष्ठ है। उसकी इस भर्त्सना से रथनेमि

लज्जित हो गया। अपने कृतकर्म का प्रायश्चित्त कर आत्मस्थ अवस्था की ओर स्थित हुआ।

राजीमती प्रभु के दर्शन-वन्दन-नमस्कार करती हुई प्रसन्नता की लहरों से उत्फलित हुई। प्रभु की धर्मदेशना ने उसे जागृत कर दिया। वह समर्पण भाव से प्रभु की अमृतोमय वाणी के रसास्वादन से आनन्दमग्न हो गई। फलतः वह अत्यधिक तपःश्चर्या में लीन हो गई। संलेखना-संधारा द्वारा अजर-अमर अखिलेश पद का वरण किया। वासनामुक्त, पवित्र प्रेम और उत्सर्ग से राजीमती का जीवन जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में भासमान प्रतीत हो रहा था।

-क्रमशः



लघुकथा

नीयत

एक बुढ़ियाँ सिर पर गठरी लेकर जा रही थी। दोपहर की चिलचिलाती धूप में वह पसीना-पसीना हो रही थी। आगे पीपल का पेड़ था, वहाँ जाकर उसने विश्राम करके ठण्डा पानी पिया और सुस्ताने लगी। थोड़ी देर में एक युवक भी वहाँ आकर रुका और सुस्ताने लगा। बुढ़िया ने कहा- “बेटा, मैं पास ही के गाँव में रहती हूँ। यह गठरी तुम ले जाओ और गाँव की प्याऊ पर रख देना, मैं धीरे-धीरे पहुँच पाऊँगी।”

युवक ने कहा- “मेरे पास समय नहीं है” और चल दिया। थोड़ी दूर जाने के बाद युवक ने विचार किया कि “ये क्या किया मैंने? अगर मैं बुढ़िया की गठरी ले आता और उसे अपने साथ ले जाता तो बुढ़िया मुझे कैसे खोजती और गठरी में जो धन होता वह मेरा हो जाता।” ऐसा सोचकर वह पुनः बुढ़िया के पास पीपल के पेड़ के नीचे आया और बोला- “ला बुढ़िया! गठरी दे मैं पास वाले गाँव में इसे प्याऊ पर उतार दूँगा।”

बुढ़ियाँ ने उसे गठरी देने से इन्कार कर दिया और कहा- “बेटा! मैं ही ले जाऊँगी।” युवक को क्रोध आ गया, उसने कहा- “पहले तो कह रही थी कि बेटा मेरी गठरी ले चलो और अब मना कर रही हो। क्या कारण है?” बुढ़िया ने कहा- “बेटा! पहले जब मैंने कहा था तब तेरी नीयत साफ थी तो तूने मना कर दिया। आगे जाकर तेरी नीयत खराब हो गई तो मैंने मना कर दिया।” युवक शर्म से सिर नीचा करके चला गया और बुढ़िया अपने रास्ते चल दी।

चातुर्मास है समय की दस्तक : इसे पहचानो

-प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

जैन धर्म में चातुर्मास का बहुत महत्त्व है। चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि त्रयरत्नों का संगम होता है। संयमित, मर्यादित और धर्म-ध्यान करते हुए जीना एक कला है और यह कला चातुर्मास में ही विकसित, पल्लवित एवं पुष्पित होती है। क्योंकि ये चार माह, काल, क्षेत्र, भाव के अनुसार अनुकूल होते हैं। चार महीने का समय हमारे सन्मुख ध्येय यानी प्रमाद छोड़कर धर्म को आचरण में लाना, प्रवचन सुनना, सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, ज्ञानार्जन आदि धार्मिक क्रियाओं से जीवन में परिवर्तन आना चाहिए। हम स्वयं संवर और निर्जरा इन दो उपायों की ओर उन्मुख होते हैं। संवर यानी नए कर्मों को रोकना और निर्जरा यानी पूर्वार्जित कर्मों को क्षय करना। तप साधना के उद्यम से मन शान्त रहता है और आत्मा कल्याण के मार्ग पर बढ़ती है।

साधु-सन्तों के सानिध्य में शुभ परमाणुओं की प्राप्ति होती है और विचारों में निर्मलता आती है। संत-सतियों की प्रेरणा हृदय में करुणा, क्षमा, दया, मैत्री के फूल खिलाती है, जिससे सहिष्णुता का विकास होता है।

चातुर्मास एक अमूल्य अवसर है,
जो खोलता है संकल्प और श्रम के द्वार।
चातुर्मास की चांदनी में उमड़ता,
अनन्त संभावनाओं का ज्वार।।

टूट जाती है प्रमाद की चट्टान,
होता है स्वजागृति का संचार।
कर्मनिर्जरा का पथ सुहाना,
श्रेष्ठ बनता है आचार।।

प्रकृति द्वारा प्रदत्त वैभव के साथ
फलता-फूलता है धर्म।
मन के आँगन में पुण्य बीजों को,
रोपना ही हमारा सच्चा कर्म।।

सूक्ष्म हिंसा को समझ,
छः काय जीवों पर होता करुणा का विस्तार।
त्याग-तपस्या, जप-तप, ध्यान से,
छा जाती कण-कण में बहार।।

खुद चलकर आती है गंगा,
गोते इसमें खूब लगाएँ।
संत-सतियों के सुखद दर्शन कर,
जीवन अपना सफल बनाएँ।।

खुल जाए अंतर की आँखें,
कर जिनवाणी का रसपान।
विनय सहित गुरु सन्निधि में,
बन जाएँ भक्त से भगवान।।

चातुर्मास है समय की दस्तक,
इसे पहचानो।

अवसर की सीप के गर्भ से,
जीवन बनता मोती जानो।।
जाग जाए आत्मा, भीग जाए आत्मा,
आनन्द पाए आत्मा।

समता, साधना, उपासना से,
बन जाए 'प्रतिभा' आत्मा परमात्मा।।



अन्तर्जगत् के बोध प्रदाता प्रभु महावीर

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

**“जिंदगी एक हसीन ख्वाब है,
बस जीने की चाहत होनी चाहिए।
हर गम खुशी में बदल जाएगा,
मुस्कुराने की आदत होनी चाहिए।।**

जीवन के द्वार से तो हर किसी को गुजरना होता है लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो आँखें मूंदे-मूंदे ही जीवन की राहों पर चलते हैं। कुछ महापुरुष अपनी अन्तर्दृष्टि को जागृत कर लेते हैं। इस अन्तर्दृष्टि के साथ जीवन के रास्ते से गुजरते हुए वे जीवन के अनुभवों से नवनीत पा लेते हैं और जीवन को गहराई से जी जाते हैं। मुक्ति स्वयं उनकी आरती उतारती है। निर्वाण स्वयं उनके हाथों में सुख मेहंदी रचता है। महावीर जैसे संबुद्ध दिव्य पुरुषों ने सारी मानवता को अपने जीवन का निष्कर्ष और अन्तर्जगत् का सम्पूर्ण बोध दिया जो हमें अपने ज्ञान का दीप दे जाते हैं। अपने करुणा का नीर पिला जाते हैं। अपने प्रेम का अमृत हमारे हृदयों में उड़ेल जाते हैं वे ही महावीर इस धरती पर मरकर भी अमर हो जाते हैं।

प्रभु महावीर का अंतिम 42वाँ चातुर्मास पावापुरी में था। किसी को भी लगा नहीं इस चातुर्मास के बाद प्रभु का निर्वाण हो जाएगा। जिन्होंने प्रभु सानिध्य का लाभ उठाया वे आनन्द के सागर में डूब गए। हमें भी यह जीवन मिला है कब श्वासें पूरी हो जाए पता नहीं। हमें भी समय का लाभ उठाना चाहिए। महावीर का मार्ग साधना का मार्ग है और संघर्ष उसका सूत्र है। संकल्प उनके मार्ग की नींव है। सहिष्णुता उनके मार्ग का संबल और पाथेय है। महावीर मानस मिश्र, कल्याण मिश्र और साधना के मार्ग पर नींव के पत्थर, मील के पत्थर हैं। वे परम यथार्थ और परम आदर्श भी हैं। महावीर की देशना, महावीर का मार्ग, महावीर की दृष्टि अन्तर घट से छलकता हुआ

अमृत है जो हम सबके लिए सच्चिदानंद का माध्यम बन सकता है।

**“महावीर की साधना
हमारे जीवन का पैगाम है
स्वयं की खोज करें
यह प्रभुता का आयाम है।”**

हम लघु बनकर जीवन में आगे बढ़ेंगे जीवन मूल्यों को समझेंगे तभी अहं की परतों को हटा पाएंगे। जितना-जितना अहं व ममत्व का त्याग होगा उतना हम स्वयं के निकट पहुँच पायेंगे। प्रभु का अंतिम चातुर्मास संदेश दे रहा है-जीवन के क्षण अनमोल हैं। ये लौटकर वापिस आने वाले नहीं हैं। हमें भी चातुर्मास का समय मिला है। इस चातुर्मास में स्वयं का शोधन करें। मूल्यांकन करें कि मुझे यह जीवन किसलिए मिला है?

जैसे बीज वपन होता है अंधकार में लेकिन प्रस्फुटन बाहर दिखाई देता है। प्रभु का संदेश है हमारा जीवन अशाश्वत है कब नष्ट हो जाए पता नहीं। जीवन की कलियाँ मुरझाए उसके पहले सोऽहं का सुमन खिला लें। जीवन को सरसब्ज बना लें, समता की सुवास से जहां को महका दें। जैसे बारीश होते ही प्रकृति का आंगन ग्रीन हो जाता है। ग्रीन कलर प्रसन्नता एवं जीवटता का प्रतीक है जो सभी को आनन्द देता है। चातुर्मास भी हमें संदेश देता है। अपने भीतर की हरियाली को विकसित करो प्राणीमात्र से मैत्री का संबंध स्थापित करो। मानव मूल्यों को आत्मसात् करो।

**“अन्तर का देवता अब तुम्हे बुला रहा
बहुत रख चुके तुम स्वयं की संवेदना
जागृत करो तुम रोम-रोम में चेतना
वीर प्रभु की यही है अंतिम देशना।”**

चातुर्मास स्वयं की स्वीकृति का संदेश दे रहा है, हम स्थित प्रज्ञ बनें। स्वयं को निखारें परिशुद्ध करें। समता के सागर में शांत बन जाएं। किसी प्रकार की क्रिया प्रतिक्रिया का भाव हमारे भीतर ना रहे। उजालों की राहों को निहारें। परम क्षितिज पर स्वयं को पाएँ ऐसी साधना की सीढ़ियों पर चढ़कर चातुर्मास को सफल बनाएँ। प्रभु महावीर का चातुर्मास मानवता के लिए वरदान है।

आज हमारे कदम उन महान् पदचिह्नों का अनुशरण कर रहे हैं जो मात्र पद-चिह्न ही नहीं अपने आप में समय के शिलालेख हैं। हमारी दृष्टि आसमान में जगमगाते हुए असंख्य तारों में से उस तारे को निहार रही है जिसकी चमक में धुन्नता का वास है। हमारे कान उस दिव्य संगीत को सुनने के लिए तत्पर हैं जो अन्तर की वीणा को झंकृत कर दे। ऐसी ताल जो बिना करतल के बज उठे जिसमें दुनिया की सारी राग-रागिनियाँ समाविष्ट हो जाएँ। ऐसे नूर को हम घूंट-घूंट आकंठ पीना चाहते हैं जिसमें मानवता की प्रेम की निर्मलता झलकती हो।

दुनिया के उपवन में बहुत सारे फूल खिले हुए हैं लेकिन एक फूल ऐसा है जो अनायास ही हमें प्रभावित करता है लेकिन हमसे बहुत ऊँचा उठ चुका है। यह फूल महावीरत्व का है। वह धुन्नतारा वीतराग के प्रकाश का है। वह अनहद संगीत प्रभु महावीर के अमृत अनुभव का है। उस अमृत को पाने का अधिकार मानव मात्र का है। जिसको सत्य पाने की प्यास होगी, वही उस अमृत को पाएगा। हम भी अमर पुत्र हैं। अमरता का रसपान करें। घृणा, द्वेष, ईर्ष्या के ऐसिड को हृदय से परिष्कार करें।

सत्य, अहिंसा, प्रेम सुधा की हृदय से मनुहार करें। जीवन का कौनसा अंतिम क्षण होगा इस पर जरा विचार करें। मिला हुआ अनमोल श्वासों का खजाना हम यूँ ही ना बर्बाद करें। स्वयं का अवलोकन कर वीर प्रभु के सिद्धांतों से प्यार करें। स्वयं का उपकार कर जीवन का उद्धार करें।

**चातुर्मास की पावन वेला
मानव को जागृत करती है
सोई शक्ति तुम जगाओ
यह संदेशा देती है।**

समत्व योगी विश्ववत्सल, करुणा सिन्धु, मानव के मसीहा प्रभु महावीर का अंतिम चातुर्मास हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रभु का चातुर्मास विश्व के लिए खास भव्यों के जीवन में प्रकाश, शांति का सहवास, आराधना का अहसास, दिग् दिगन्त तक अमिट ज्योति का प्रकाश, पथ भूलों को सही दिशा में प्रयास, हम भी जीवन को बनाएँ कुछ खास। आचार्य भगवन् का सान्निध्य मिला। हमारे कर्मों का सुफल भरा विश्वास, चार मास अन्वेषण के हैं करो दृढ़ संकल्प कुछ खास।

**अन्तर मन में विश्राम पाया
सत्य करुणा का अमृत पिलाया
द्वेष घृणा को तुमने मिटाया
सोए विश्व को तुमने जगाया
त्रिशला नंदन शत्-शत् वंदन
काटो प्रभुवर भव-भव के बंधन॥**

भक्ति

—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- भक्त के लिए परमात्मा का आकर्षण वैसा ही है, जैसे लोहे के लिए चुम्बक का।
- परमात्मा के भजन का सहारा लेकर मन को एकाग्र करने से चित्त की चंचलता दूर होगी।
- ईश्वर की आज्ञा की अवहेलना करके उसके नाम की माला जप लेने मात्र से कल्याण नहीं हो सकता।
- जैसे पनिहारी हँसती-बोलती हुई जाती है, पर सिर पर रखी खेप को नहीं भूलती, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि पुरुष सांसारिक कार्य करता हुआ भी भगवान को नहीं भूलता।
- तू जैसा है, वैसा ही परमात्मा की शरण में जा। जैसे कमल के पत्ते का संयोग पाकर जल की साधारण बूंद भी मोती की कान्ति पा जाती है, उसी प्रकार तू परमात्मा का संयोग पाकर असाधारण बन जाएगा।

प्रत्याख्यान मार्गदर्शिका



गतांक 15-16 जून 2022 से आगे... शास्त्रों में तपस्या को कर्मनिर्जरा का एक महत्वपूर्ण स्रोत बताया गया है। अतः मानव को सभी धार्मिक क्रियाएँ मात्र कर्मनिर्जरा के लिए ही करनी चाहिए, ना कि भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु। यहाँ पर तपस्या के विभिन्न प्रकार नवकारसी, पौरसी, एकासन, उपवास आदि की मार्गदर्शिका आप लोगों के आत्मकल्याण हेतु दी गई है, जिसे समझकर तदनुसार तपस्या कर अनंतानंत कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। विभिन्न तपस्याओं के पचकखाण पाठ व अन्य जानकारियाँ निम्न प्रकार हैं-

अत्तहियट्टयाए- मैं सभी धार्मिक क्रियाएँ, तपस्या, स्वाध्याय, जाप आदि धार्मिक अनुष्ठान मात्र कर्मनिर्जरा के लिए व अपनी आत्मा के कल्याण के लिए करने का संकल्प लेता हूँ।

कालिक सूत्र, उत्कालिक सूत्र सम्बन्धित

32 आगमों में- औपपातिक (उववाई), राजप्रश्नीय, जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना, सूर्यप्रज्ञप्ति, दशवैकालिक, नन्दीसूत्र व अनुयोगद्वार ये 8 “उत्कालिक सूत्र” हैं तथा 32वाँ आगम “आवश्यक सूत्र” (प्रतिक्रमण) जो नो कालिक, नो उत्कालिक सूत्र है अर्थात् जिसके स्वाध्याय करने की कोई काल मर्यादा नहीं है। शेष 23 आगम “कालिक सूत्र” हैं।

‘अकाले कओ सज्झाओ’ के साथ ‘काले न कओ सज्झाओ’ को भी याद रखें।

सामान्यतया (अस्वाध्याय काल के अलावा)

प्रतिदिन- कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन के प्रथम व चौथे प्रहर में तथा रात के प्रथम व चौथे प्रहर में कर सकते हैं। (संधिकाल छोड़कर) उत्कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन व रात में कभी भी कर सकते हैं। (4 संधिकाल छोड़कर)।

4 संधिकाल- “सूर्योदय, सूर्यास्त, मध्य दिवस (दो पोरसी आने का समय) व मध्यरात्रि” - इनके 24 मिनट पहले से 24 मिनट बाद तक अर्थात् यदि 6 बजे सूर्योदय होता है तो प्रातः 5:36 से प्रातः 6:24 तक

सूर्योदय का संधिकाल रहता है। इसी तरह शेष 3 संधिकाल के लिए भी समझना चाहिए।

अस्वाध्याय काल में 32 आगमों में से आवश्यक सूत्र को छोड़कर शेष 31 आगम का मूलपाठ, गाथाओं का स्वाध्याय/वाँचनी/याद करना आदि नहीं कर सकते हैं, एक शब्द भी नहीं। मगर अस्वाध्याय काल में आगम का हिन्दी अर्थ, भावार्थ व अन्य जैसे- जैन सिद्धान्त बत्तीसी, कर्मसिद्धान्त, नानेशवाणी, श्रीरामउवाच, थोकड़े/बोल आदि का अध्ययन किया जा सकता है।

प्रहर गणना

हर ऋतु/हर मौसम में दिन के चार प्रहर व रात्रि के चार प्रहर होते हैं। यानी एक दिन-रात (24 घण्टे) में 8 प्रहर होते हैं।

* दिन का एक प्रहर का समय निकालने का तरीका

सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच के घण्टे ÷ 4

जैसे कि सूर्योदय होता है प्रातः 6:10 बजे, सूर्यास्त होता है सायं 6:50 बजे

इसके बीच के घण्टे- प्रातः 6:10 से सायं 6:50 तक = 12 घण्टे 40 मिनट

1 प्रहर का समय = 12 घण्टे 40 मिनट ÷ 4 = 3 घण्टे 10 मिनट

*** पोरसी आने का समय = सूर्योदय + 1 प्रहर का समय**

पोरसी आने का समय = सूर्योदय प्रातः 6:10 + 3 घण्टे
10 मिनट यानी = प्रातः 9:20 पर

* डेढ़ पोरसी आने का समय = सूर्योदय + 1 प्रहर
का समय + आधा प्रहर का समय

डेढ़ पोरसी आने समय = सूर्योदय प्रातः 6:10 + 1 प्रहर
का समय 3 घण्टे 10 मिनट + आधा प्रहर का समय (3
घण्टे 10 मिनट ÷ 2 = 1:35 मिनट)

प्रातः 6:10 + 3 घण्टे 10 मिनट + 1 घण्टा 35
मिनट = प्रातः 10:55 पर

* रात्रि का एक प्रहर निकालने का तरीका

सूर्यास्त से सूर्योदय के बीच के घण्टे ÷ 4

जैसे कि यदि सूर्यास्त सायं 6:50 पर होता है और
सूर्योदय प्रातः 6:10 पर होता है तो इसके बीच के घण्टे
सायं 6:50 से प्रातः 6:10 तक = 11 घण्टे 20 मिनट

1 प्रहर का समय = 11 घण्टे 20 मिनट ÷ 4 = 2
घण्टे 50 मिनट

यानी सूर्यास्त सायं 6:50 + 2 घण्टे 50 मिनट = रात्रि
9:40 तक (कालिक सूत्र के स्वाध्याय करने का समय)

1. नवकारसी- उगए सूरें नमोक्कारसहियं
पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं
सहसागारेणं वोसिरामि।

2. पोरसी/डेढ़ पोरसी- उगए सूरें
पोरिसिं/साड्ढपोरिसिं पच्चक्खामि,
चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं
सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

3. दो पोरसी- उगए सूरें पुरिमड्ढं
पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं
सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं
साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-
वत्तियागारेणं वोसिरामि।

4. एकासन/बेआसन- एगासणं/बेआसणं
पच्चक्खामि ति विहं पि आहारं असणं खाइमं
साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
आउं टणपसारणेणं गुरुअब्भुट्टाणेणं
महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं
वोसिरामि।

5. एकलठाणा- एगट्टाणं पच्चक्खामि, चउव्विहं
पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं,
अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं गुरुअब्भुट्टाणेणं
महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
वोसिरामि।

6. आयम्बिल- आयंबिलं पच्चक्खामि,
अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं
उक्खित्तविवेगेणं गिहत्थसंसट्टेणं महत्तरागारेणं
सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

7. नीवी (निर्विकृतिक्क)- निव्विगइयं
पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्टेणं उक्खित्तविवेगेणं
पडु च्चमक्खिणं महत्तरागारेणं
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

प्र
त्या
ख्या
न
पा
ठ

8. अभिग्रह- अभिग्रहं पचक्खामि, तिविहं पि/चउव्विहं पि आहारं असणं (पाणं) खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

10. उपवास- उगए सूरे चउत्थभत्तं पचक्खामि, तिविहं पि/चउव्विहं पि आहारं असणं (पाणं) खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

नोट- एकासन/बेआसन, एकलठाणा के मूल पाठ में “सागारियागारेणं” तथा एकासन/बेआसन, एकलठाणा, आयम्बिल, नीवी, उपवास के मूल पाठ में आए “पारिद्वावणियागारेणं” आगार का श्रावक वर्ग के लिए प्रयोजन नहीं होने के कारण यहाँ पाठों में यह शब्द नहीं लिखा गया है।

दया/दयाभाव- दया/दयाभाव का पचक्खान, द्रव्य से हिंसादि पाँच आश्रव सेवन का त्याग, क्षेत्र से सम्पूर्ण लोक प्रमाण, काल से नवकार मंत्र गिनकर न पारूँ तब तक, भाव से उपयोग सहित एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

दसवाँ पौषध- दसमं पोसहोववासं पचक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं पचक्खामि, दव्वओ सावज्जं जोगं पचक्खामि, खेत्तओ लोगप्पमाणं, कालओ जाव सूरोगमं, भावओ दुविहं तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

ग्यारहवाँ पौषध- ग्यारहवाँ (पडिपुण्ण) पौषध व्रत,

प्र
त्या
ख्या
न
पा
ठ

9. दिवसचरिम- दिवसचरिमं पचक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

11. बेला/तेला- पूर्वकाल मिलाकर - छट्टभत्तं/अट्टमभत्तं पचक्खामि, तिविहं पि/चउव्विहं पि आहारं असणं (पाणं) खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

असणं पाणं खाइमं साइमं का पचक्खान, अबंभसेवन का पचक्खान, अमुक मणि सुवर्ण का पचक्खान, मालावन्नगविलेवण का पचक्खान, सत्थमुसलादिक सावज्ज जोग सेवन का पचक्खान, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(शुद्ध आराधना के लिए पौषध के 18 दोष पढ़ें)

सामायिक पचखने का पाठ- करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पचक्खामि* जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

संवर का पाठ- द्रव्य से हिंसादि पाँच आश्रव सेवन का त्याग, क्षेत्र से सम्पूर्ण लोग प्रमाण, काल से नवकार मंत्र गिनकर न पारूँ तब तक भाव से उपयोग सहित एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

सभी पचक्खान पारने का पाठ

नमोक्कारसहियं/पोरिसिं/एगासणं/बेआसणं/एगट्ठाणं/

आयम्बिलं/निव्विगइयं/उपवास/दयाव्रत/पौषध-

सम्मं काएणं न फासियं, न पालियं, न तीरियं, न कित्ठियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

पौषध पारने का पाठ- 10वाँ पौषध/11वाँ पौषध/आठ प्रहर का पौषध सभी के लिए।

पौषध व्रत के विषय में कोई अतिचार लगा हो तं जहा-

1. पौषध में शय्या-संधारा न देखा हो या अच्छी तरह से न देखा हो।
2. प्रमार्जन न किया हो या अच्छी तरह न किया हो।

3. उच्चारपासवण परठने की भूमि देखी न हो या अच्छी तरह से न देखी हो।
4. उच्चारपासवण परठने की भूमि पूंजी न हो या अच्छी तरह से न पूंजी हो।
5. उपवास युक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो तो मिच्छा मि दुक्कडं

**आरम्भ परिग्रह अल्प हो, महाव्रत हो स्वीकार।
अंत समय आलोचना, करूँ संधारो सार॥**

साभार- संकलित



चातुर्मास

भक्ति रस
-उत्सव जैन, नौगामा

प्रदूषित वातावरण दूर करता,
जब आता चातुर्मास।
धरती पवित्र हो जाती,
जब आता चातुर्मास।
धर्मस्थान स्वच्छ हो जाते,
जब आता चातुर्मास।
जगह-जगह पर खुशी छा जाती,
जब आता चातुर्मास।
जीवों के प्रति करुणा आती,
जब आता चातुर्मास।
सन्तश्री के दर्शनों का लाभ मिलता,
जब आता चातुर्मास।
धर्म की प्रभावना बढ़ जाती,
जब आता चातुर्मास।

आहारचर्या, वैयावृत्ति का अवसर मिलता,
जब आता चातुर्मास।
पुण्यार्जन का लाभ मिलता,
जब आता चातुर्मास।
संत-सतियों से धर्म चर्चा होती,
जब आता चातुर्मास।
खान-पान में शुद्धि आती,
जब आता चातुर्मास।
सुख-शान्ति का वातावरण रहता,
जब आता चातुर्मास।
दीपावली-सा माहौल रहता,
जब आता चातुर्मास।
'उत्सव' कहता श्रावक खुश हो जाते,
जब आता चातुर्मास।

गुण-ग्राहकता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- नाम पूजनीय नहीं होता और ना ही वेश वन्दनीय होता है। पूजा या वन्दना गुणों की होती है।
- जिस मनुष्य के हृदय में थोड़े से भी सुसंस्कार विद्यमान हैं, वह गुणीजनों को देखकर प्रमुदित होता है। मानव-स्वभाव की यह आन्तरिक वृत्ति है, जो नैसर्गिक है।
- श्रोता को वक्ता के दोष न देखकर केवल उसके गुण ही ग्रहण करने चाहिए।
- तुम दूसरे के दुर्गुण खोजोगे तो अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारना होगा।

चातुर्मास के लाभ

-सजग, नीमच

चातुर्मास शब्द सुनते ही हमारे मन में एक तस्वीर उभरती है। साधु-साध्वियों का समागम, जिनवाणी श्रवण, पर्व पयुषण, त्याग-तप इत्यादि। यह चार माह आत्मकल्याण हेतु कितने महत्वपूर्ण है। यह बात अनभिज्ञ नहीं है, परन्तु चातुर्मास शारीरिक व मानसिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण जो आगे वर्णित है।

उपरोक्त वाक्यों के अतिरिक्त भी चातुर्मास के संदर्भ में विभिन्न नकारात्मक वाक्यों का भी प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के वाक्य यह प्रदर्शित करते हैं कि आज समाज का एक वर्ग चातुर्मास की महत्ता से अनभिज्ञ है। अधिकांश समाजजनों को चातुर्मास के वैज्ञानिक महत्त्व की जानकारी नहीं है। वे लोग चातुर्मास के अर्थ और उद्देश्य से अनभिज्ञ हैं।

चातुर्मास को सामान्य बोलचाल की भाषा में चौमासा भी कहा जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है- चार माह। लेकिन जैन धर्म में चातुर्मास का अर्थ है- आत्मशुद्धि तथा आध्यात्मिक उन्नति का पर्व।

चातुर्मास की आवश्यकता क्यों- वर्तमान समय में अत्यंत व्यस्त जीवनशैली के कारण मानव चातुर्मास के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पा रहा है। वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नहीं होने के कारण तथाकथित आधुनिक विचार रखने वाले लोग चातुर्मास के दौरान किए जाने वाले त्याग को एक बंधन की तरह समझते हैं। इसका कारण है आधुनिकता के अंधानुकरण में लोगों ने चातुर्मास के वैज्ञानिक महत्त्व को भुलाकर भौतिकता पर अधिक ध्यान लगा दिया है। इस कारण उनके जीवन में शारीरिक तथा मानसिक स्तर पर अनेक प्रकार के असंतुलन प्रकट होने लगे हैं। इनके समाधान प्राप्त करने के लिए वे उपाय की तलाश में भागते रहते हैं, लेकिन भौतिकता के जाल में फँसे होने के कारण उन्हें समाधान नहीं मिल पाता है। इसके विपरीत उनके जीवन

में असंतुलन की मात्रा बढ़ती ही जाती है।

अधिकांश लोग यह जानते हैं कि वर्षा ऋतु के दौरान नमी की अधिकता के कारण विभिन्न कीट, पतंगों का प्रकोप बढ़ जाता है, जिसके कारण बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। वर्षा ऋतु में कभी-कभी कई दिनों तक बादल तथा वर्षा के चलते सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर नहीं पहुँच पाता, जिसके कारण विभिन्न प्रकार की शारीरिक व मानसिक व्याधियाँ (रोग) शरीर को घेर लेती हैं।

मानव के शरीर को उपरोक्त व्याधियों से बचाने तथा उनके धार्मिक उत्थान में सहायता करने के उद्देश्य से चातुर्मास का प्रतिपादन किया गया था। चातुर्मास के दौरान की जाने वाली तपस्या तथा धार्मिक आराधना व्यक्ति की आत्मशुद्धि में सहायता करती है।

चातुर्मास के लाभ-

- (1) चातुर्मास मानव की आध्यात्मिक उन्नति में सहायक है।
- (2) दिनचर्या को संतुलित करने में सहायक है।
- (3) भोजन संबंधी गलत आदतों को ठीक करता है।
- (4) विभिन्न शारीरिक तथा मानसिक व्याधियों को ठीक करने में सहायक है।
- (5) आत्मशुद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक है।

चातुर्मास में क्या करें- मनोविज्ञान के अनुसार मानव जीवन में त्याग का बड़ा महत्त्व है। विभिन्न अध्ययनों में यह प्रमाणित हुआ है कि यदि अंतःकरण से त्याग किया जाए तो यह मस्तिष्क की चंचलता को संतुलित करने में सहायक होता है। शुद्ध भाव से त्याग करने से अद्भुत आत्मिक शान्ति की प्राप्ति होती है, मानव के पापकर्मों की निर्जरा होती है, विभिन्न शारीरिक व्याधियों से मुक्ति मिलती है तथा शारीरिक व मानसिक आरोग्यता की प्राप्ति होती है। अतः शांत मस्तिष्क, स्वस्थ शरीर के लाभ प्राप्त करने के लिए चातुर्मास के सुअवसर का सदुपयोग करें।

चातुर्मास और विज्ञान

-वंदना बाबेल, राजसमंद

हजारों वर्ष पहले भगवान महावीर स्वामी ने जैन आगमों में जिन जैन सिद्धांतों का वर्णन किया है, वे एक-एक सिद्धांत आज के परिवेश में भी साइंटिफिक तरीके से 100 प्रतिशत सही हैं।

वर्षभर में चातुर्मास के लिए यह 4 माह ही उपयुक्त क्यों बताए गए हैं, क्योंकि इसके साथ कई उपयुक्त साइंटिफिक कारण जुड़े हैं। जैसे पहली बारिश होते ही धरती पर चढ़ा धूल मिट्टी का आवरण उतर जाता है और धरती हरीतिमा का आवरण ओढ़ लेती है, जिससे चारों तरफ हरियाली और खुशहाली का वातावरण हो जाता है। उसी तरह वर्षभर में हमारी आत्मा पर चढ़े राग-द्वेष और कषाय के आवरणों को हटाने के लिए चातुर्मास सरलतम मार्ग है। त्याग-तप और धार्मिक क्रियाओं से जुड़कर हम अपने भावों में आए हुए विकार और मलिनता को चातुर्मास के जरिए दूर कर प्रगाढ़ कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं।

लगभग आठ माह विहार में रहने वाले सभी संत-सतियाँजी म.सा. वर्षावास/चातुर्मास में एक ही स्थान पर रहकर धर्म आचरण करते हैं, क्योंकि इसके पीछे जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांत 'अहिंसा परमोधर्म' से जुड़े हैं। वर्षाकाल में इतने सूक्ष्म-सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होती है जिन्हें हम अपनी आँखों से नहीं देख पाते हैं। 4 माह तक एक ही स्थान पर रहने का सबसे प्रमुख कारण जीव हिंसा से बचना है।

वर्तमान में फैली कोविड-19 जैसी महामारी से बचने के लिए वैज्ञानिकों ने आज जो भी उपाय बताए हैं वे हमारे जैन धर्म में हजारों वर्षों पहले ही बताए जा चुके हैं। हम अगर वास्तविक रूप में जैन दर्शन को अपने जीवन में उतारते हैं तो हम बीमारियों के अनेक कारणों से बच

सकते हैं। जैन धर्म कहता है-

1. सूर्यास्त से पूर्व

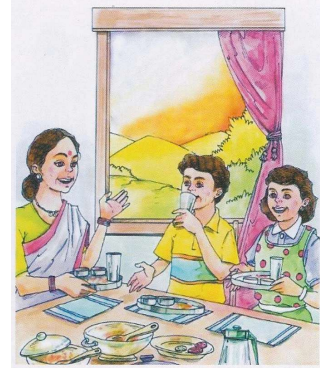
भोजन-सूर्यास्त से पहले भोजन कर लेना चाहिए। इस सन्दर्भ में विज्ञान भी कहता है कि सूर्य की रोशनी में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति ना के

बराबर होती है। सूर्य की रोशनी में हमारी पाचन शक्ति तीव्र स्तर पर होती है और गरिष्ठ भोजन भी सूर्य की किरणों में आराम से पच जाता है।

2. इंटरमीडिएट फास्टिंग- आज सभी डाइटिशियन स्वास्थ्य लाभ के लिए करने का सुझाव देते हैं। हमारे जैन धर्म में सूर्यास्त पश्चात् से कुछ न खाकर सुबह नवकारसी एवं पौरसी का प्रावधान वही प्रक्रिया है, जिससे हम स्वास्थ्य लाभ के साथ धर्म लाभ भी उठा सकते हैं।

3. धोवन पानी- जैन धर्म में धोवन पानी पीने का प्रावधान है ताकि एक निश्चित समय के लिए हम जीवों की उत्पत्ति रोक सकें और जीवों को अभयदान दे सकें। आज वैज्ञानिक भी पानी को उबालकर पीने की सलाह देते हैं, जो अचित्त पानी का ही एक रूप है। साइंटिफिक तरीके से यह सिद्धांत भी बिल्कुल सही है।

4. वनस्पति का त्याग- चातुर्मास काल में हम वनस्पति और जमीकन्द का ज्यादा से ज्यादा त्याग करने के भाव रखते हैं। बहुत से लोग तो 2 महीने तक पूरी तरह से हरी वनस्पति का त्याग करते हैं, क्योंकि वर्षाकाल में वनस्पति में बहुत ही सूक्ष्म-सूक्ष्म जीव पैदा होते हैं। वैज्ञानिक भी मान चुके हैं कि पौधों में जीवन होता है



और हमारे शरीर के हार्मोनल बैलेंस के लिए सप्ताह में एक दिन हरी का त्याग बहुत ही हितकारी होता है।



जो श्रावक-श्राविकाएँ प्रमादवश धर्माराधना नहीं कर पाते हैं, वे चातुर्मास काल में साधु-सन्तों के निरन्तर संपर्क में रहने से अपने जीवन को सहज ही धार्मिक संस्कारों से जोड़ लेते हैं और अपनी दैनिक प्रवृत्तियों में बदलाव ला पाते हैं।

किसी भी चीज को प्रगाढ़ होने के लिए निरंतरता बहुत जरूरी है और 4 माह तक निरंतर साधु-संतों के संपर्क में रहने से श्रावक-श्राविकाएँ अपने जीवन में त्याग-तप और धर्माराधना से कर्मों की निर्जरा कर पाते हैं तथा जैन सिद्धांतों को करीब से जान पाते हैं।

चातुर्मास काल की सबसे प्रमुख बात यह भी है कि

जैन धर्म का सबसे बड़ा पर्व पर्यूषण पर्व इसी समय आता है और पूरे त्याग-तप व उल्लास के साथ मनाया जाता है। मोक्ष मार्ग की पहली सीढ़ी यहीं से शुरू होती है।

साधु-साध्वीजी के सान्निध्य में सारा माहौल पवित्र-पावन व शान्तिमय हो जाता है और भावों में निर्मलता आती है। प्रतिदिन चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ जाने से छोटे-छोटे बच्चों में भी धार्मिक संस्कारों की नींव पड़ती है। चातुर्मास के दौरान हम कई नए परिवारों से मिलते हैं। उनसे आपसी मेल-मिलाप बढ़ता है और सामाजिक संबंध सुदृढ़ बनते हैं। बहुत सारे ऐसे क्रियाकलाप होते हैं जो हम घर में अकेले रहकर नहीं सीख पाते। स्थानक जाकर संतों के संपर्क में हम जीवन जीने की असली कला सीखते हैं।

सारांश में सारगर्भित बात यही है कि जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है। जैन धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर हम एक आदर्श और संतुलित जीवन जी सकते हैं।



भक्ति रस

चातुर्मास : कुछ तो खास हो

-मोनिका मिन्नी, अहमदाबाद

व्रत, साधना और तप का
एक अनूठा प्रयास हो
इस बार का चातुर्मास
कुछ तो खास हो।।
कषायों से मुक्त हो जीवन
सम्यक्त्व अपने पास हो,
जीव हिंसा से बचे हर हाल में
दिल में करुणा का वास हो।।
साधु-साध्वियों के प्रति
हर दिल में सच्ची आस हो,
सेवा दर्शन में गुजरती

जन-जन की हर एक श्वास हो।।
जमीकंद का त्याग और
रात्रिभोजन का अवकाश हो,
लीलन-फूलन की सार-संभाल
हर व्यक्ति का अभ्यास हो।।
दिल किसी का ना दुखाऊँ
ना किसी का परिहास हो,
स्वयं को स्वयं से जानो
अन्तरात्मा की तलाश हो।।
गुरु राम की छवि का
हर मन में निवास हो,

व्याख्यान हो चर्या में शामिल
प्रतिक्रमण से प्रकाश हो।।
पुण्य कर्मों से प्रबल ये
धरती और आकाश हो,
बारह भावनाओं को अपनाकर
पाप तत्त्वों का हास हो।।
धर्म की बगिया में खिलता
जैनों का इतिहास हो,
वैराग्य के भाव जग जाएँ
ऐसा वर्षावास हो।।
इस बार का चातुर्मास
कुछ तो खास हो।।

शाकाहार, यूनानी दार्शनिकों की दृष्टि में

संकलित (1995)

यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक पाइथागोरस के बाबत लेखक इआम ब्लीकस ने लिखा है- “माँसाहार त्याग का उसका एक कारण यह था कि वह हिंसा को शान्ति का विरोधी मानता था। उसकी मान्यता थी कि जो दूसरे पशुओं की लाश को पेट में ढूँस लेने को अस्वाभाविक एवं अन्यायपूर्ण मानते हैं, वे युद्ध छेड़ने या मानव वध को निश्चय ही अधिक अन्यायपूर्ण और अनुचित मानेंगे।”

लेखक ने राजनीतिज्ञों और विधायकों के प्रति पाइथागोरस के पावन चिन्तन को इस प्रकार व्यक्त किया है- “उन राजनीतिज्ञों को जो विधायक भी हैं उसने उन्हें माँसाहार त्याग की विशेष रूप से सलाह दी है, क्योंकि यदि वे उच्चतम रूप में न्यायपूर्ण ढंग से कार्य करने के इच्छुक हैं तो उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे निम्नतर प्रकार के प्राणियों को हत या आहत न करें। यदि वे अपने मित्र पशुओं को निगल जाने के अतोषणीय अतिलोम से अपने को वंचित नहीं कर सकते तो भला वे दूसरों को न्यायोचित काम कर सकने की प्रेरणा कैसे दे सकेंगे? पशु भी उन्हीं तत्त्वों का है जिनका मानव। वह भी मानव का सहभागी है। इन तथ्यों की दृष्टि से हमारा उनसे पैतृक सम्बन्ध है। (पाइथागोरस-570-470 ई.पू.)।

महान् दार्शनिक हेरोडोटस का कथन था- “अपने से निरीह प्राणी को कष्ट क्यों पहुँचाते हो? आप इसका प्राण हरण करने वाले कौन हैं, जिसे ईश्वर ही प्रदान कर सकता है। मांस क्यों खाएँ? निरीह पशु का खून क्यों बहाएँ? देववाणी क्या उसकी निन्दा नहीं करती? क्या देववाणी आपको धूप में पके अन्न और फल खाने की

सलाह नहीं देती? (हेरोडोटस 484-425 ई.पू.)।

दार्शनिक प्लेटो ने ‘रिपब्लिक’ में लिखा है- “मेरी धारणा है कि काम करने वाले लोग गेहूँ और जौ के आटे की रोटियाँ बनाकर उन पर जीवन निर्वाह करेंगे। मैं कल्पना करता हूँ कि हम उनके सामने अंजीर, फलियाँ और मटर रख सकेंगे। वे बेरी और गिरियो को आगे में भूल सकेंगे। इससे वे पूर्ण स्वस्थ रहेंगे और दीर्घ आयु पाकर मृत्यु को प्राप्त होंगे।

आवश्यकताओं को अत्यधिक बढ़ा लेने पर मांसभक्षण करके जीवन का परम लक्ष्य धन संचय बना लेने पर गणतंत्र अन्याय और हिंसा की ओर कदम बढ़ाएगा और गड़ढे में गिरेगा। यदि आपको किसी ऐसे नगर की कल्पना हो, जिसके निवासियों में तुष्टि न हो तो वे कुछ भी प्राप्त करके संतुष्ट न होंगे। उनके पास दिखाने वाले सामान होंगे माँस होगा और नाना प्रकार के पकवान होंगे। ऐसे नगरों के लिए बड़ी संख्या में पशुओं की अपेक्षा होगी और उसी प्रकार नगर के निवासी उन्हें खोजना मात्र चाहेंगे। - प्लेटो (428-347 ई.पू.)

सोचता हूँ काश इन युगद्रष्टा, भविष्यद्रष्टा महान् दार्शनिकों के चिन्तन पर अमल होता तो न धरती पर युद्ध होते, न आतंकवाद अपने पैर पसारता, न सत्ता के लिए छीना-झपटी होती, न असमानता बढ़ती और न असंख्य पशु-पक्षियों की आहों अशकों से यह धरा आहत होती। बूचड़खाने नजर नहीं आते, माँस निर्यात का नामोनिशान नहीं होता। हर प्राणी को जीने का अधिकार होता और धरा के जर्रे-जर्रे पर अमर और अहिंसा के रंग-बिरंगे फूल खिलते जिनकी खुशबू बहते बयार के साये में मानवता को निहाल कर देती और स्वर्ग इस धरा पर उतर जाता।



भगवान महावीर और चातुर्मास

—संकलित (1999)

चातुर्मास करुणा और अहिंसा पर आधारित अवधि है। अहिंसक विचारधारा के प्रचार-प्रसार और आचरण के लिए चातुर्मास की व्यवस्था जैन तीर्थंकरों द्वारा की गई थी। ग्रीष्म ऋतु के पश्चात् वर्षा ऋतु का आगमन होता है। वर्षा ऋतु में मेघों से जल वृष्टि होने पर धरा सिंचित होती है और चारों ओर हरी-हरी घास, नए पौधे उगने लगते हैं। अथाह जल राशि से नदी-नालों में उफान आ जाता है और आवागमन के मार्ग भी अवरुद्ध हो जाते हैं। ऐसे समय में वनस्पति तक की करुणा से युक्त श्रमण वनस्पति को रौंदना तो दूर उसे छूते भी नहीं है। जैन धर्मानुसार वनस्पति में भी जीव है। इसी से छः काया में वनस्पति काय का भी वर्णन आता है। वनस्पति पर चलने से उसे भी कष्ट पहुँचता है। वर्षा ऋतु में वनस्पति और जल की अधिकता के कारण उनकी हिंसा की संभावना अधिक हो जाती है। इसी प्रकार से श्रमण अपनी विहार यात्रा को चार महीने के लिए विराम देते हैं। इस चार माह के समय को चातुर्मास की संज्ञा दी गई है। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से चातुर्मास प्रारम्भ होता है और कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी के बाद इसकी समाप्ति होती है। इन चार महीनों में संत-सतियाँजी अपने आत्मकल्याण के लिए तो धर्माराधना करते ही हैं साथ ही अपने अनुयायी श्रावक-श्राविकाओं को भी धर्माराधना की प्रेरणा देते हैं। स्व-कल्याण के साथ जनकल्याण उनके जीवन का अभिन्न अंग होता है।

चातुर्मास का प्रचलन अनादिकाल से है। प्रत्येक तीर्थंकर और उनके अनुयायी श्रमण-श्रमणीवृन्द चातुर्मास करते रहे हैं और आज तक कर रहे हैं। शासन नायक भगवान महावीर स्वामी ने स्वयं चातुर्मास का आचरण करके इसका उपदेश दिया था। वे चार ज्ञान के धारक थे। उनका हर कदम अहिंसक होता था। उनकी

दृष्टि गहराई तक देखने वाली थी। तब भी उन्होंने सूक्ष्म प्रमाद से बचने के लिए चातुर्मास को चुना था। भगवान महावीर के प्रथम चातुर्मास का प्रसंग यहाँ प्रस्तुत है—

दीक्षित होने के प्रथम वर्ष में एक बार महावीर मोराक ग्राम के निकट से विचरण करते हुए जा रहे थे। मोराक ग्राम के निकट ही कुछ तापसों (तपस्वियों) का एक आश्रम था। उस आश्रम के कुलपति का नाम दुइज्जंत था, जो महावीर के पिता राजा सिद्धार्थ के मित्र थे। महाश्रमण महावीर को अपने आश्रम के निकट से जाते देखकर उन्होंने पहचान लिया और उनके पास आकर बोले— “महाश्रमण! अपनी चरणरज से मेरे आश्रम को भी पवित्र कीजिए।” भगवान महावीर उनके आश्रम में आ गए। जब महावीर वहाँ से विहार (प्रस्थान) करने लगे तब दुइज्जंत ने पुनः आग्रह किया— महाश्रमण! चातुर्मास काल (वर्षा ऋतु) निकट है। मैं चाहता हूँ कि आपका प्रथम चातुर्मास मेरे आश्रम में ही हो। महावीर ने सहज ही स्वीकृति में हाथ ऊपर उठा दिया।

चातुर्मास से कुछ दिन पूर्व महावीर निकटवर्ती गाँवों और जंगलों में विचरण करते रहे। तत्पश्चात् चातुर्मास का समय निकट जानकर महावीर चातुर्मास हेतु कुलपति दुइज्जंत के आश्रम में आ गए। आश्रम में घास-फूस से निर्मित अनेक छोटी-छोटी कुटियाएँ थीं, इनमें से एक पर्णकुटी महावीर को दे दी गई, जिसमें रहकर वे ध्यान-ध्यान करने लगे। संयोग से उस वर्ष अकाल की स्थिति थी। वर्षा नहीं होने से जंगलों में हरी घास का अभाव था। पशु भूख से व्याकुल थे। उन्हें सूखी घास भी मिलती तो वे उसे खाकर अपनी भूख मिटाते थे। अनेक बार गायें आश्रम की ओर आती और घास-फूस से बनी झोंपड़ियों को खाने लगीं। अपनी झोंपड़ियों की रक्षा के लिए तापस डंडे लेकर गायों के पीछे दौड़ते, लेकिन महावीर गायों को खाने से कैसे रोक सकते थे।

करुणा मूर्ति महावीर की ध्यान साधना निर्विघ्न चलती रही। गायों ने उनकी पर्णकुटी को लगभग पूरा खा लिया था। तापसों ने अपने कुलपति को शिकायत की- “गुरुदेव! कैसे साधु को आपने कुटी दे दी हैं, वह तो अपनी कुटिया की सुरक्षा तक नहीं कर सकता है।” कुलपति महावीर की पर्णकुटी के पास आए और तापसों की शिकायत सही पाकर उन्होंने महावीर को उलाहना दिया- वर्द्धमान! अपने घोंसले की सुरक्षा तो पक्षी भी करते हैं फिर तुम तो क्षत्रिय राजकुमार हो। क्या तुम अपनी कुटी की भी रक्षा नहीं कर सकते?

कुलपति के वचनों का महावीर ने कोई उत्तर नहीं दिया। उस आश्रम को छोड़ने के बाद महावीर ने परिचितों से दूर रहने, साधना के लिए सुरक्षित स्थान

चुनने, मौन रहने आदि की प्रतिज्ञा ले ली। महावीर ने चातुर्मास का शेषकाल जंगल में एक वृक्ष के नीचे निरन्तर ध्यान में रहते हुए पन्द्रह-पन्द्रह दिन के उपवास के साथ पूर्ण किया।

वस्तुतः वर्षाकाल अहिंसा व करुणा की अवधि है, लेकिन यदि चातुर्मास स्थल आदि हिंसा और अकरुणा को बढ़ाने वाला सिद्ध हो तो श्रमण उस स्थल का त्याग कर देते हैं। इसे भगवान महावीर की आज्ञा-विराधना नहीं, आराधना ही मानी जाती है। अतः अपेक्षित है कि सन्त-सतियाँजी की संयम-साधना बाधित न हो एतदर्थ श्रावक वर्ग ध्यान रखे एवं सन्त सतियाँजी अपनी साधना में सजग रहते हुए अपने सानिध्य में अधिकाधिक धर्मध्यान करने की प्रेरणा दें।



सबसे बड़ा मूर्ख

संस्कार सौरभ

-संकलित

सेठ किरोड़ीमल का व्यापार काफी फैला हुआ था। उसके पास किसी चीज की कोई कमी न थी। पर था वह बड़ा कंजूस। धर्म के नाम पर पाँच पैसे भी खर्च नहीं करता था। सभी नौकरों में सेठ किरोड़ीमल का चहेता नौकर था रमन। रमन सीधा-सादा, ईमानदार और अविवाहित था। उसके सगे-संबंधी भी कोई न थे। सेठ उसे महीने में जो वेतन देता उसमें से वह आधा गरीबों को बाँट देता था। सेठ उससे कहता कि रमन, तू ठहरा गँवार का गँवार। अरे मूर्ख, कुछ जोड़कर अपने पास भी रख।

रमन मुस्कराता हुआ कह देता- सेठजी! अब आपकी सेवा में आधी उमर तो कट गई, आधी और कट जाएगी।

सेठ किरोड़ीमल रमन के भोलेपन की अक्सर हँसी उड़ाता रहता था। एक बार दूसरे नगर से सेठ रमन के लिए दो पगड़ियाँ लाया। रमन से बोला- “रमन, यह दो पगड़ी मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। एक तुम लगा लेना और अगर तुम्हें कोई अपने से भी बड़ा मूर्ख मिले, तो उसे यह पगड़ी दे देना।” कहकर सेठ हँसने लगा।

रमन ने चुपचाप पगड़ियाँ ले ली। वह घर से बाहर जाता तो एक पगड़ी लगा लेता और दूसरी भी साथ ले जाता। सेठ मजाक में उससे पूछता- “क्यों रमन, क्या अभी तक तुम्हें अपने से बड़ा मूर्ख नहीं मिला?”

रमन मुस्कराकर कहता- “हाँ सेठजी! अभी तो नहीं मिला, मगर मैं अपने से बड़े मूर्ख की तलाश में लगा हूँ। कभी न कभी तो मिलेगा ही।”

अचानक एक दिन किरोड़ीमल की तबियत खराब हो गई। हकीम, वैद्यों के इलाज से भी कुछ असर नहीं हुआ। सेठ को लगा कि बस अंतिम समय आ गया। उसने रमन को पास बुलाया और कहा- “रमन, लगता है मेरा अन्तिम समय आ गया है। मुझे यह संसार अब छोड़कर जाना पड़ेगा।”

रमन ने बड़े भोलेपन से कहा- “सेठजी! मैं भी आपके साथ चलूँगा।”

“अरे मूर्ख, मरने वाले के साथ भी कोई जा सकता है भला। वहाँ तो मुझे अकेले को ही जाना पड़ेगा।” रमन ने मासूम चेहरा बनाकर फिर कहा- “चलो, कोई बात नहीं। आप धन-सम्पत्ति, घोड़ा-गाड़ी तो साथ लेकर ही जाएँगे। इनकी जरूरत तो आपको वहाँ भी पड़ेगी।” सेठ ने कहा- “वहाँ तो सभी को खाली हाथ ही जाना पड़ता है। धन-दौलत, गाड़ी-हवेली सभी कुछ यहीं रह जाएगा।”

तब रमन ने पगड़ी आगे बढ़ाते हुए कहा- “तब तो इस पगड़ी को आप ही लीजिए। भला आपसे बड़ा मूर्ख कौन होगा? सारी उम्र कमाते रहे; न दान किया, न पुण्य। जब कुछ साथ नहीं जाना है तो जोड़-जोड़कर रखने का क्या लाभ? सेठ, रमन की बात सुनकर निरुत्तर हो गया।

GOOD BOX

जय जिनेन्द्र बच्चों!

Good Box में पिछले महीने आपने साधुजी और सतियाँजी म.सा. के डेली रूटिन के बारे में जाना, तो क्या आप लोग गए दर्शन करने? अगर नहीं गए तो प्लीज जाएँ...। चातुर्मास प्रारम्भ चुका है और हमारे अच्छे बच्चे इस “चातुर्मास को बनाएँगे खास” Wait... Wait... क्या आपको महाराज सा. के दर्शन के नियम पता है?

Ofcourse नियम होते हैं। जैसे आपके स्कूल जाने के नियम/रुल्स होते हैं, वैसे ही स्थानक जाने के भी नियम होते हैं, जिन्हें हम ‘अभिगम’ कहते हैं और ये अभिगम पाँच होते हैं। इनको हम जानेंगे हृदय और उसके पिताजी से So let's go...

हृदय- अभिगम किसे कहते हैं?

पिता- अभिगम यानी ‘प्रवेश/कोड’। जैसे लॉकर खोलने के लिए ‘कोड’ की आवश्यकता होती है, इनबॉक्स खोलने के लिए ‘पासवर्ड’ की आवश्यकता होती है, वैसे ही स्थानक में प्रवेश करने के लिए कुछ नियमों की पालना आवश्यक होती है।

हृदय- क्या स्थानक में प्रवेश करने वाला हर इंसान नियमों का पालन करता है?

पिता- स्थानक में प्रवेश करने वाले हर इंसान को नियम से इनका पालन करना चाहिए, लेकिन कई लोग जो अनजान होते हैं, वे इन नियमों का पालन नहीं करते। ऐसे लोगों को साधु/साध्वी अथवा श्रावक-श्राविकाओं से जानकारी मिल जाती है।

हृदय- क्या आप इन पाँच अभिगमों के नाम बता सकते हैं?

पिता- हाँ-हाँ, वे इस प्रकार हैं-

1. सचित्त (सजीव) का त्याग करके स्थानक में प्रवेश करना।
2. अचित्त (निर्जीव) का विवेक।
3. उत्तरासन- मुखवस्त्रिका धारण करके स्थानक में प्रवेश करना तथा अपने पहने हुए वस्त्र भी शालीनता युक्त हो।
4. दृष्टि वंदन।
5. मन की एकाग्रता।

हृदय- मैं कन्फ्यूज हो गया हूँ। सचित्त... अचित्त... ये सब क्या होता है? मुझे समझाइए।

पिता- सचित्त यानी ‘जीव सहित’ अर्थात् जिसमें आत्मा हो। जो भी पदार्थ जीव सहित होते हैं, उन्हें सचित्त कहा जाता है। उनका वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है-



1. इलेक्ट्रॉनिक यंत्र- मोबाइल, लैपटॉप, जलती हुई टॉर्च, बैटरी से चार्ज घड़ी इत्यादि। इन सबको तभी ले जाया जा सकता है जब इनमें से बैटरी निकाल दी गई हो। मोबाइल में बैटरी हटाने पर भी उसमें एक छोटी बैटरी निर्मित होती है, जिसके कारण स्थानक में मोबाइल ले जाने का निषेध है।



2. फल और सब्जियाँ- साबुत फल व सब्जियाँ (पका हुआ केला छोड़कर, क्योंकि वह बीज रहित होता है) सचित होने से उन्हें स्थानक में नहीं ले जाना चाहिए।



3. फूल- सारे असली ताजे फूल।



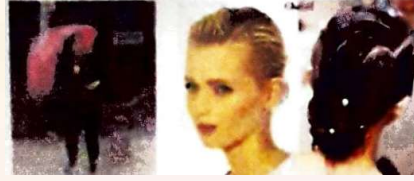
4. मसाले तथा मेवे- कुछ मसाले तथा ड्राईफ्रूट स्थानक में ले जाना मना है।
मसाले- इलायची, सरसों के दाने, जीरा, मैथी को दाने तथा सौंफ के दाने।



ड्राईफ्रूट- किशमिश, बादाम, अखरोट, खुर्मांनी, अंजीर तथा चिरौंजी।



5. पानी- बारिश में भीगा हुआ अथवा जिसके शरीर पर कच्चे पानी की बूँदें हो तो स्थानक में प्रवेश नहीं कर सकता है। यदि किसी के बाल भी गीले हो तो वह स्थानक में प्रवेश नहीं कर सकता है।



हृदय- अचित्त क्या होता है ?

पिता- सचित्त का विपरीत अचित्त है। सारी निर्जीव वस्तुएँ अचित्त होती हैं। जैसे- जूते, टोपी, घड़ी, ऑटोमैटिक घड़ियाँ इत्यादि। स्थानक में प्रवेश करते समय ध्यान रखना चाहिए कि इन वस्तुओं को एक किनारे पर अलग से रख दिया जाए। थोड़ी और सूक्ष्मता से बताने के लिए-

1. विशुतीय यंत्र- ऑटोमैटिक घड़ी, बुझी हुई टॉर्च, टी.वी. का रिमोट, गाड़ी की चाबी/रिमोट इत्यादि।



2. फल और सब्जियाँ- जो भी पकायी हुई हो, उबाली हुई हो अथवा बीज से अलग कर दी गई हो, वह अचित्त होती हैं।

जैसे- पके हुए फल का रस/जूस, किसी भी सब्जी का जूस, यदि ठीक से उबाला गया हो अथवा मथा गया हो।



3. मसाले अथवा मेवे- सचित्त में बताए गए सभी मेवे व मसाले छोड़कर सब अचित्त हैं। यदि बादाम की नोक तोड़ी हुई हो तो वह टूटी हुई नोक का बादाम अथवा अच्छे से गरम पानी में उबला हुआ बादाम ही अचित्त होता (माना जाता) है।



4. पानी- उबला हुआ पानी अथवा वह पानी जिससे दाल, चावल आदि धोए गए हों अथवा जिस पानी से राख के द्वारा मांजे गए बर्तन धोए गए हों वह अचित्त माना जाता है।

हृदय- आपने कहा था कि शालीनतायुक्त वस्त्र पहनना चाहिए। वे वस्त्र किस प्रकार के होते हैं?

पिता- शालीनतायुक्त वस्त्रों से मेरा आशय ऐसे वस्त्रों से हैं जिनसे शरीर पूरा ढका हो। भड़कीले एवं पाश्चात्य सभ्यता को बढ़ावा देने वाले वस्त्र कतई नहीं पहनने चाहिए। पुरुष व महिला दोनों को मुखवस्त्रिका अवश्य पहननी चाहिए।



हृदय- दृष्टि वंदन क्या होता है?

पिता- स्थानक में प्रवेश करते समय निसीहि-निसीहि कहना चाहिए। उसके बाद यदि कोई साधु-साध्वी न दिखाई दे तो जोर से 'मत्थण वंदामि' बोलना चाहिए। यदि साधु/साध्वी किसी निजी कार्य में व्यस्त न हो तो वे अन्दर आने को कहते हैं। उस वक्त दृष्टि वंदन होता है। उस समय तिक्खुत्तो के पाठ से वंदना करनी चाहिए।

हृदय- निसीहि-निसीहि का क्या मतलब होता है?

पिता- निसीहि यानी सारे पापों से निवृत्त होता हूँ।

हृदय- आपने पाँचवां अभिगम मन की एकाग्रता बताया है। यह कैसे संभव है।

पिता- अभ्यास के द्वारा अपने मन को एकाग्रचित्त किया जा सकता है। यह अभ्यास स्थानक में अच्छे से हो पाता है।

स्थानक में मौजूद सभी का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का होता है तथा सब उसी के विषय में ही वार्तालाप करते हैं।

सबका अन्तिम उद्देश्य समान ही होता है- मोक्ष प्राप्ति का।

हृदय- क्या वार्तालाप मात्र से हमें मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है?

पिता- नहीं, मात्र चर्चा-वार्ता से नहीं, बल्कि मोक्ष प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। अपने जीवन में इसका अभ्यास करना पड़ता है। जब हमारा मन मोक्ष प्राप्ति के हेतुभूत एकाग्रचित्त होता है, तब हम उसे प्राप्त करने का तरीका समझ पाते हैं। श्रावकों के लिए आगार धर्म तथा साधुओं के लिए अणगार धर्म का विधान बताया गया है।

ये दो प्रकार के धर्म हमें कर्म काटने में सहायता प्रदान करते हैं तथा सही तरह से पालन करने पर मोक्ष की ओर ले जाते हैं।

-क्रमशः



बालमन में उपजे ज्ञान

—मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

(चातुर्मास प्रारम्भ हो चुका है, हमारे घरों में बड़ों के धार्मिक क्रियाकलापों से बच्चों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और पर सोने पे सुहागा के रूप में चारित्रात्माओं का सानिध्य बारह व्रतधारी श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ बच्चों को भी चातुर्मास में तप-त्याग, धर्म-ध्यान के प्रेरित करता है। इससे बालसुलभ मन में जिज्ञासाओं का उठना स्वाभाविक है। देखें कैसे बातों में इन बच्चों ने चातुर्मास का महत्व जान लिया।)

कुछ दोस्त गार्डन में खेलते-खेलते चर्चा कर रहे थे कि-

पंकज :- Next Week से तो हमारे स्कूल शुरू हो रहे हैं। अब तो हम फिर से Busy हो जाएँगे, खेलने का टाइम ही नहीं मिलेगा।

नीलिमा :- हाँ, स्कूल, ट्यूशन, Activity Classes, अब तो हम बस स्कूल में ही मिलेंगे।

सौरभ :- हाँ Friend's, वैसे भी दो साल कोविड की वजह से हमारी सारी पढ़ाई और Activities Disturb हो गई है। अब तो हम सबको बहुत ही Seriously पढ़ाई करनी चाहिए और मैं तो और भी ज्यादा Busy हो जाऊँगा, क्योंकि चातुर्मास जो लग रहा है।

नितिन, नीलिमा, पंकज एक स्वर में- चातुर्मास क्या होता है? और इसमें तुम कैसे Busy हो जाओगे?

सौरभ :- सुनो! चातुर्मास का मतलब है बारिश के मौसम के चार महीने, जिनमें हमारे संत-सतियाँजी म.सा. एक स्थान कर विराजकर धर्म-ध्यान एवं धर्मारुधना कर स्वयं भी लाभ लेते हैं और अन्यो को भी प्रेरित करते हैं, जिससे अनेक जीवों को अभयदान मिलता है। हम लोग साधु-साध्वीजी के दर्शन करने जाते हैं, उनका प्रवचन सुनते हैं, शाम को प्रतिक्रमण करते हैं और इन चार महीनों में विशेष रूप से रात को खाना नहीं खाते।

पंकज :- क्या? (हँसते हुए) रात में नहीं खाते तो कब खाओगे?

सौरभ :- सूर्यास्त से पहले। ये तो तुम सबको पता ही है कि बारिश के मौसम में कितने जीव-जन्तु (Insects) उत्पन्न होते हैं और रात को खाते समय वे रोशनी के प्रभाव से भोजन में गिर सकते हैं, जिससे उनकी घात होती है और ये हार्मफुल भी होते हैं।

नीलिमा :- रात में भूख लगी तो?

सौरभ :- वैसे तो हमारी आदत हो गई है, फिर भी भूख लगे तो तो थोड़ा सहन कर लेते हैं।

नितिन :- और ये प्रति... प्रतिणमक... क्या होता है?

सौरभ :- अरे! प्रतिणमक नहीं, प्रतिक्रमण। इसका मतलब हम दिनभर में जाने-अनजाने में किसी का दिल दुखा दें या जीव की हमसे घात हो जाए अथवा कोई गलती हो जाए तो उसके लिए Sorry feel करने के लिए प्रतिक्रमण करते हैं।

नीलिमा :- गलती तो रोज होती है फिर प्रतिक्रमण चार महीने ही क्यों? (सभी ने हाँ में हाँ मिलाई)

सौरभ :- तुम सब सही कह रहे हो। प्रतिक्रमण करना तो रोज चाहिए, परन्तु ये चार महीने धर्माधना के लिए विशेष होते हैं और महाराज सा. भी विराजमान होते हैं। मैं तो चार महीने ही प्रतिक्रमण करता हूँ, पर मेरी मम्मी और दादीजी तो रोज प्रतिक्रमण करती हैं।

पंकज :- ये अच्छी बात है, पर ये बताओ स्कूल जाओगे या दर्शन करने ?

नितिन :- दर्शन करने जाओगे तो Classes का क्या होगा ?

तुम अपना स्कूल का वर्क Learn करोगे या धर्म का ?

नीलिमा :- रात को नहीं खाओगे तो क्या चार महीने No Hotel, No Party, No Pizza. (चिढ़ाते हुए)

सौरभ :- अरे! अरे! तुम सबने तो पानी की तरह सवाल्लों की बौछार कर दी। सुनो, दर्शन करने तो मैं जा ही सकता हूँ। घर के पास ही स्थानक है अथवा ट्युशन से आते-जाते समय म.सा. के दर्शन कर लूंगा।

सौरभ :- तुम्हारी बात सही है कि स्कूल और प्रवचन साथ-साथ कैसे होंगे ? पापा ने बोला है कि छुट्टी वाले दिन वो मुझे म.सा. के लेकर जाएँगे। और हाँ, नीलिमा तुम मुझे चिढ़ा रही थी ना! तो सुनो- वैसे तो जितना हो सके हमारे घर से कोई होटल जाता ही नहीं है, क्योंकि दादा-दादी को बाहर का खाना सूट नहीं होता। कभी-कभार मम्मी-पापा हमारा मन रखने के लिए हमारे साथ चल लेते हैं और जिन भी चीजों के तुमने नाम बोले ना वो तो मम्मी घर में ही बना देती है। Tasty भी बनता है और Unlimited भी।

(चारों दोस्त कुछ पल चुप हो गए।)

पंकज :- सौरभ! मुझे तुम्हारा Knowledge और चातुर्मास सम्बन्धी सारी बातें बहुत अच्छी लगी।

नीलिमा और नितिन भी हाँ में हाँ मिलाने लगे।

सभी बच्चों ने एक स्वर में सौरभ से जिज्ञासा व्यक्त की- क्या तुम हमें भी वह सब करवाओगे जो तुम चातुर्मास में करते हो ?

सौरभ :- क्यों नहीं! जितना तुम्हें बता पाया उतना बता दिया Next Meeting में और बताऊंगा। अभी मुझे घर जाना है।

Bye-Bye.... (तीनों दोस्त सौरभ की ओर देखते हुए अपने-अपने घर की ओर चल दिए।)

(आगे देखें सौरभ ने कैसे अपने दोस्तों को चातुर्मास संबंधित और जानकारी दी।)

भीतरी सफाई का मौका है चातुर्मास

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

सजा लिया अपने घर को हमने
पर मन को सजाना भूल गए
दर्पण-सा चमका दिया घर को
पर चरित्र चमकाना भूल गए



बंद दरवाजे पर देखो
ज्ञान खड़ा घबराया है
और नादान में इस मैले मन में
प्रभु को बसाना चाह रही

प्रार्थना के स्वर मुखरित हो रहे थे
पधारो! पधारो! प्रभु मेरे हृदय मंझार
करा दो प्रभु मुझे भव से पार
पर झाँका जब अपने अन्दर
देख घबरा उठा अन्तर्मन
कैसे बुलाऊँ प्रभु तुम्हें अपने भीतर
लोभ, मोह से हूँ तरबतर



पर गुरुवर! आपश्री की कृपा से
पाया है जो समता बोध
उदित हुआ स्वर्णिम सूरज का
मन के भीतर उज्वल ओज

जमा हुआ है कचरा मन में
लटक रहे हैं कर्मों के जाले
सदियों से नहीं झाड़ा है मन को
जमी हुई उस पर राग-द्वेष की धूल



सोचा ! इस चातुर्मास की पावन बेला में...
ज्ञान बुहारी से हृदय के जाले तो निकाल लूँ
संतोष सरल हाथों से...
हृदय में छिपे मान-माया के काँटे तो चुन लूँ

क्रोध, मान, माया और लोभ के
जगह-जगह फैले हैं किरचे
कामनाओं और वासनाओं के
टूटे पड़े हैं नल और नलके



तप रहा हृदय जो कषायों के ताप से
क्षमा के जल से सींचकर
हृदय को अपने शीतल तो बना लूँ
दिल में पसरा है जो अज्ञान तिमिर
ज्ञान का दीप तो प्रज्वलित कर लूँ

हिंसा, झूठ, चोरी के देखो
जगह-जगह लगे हैं दाग-धब्बे
खिड़कियाँ सारी बंद पड़ी है
छाया है अज्ञान अंधेरा



विनय विवेक से सुवासित कर
हृदय में श्रद्धा के सुमन तो बिछा दूँ
अब बिछाया है आसन भक्ति का
गुरुचरणों का ध्यान लगा लूँ

अब पधारो प्रभु मेरे द्वार
अब तो पधारो प्रभु मेरे हृदय मंझार



चातुर्मास में अवश्य करणीय

प्रतिवर्ष की भाँति चातुर्मास निकट है। ये चार माह धर्माराधना हेतु बहुत खास होते हैं, जिनमें भरपूर पुरुषार्थ कर धर्म-ध्यान, जप-तप किया जाता है। “यह चातुर्मास बने खास” के अन्तर्गत नीचे कुछ बातें दी गई हैं। जिन्हें चातुर्मास के दौरान अपनी दिनचर्या में अवश्य शामिल करें।

नोट : आप चाहे तो निम्न विषयों में परिस्थिति अनुसार आस-पास विराजित चारित्रात्माओं से प्रत्याख्यान भी ग्रहण कर सकते हैं।

1. चातुर्मास में प्रतिदिन चारित्रात्माओं के दर्शन करने धर्म-स्थान में जाना।
2. चातुर्मास में प्रतिदिन प्रवचन श्रवण का लाभ लेना।
3. चलते समय नीचे देखकर चलना यतनापूर्वक एक-एक कदम बढ़ाना।
4. चातुर्मास में प्रतिक्रमण करना।
5. चातुर्मास में प्रतिदिन स्वाध्याय करना।
6. चातुर्मास में धोवन पानी का प्रयोग करना।
7. चातुर्मास में रात्रि भोजन का त्याग करना।
8. चातुर्मास में जमीकंद का त्याग करना।
9. चातुर्मास में हरी लीलोती की मर्यादा करना।
10. चातुर्मास में द्रव्य की मर्यादा करना।
11. चातुर्मास में सप्ताह में 2 दिन मेकअप सामग्री का उपयोग नहीं करना।
12. चातुर्मास में होटल के खाने का त्याग करना। (आवश्यक होने पर माह में 4 बार से अधिक बार नहीं जाना)
13. चातुर्मास में स्वीमिंग पूल और वॉटर पार्क में नहाने का त्याग करना।
14. श्रावक के 12 व्रत के बारे में समझना और कम-से-कम 3 व्रत ग्रहण करना।
15. चातुर्मास में ब्रह्मचर्य का पालन करना।
16. चातुर्मास में शॉपिंग नहीं करना/ मर्यादा रखना।
17. किसी एक व्यक्ति को जैन धर्म से जोड़ने का प्रयास करना।
18. गलती होने पर बच्चों पर हाथ नहीं उठाना बल्कि प्यार से समझाना।
19. चातुर्मास में किसी पर क्रोध नहीं करना।
20. चातुर्मास में दिनभर में एक बार संयम ग्रहण कर मोक्ष जाना है, ऐसी भावना भाना।
21. चातुर्मास में प्रतिदिन एक सामायिक तो अवश्य करना।
22. चातुर्मास में बालों को कलर/डाई नहीं करना।

23. कोई भी वस्तु खरीदते समय विवेक रखना कि इसमें कोई जीव हिंसा तो नहीं हो रही है।
24. बच्चों को हुक्मसंघ के 9 आचार्यों के बारे में बताना।
25. रविवार को समता शाखा में परिवार सहित अवश्य सम्मिलित होना।
26. चातुर्मास में प्रतिदिन समभाव की साधना करना।
27. चातुर्मास में किसी भी प्रकार पारिवारिक कलह, विवाद (यदि हो तो) उसे खत्म करना।
28. चातुर्मास में हर परिस्थिति में यतना का विशेष ख्याल रखना।
29. साधु-साध्वियों को निर्दोष आहार बहराना।
30. प्रतिदिन सुबह उठते ही पंच परमेष्ठी को वंदन करना।
31. चातुर्मास में 4 महिनों के भीतर कम-से-कम एक तेला करने का पुरुषार्थ करना।
32. चातुर्मास में धार्मिक पुस्तकें (राम उवाच, नानेशवाणी, जवाहर किरणावली आदि) एक-दो पुस्तक पढ़ना और उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारना।
33. चातुर्मास में प्रतिदिन एक विगय का त्याग करने का लक्ष्य रखना।
34. चातुर्मास में संभव हो तो चारों महीने के भीतर पक्की नवकारसी करना। (अथवा माह के 10 दिन)
35. चातुर्मास के 4 माह में 4 उपवास, 4 एकासन, 4 आयम्बिल, 4 बियासन एवं 4 नीवीं करने का लक्ष्य रखना।
36. चातुर्मास में समाज, नगर, राष्ट्र की शांति हेतु प्रतिदिन एक बार प्रार्थना करना।
37. शिक्षा हेतु अहोदान करना।
38. चातुर्मास में पच्चक्खाण अंगूठी ग्रहण करना/पहनना।
39. अपने व्यावसायिक संस्थानों में समता सर्व मंगल आयाम को सम्पादित करना।
40. संघ सेवा से जुड़ने का पुरुषार्थ करना।
41. सभी प्रकार के कुव्यसन का त्याग करना।
42. अनावश्यक मोबाइल नहीं चलाना। केवल आवश्यकता होने पर ही मोबाइल का प्रयोग करना।
43. रात्रि में स्वयं द्वारा पूरे दिन में की गई क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं का चिंतन करना।
44. 4 माह में किसी भी आगम का एक अध्ययन कंठस्थ करना।
45. आचार्य भगवन् के आयामों से स्वयं भी जुड़ना औरों को भी जोड़ना।

उपरोक्त में से जितने नियम आपने ग्रहण कर लिए हैं उनको यहाँ काटे और शेष बचे नियमों को शीघ्र ही ग्रहण करने की भावना को बलवती करें, जिससे कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित होगा =

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45

बढ़ रहे चरण-कमल झीलों की नगरी की ओर।

खत्म हुआ इंतजार निकट ही है चातुर्मास की सुनहरी भोर ॥

नाम, यश पद-प्रतिष्ठा की कामना को छोड़ना बहुत कठिन है -आचार्य श्री रामेश

गुरुवर तुम्हारे चरणों में दुनिया क्यों दौड़ी आती है।

कुछ बात अनोखी है तुम में, जो औरों में नहीं पाती है॥

06 जुलाई को मुमुक्षु बहिन सुश्री अनमोलजी जैन की जैन भागवती दीक्षा उदयपुर में सम्पन्न

रत्नत्रय के आराधक आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा मेवाड़ के कई क्षेत्रों को आध्यात्मिकता से सिंचित कर उदयपुर की पुण्यधरा की ओर बढ़ रहे हैं साथ ही साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द भी बढ़ते हुए गुरुचरण सेवा का लाभ ले रहे हैं। गुणशील, व्यसनमुक्ति अभियान की गाँव-गाँव में पुरजोर प्रभावना की जा रही है। आचार्य प्रवर के श्रीचरणों में क्षेत्र स्पर्शने की विनतियाँ निरन्तर की जा रही हैं।

वेज-नॉनवेज संयुक्त होटल जाने का त्याग

16 जून 2022, फतेहनगर। श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना करवाई। प्रार्थना की मधुर स्वर लहरी से सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय बन गया। समता भवन में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववन्दनीय आचार्य श्री रामेश ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“जिनका मन धर्म में लगा रहता है उन्हें मानव क्या देवता भी नमस्कार करते हैं। आज हम देवी-देवताओं के पीछे भाग रहे हैं। धर्म को धारण करने से देवी-देवता स्वयं चले आएंगे। हमारा विल पाँवर मजबूत होना चाहिए। धर्म की आराधना से आत्मविश्वास मजबूत होता है। तन जाए तो जाए, पर सच्चा धर्म नहीं जाना चाहिए। धर्म की जो रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके आध्यात्मिक आरोग्यम् के नव सूत्र प्रदान किए हैं। हमारी गुणपरक दृष्टि होनी चाहिए। छिद्रान्वेषण का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। हमें लोगों की बुराई नहीं अच्छाई देखनी है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने त्याग, नियम, पचक्खाण से जीवन को सजाने का आह्वान किया। शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **“गुरुवर पधारो हृदय में विराजो, यही कामना है”** गुरुभक्ति गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के चेतनजी खाब्या सहित सकल जैन समाज ने अधिकाधिक विराजने की विनती की। महेश नाहटा ने दिव्य महापुरुषों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। सभा में उपस्थित लगभग सभी भाई-बहिनों ने वेज-नॉनवेज कमाइंड होटल में नहीं जाने का संकल्प लिया। घर में रहते हुए

एक ग्लास धोवन पानी पीने का नियम कई लोगों ने लिया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी सहित दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष अशोकजी जैन एवं श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

18 वर्ष बाद गुरु का समागम मिला

17 जून, फतेहनगर। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने करवाई। समता भवन में विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“धर्म अंदर से स्पर्श हो जाए तो जीवन का कल्याण हो जाए। साधु का दर्शन पुण्यकारी है। साधु-संत माध्यम हैं। हमें साधु संगत से अपने जीवन को महान बनाना है। मोह, नाम, यश, पद, प्रतिष्ठा की कामना को छोड़ना बहुत कठिन है। मन अभी अकुशल है। क्या हित है, क्या अहित इसे यह बोध नहीं है। मेरेपन के भाव को पहले मन से हटाना है। शरीर भी अपना नहीं है। पापकारी क्रियाओं से अलग हटकर हमें धर्म की लौ जलानी है। प्रतिदिन पाँच मिनट अपने आत्मस्वरूप पर विचार करना है।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने गीतिका **“ऐसा अवसर मिला है, मिलेगा कहाँ”** गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि प्रभु और गुरु की वाणी का अन्दर स्पर्श हुआ कि नहीं आत्मचिंतन करें। नवकारसी, पौरसी, उपवास, पौषध आदि से आत्मा को स्पर्श करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए। स्थानीय गुरुभक्तों ने कहा कि अठारह वर्ष बाद गुरुदेव का यहाँ पधारना हुआ है तो कम से कम अठारह दिन यहाँ विराज कर धर्मलाभ प्रदान करने की कृपा करें।

माह में एक दिन मोबाइल त्याग अनेक लोगों ने लिया। सामायिक दिवस में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। सकल जैन समाज सहित स्थानीय गुरुभक्तों ने अधिकाधिक विराजने की विनती की।

18 जून, चंगेड़ी (उदयपुर)। जैन स्थानक में आचार्य भगवन् आदि ठाणा-7 का जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश पश्चात् आयोजित धर्मसभा में शास्त्रज्ञ आचार्यदेव ने अपनी पीयूष-वर्षिणी वाणी में फरमाया कि **“धर्म उत्कृष्ट मंगल है, उत्कृष्ट की साधना करेंगे तो हम भी अपने आपको उत्कृष्ट बना सकेंगे। ऊँचाइयों को प्राप्त करना है तो धर्म हमारा सहायक है। ऊँचाइयां दो प्रकार की हैं- एक भौतिक ऊँचाइयां, जिसमें धन कमा लिया, परिवार बढ़ा लिया, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली, विश्व में एक नम्बर के अधिकारी बन गए, राजा बन गए या चक्रवर्ती बन गए। बस चक्रवर्ती से आगे ऊँचाई नहीं है। छह खंड पर अपना आधिपत्य हो जाए फिर भी शान्ति और समाधि नहीं है। इसलिए चक्रवर्ती भी पद छोड़कर मुनि जीवन को स्वीकार करते हैं। जो सुख चक्रवर्ती को नहीं है, वह सुख साधुता में है। जो शान्ति और समाधि साधुता में मिलती है वह चक्रवर्ती में नहीं मिलती। जितना मेरेपन का संबंध जुड़ा रहता है उतना ही दुःख और कष्ट है। साधु जीवन उस साधना का नाम है जिसमें वह मानता है कि मेरा कुछ भी नहीं है। साधु को कोई चिन्ता नहीं,**

फिक्र नहीं, तनाव नहीं, भय नहीं। साधु को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए। जितनी ज्यादा सहनशीलता होगी उतनी ही ज्यादा ऊँचाइयां प्राप्त करेगा।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिसमें योग्यता होती है उसकी पूजा होती है। राग-द्वेष, कषाय को नाश करने वाले अरिहंत बन गए। राग-द्वेष कम करने की दिशा में हर कदम बढ़ाएँ और वीतराग अवस्था को प्राप्त करें। महिला मंडल ने “जिनशासन के वीरों को वन्दन है, अभिनन्दन है” गीत प्रस्तुत किया। बालिका मण्डल ने “राम गुरु पधारे हैं, खुशियाँ ही खुशियाँ लाए हैं” स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

स्थानीय गुरुभक्तों ने कहा कि आचार्य भगवन् की कृपा सदैव ही इस छोटे-से गाँव पर रही है। यहाँ पधारकर गुरुदेव ने हम पर महान उपकार किया है।

कई भाई-बहिनों ने 12 एकासन, 12 उपवास, 12 आयंबिल करने, पाँच लोगों को व्यसनमुक्त कराने का संकल्प लिया। परम गुरुभक्त अशोकजी चेलावत-निम्बाहेड़ा के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व सन्देश प्राप्त किया।

दोपहर में श्री अटलमुनिजी म.सा. ने “मृत्यु को महोत्सव कैसे बनाएँ” विषय पर प्रभावी उद्बोधन दिया।

भाई-भाई का प्रेम राम-भरत जैसा हो

19 जून, खेमपुर (उदयपुर)। परम प्रतापी आचार्य भगवन् आदि ठाणा-7 का चंगेड़ी से 6 किमी. विहार कर जैन स्थानक खेमपुर में जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ। हाई स्कूल में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए तरुणतपस्वी आचार्य भगवन् ने फरमाया कि “दान में वस्तु का नहीं भावों का महत्त्व है। “देता भावे भावना लेता करे सन्तोष।” दान देते समय भावों का उल्लास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शालिभद्र ने पूर्वभ्रम में एक तपस्वी मुनिराज को अत्यन्त भावोल्लासपूर्वक खीर बहराई थी। फलस्वरूप अपार सिद्धी के स्वामी बने। आज इतने वर्षों के बाद भी महापुरुष राम को याद किया जा रहा है। वे पिता की आज्ञा से खुशी-खुशी वन चले गए। कैकेयी के बारे में भी अन्यथा विचार नहीं किया। उनका अनुपम त्याग सबके लिए प्रेरणास्रोत है। राम-भरत का भाई प्रेम भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। आज भाई-भाई जमीन-जायदाद, सम्पत्ति के लिए आपस में लड़-झगड़ कर कोर्ट-कचहरी में जा रहे हैं। आपसी स्नेह, प्रेम समाप्त हो रहा है। एक चौके के 2-3 चौके हो रहे हैं।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मन जब अशुभ विचार में रहता है तो नरक का अधिकारी बनता है और जब शुभ विचार में रहता है तो मोक्ष का अधिकारी होता है। साधु को जिस तरह जीवों की रक्षा के प्रति संवेदना होती है वैसी ही श्रावक को होनी चाहिए। महिला मण्डल ने “गुरुवर आए सभी के मन भाए” गुरु वन्दना गीत प्रस्तुत किया।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं पूर्व विधि मंत्री राज. सरकार श्री शान्तिलालजी चपलोत ने अपने भावोद्गार में कहा कि महान आचार्य श्री रामेश के आगमन से मेवाड़ की धरती पावन-पवित्र हो गई है। आपके उपदेश से जन-जन सन्मार्ग को अपना रहा है।

कई भाई-बहिनों ने 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास आदि अनेक प्रत्याख्यान, माह में एक दिन मोबाइल का त्याग एवं धन-सम्पत्ति, जमीन-जायदाद के लिए भाई-भाई ने कोर्ट-कचहरी नहीं जाने का संकल्प लिया।

व्यसनमुक्ति के संकल्प भी हुए। समता युवा संघ-अहमदाबाद ने भोजन करते समय टी.वी., मोबाइल का उपयोग नहीं करने का प्रत्याख्यान सामूहिक रूप से लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा व प्रश्नोत्तरी में अनेक जिज्ञासुओं ने अपनी ज्ञान शंकाओं का समाधान प्राप्त किया।

वल्लभनगर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 ने जिनशासन की अद्भुत प्रभावना की।

धन के चक्कर में धर्म को डाउन न करें

20 जून, मावली (उदयपुर)। खेमपुर से 9 किमी. का विहार करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् का मावली में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ आयोजित धर्मसभा में भगवान महावीर की अमृतदेशना का पान कराते हुए आचार्यदेव ने फरमाया कि “अपने मन को लगाने के लिए जाप की आवश्यकता होती है। किन्तु जाप के साथ हमारा कर्म भी वैसा होना जरूरी है। राम-राम तो बोल रहे हैं किन्तु “मुँह में राम बगल में छुरी”। हमारी क्रिया क्या है, हम क्या कर रहे हैं? जैन कुल में जन्म लिया यह हमारा सौभाग्य है किन्तु सौभाग्य का लाभ क्या लिया? जो मेरे साथ जाने वाला नहीं है उसके साथ मेरा लगाव है। आजकल पैसे प्यारे हैं और दिमाग पर पैसा हावी हो गया है। पैसे को सिर पर हावी मत होने दो। धन सिर पर रहने से धर्म डाउन हो जाता है। यदि मन में सन्तोष नहीं है तो धन किस काम का? जैन धर्म का नाम कितना ऊँचा है, हम आत्मचिन्तन करें।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि “आध्यात्मिक आरोग्यम्” के एक सूत्र सामूहिक स्वाध्याय को अधिकाधिक हम लागू करें। हमें जैन संस्कारों को व स्वाध्याय प्रवृत्ति को आगे बढ़ाना है। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने टी.वी., मोबाइल से बचने का आह्वान किया।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ मावली जंक्शन की ओर से उपस्थित प्रतिनिधि ने कहा कि अठारह साल बाद भगवन् का यहाँ पधारना हुआ है। अधिकाधिक विराज कर सान्निध्य लाभ प्रदान करने की कृपा करें।

कई लोगों ने अपने घरों में सामूहिक प्रार्थना-स्वाध्याय करने, वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास करने, गाड़ी चलाते समय एवं खाना खाते समय मोबाइल व टी.वी. नहीं देखने का संकल्प लिया। “आई जैन माई जैन शिविर” की बालिकाओं ने आठ कर्म, चार गति व सुन्दर भाव गीतिका प्रस्तुत की। गीतिका के भाव इस प्रकार थे-

ये हुक्मसंघ के विधाता हैं, इन्हीं से हमारा नाता है।
ज्ञान-दर्शन के दाता, जन-जन के भाग्य विधाता है॥
हे राम गुरु आगम के ज्ञाता, उच्च क्रिया से नाता है।
नाना गुरु ने सौंप दिया, संघ के भाग्य विधाता है॥

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी सहित अनेक गणमान्यजनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा व प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

21 जून, मावली (उदयपुर)। प्रातःकालीन शुभ बेला में मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “धर्मक्रियाएँ करे

हुए यह लक्ष्य रखना चाहिए कि मेरे भीतर से कषाय दूर हो, राग-द्वेष दूर हटें। किसी अनुकूल पदार्थ पर अनुकूलता का भाव जहाँ पैदा होता है वह है राग और प्रतिकूलता का भाव है द्वेष। अनुकूलता है वहाँ प्रतिकूलता आएगी और प्रतिकूलता है वहाँ अनुकूलता आएगी। अधिकांश लोग प्रतिकूलता से डरते हैं। अनुकूल परिस्थिति में मुग्ध नहीं होना और प्रतिकूल अवस्था में खिन्न नहीं होना। यह पाठ हमें धर्म से मिलता है। भगवान महावीर के जीवन में भी कई उतार-चढ़ाव आए। पुण्य और पाप दोनों हमें अनुकूल-प्रतिकूल स्थिति देने वाले होते हैं। धर्म हमें दोनों में समभाव सिखाता है।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने “दुनिया में देव अनेकों हैं, अरिहन्त देव का क्या कहना” गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो भगवान की महिमा में डूबा रहता है उस व्यक्ति के शत्रु नहीं होते। मुनिश्री ने एक वर्ष में 10 धार्मिक स्तवन कंठस्थ करने की प्रेरणा दी।

22 जून, आसोलिया की मादड़ी (उदयपुर)। परमप्रतापी, आचार्य भगवन् आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। इस क्षेत्र में एक भी जैन घर नहीं होने के बावजूद भी ग्रामीणों ने एवं अपूर्व धर्म व गुरुनिष्ठा के भाव प्रकट किए।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने अपने उद्गार में फरमाया कि मनुष्य जन्म जिनवाणी श्रवण करने, उस पर श्रद्धा करने, पाँच इन्द्रियों का योग और महान राम गुरु का शरणा मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। अब नहीं तिरेंगे तो कब तिरेंगे? देव, गुरु, धर्म पर हमारी अटूट श्रद्धा समर्पणा होनी चाहिए। एक सामायिक राजा श्रेणिक को नरक से बचाने वाली थी। हम भी शुद्ध एक सामायिक करने का सदैव लक्ष्य रखें। कई भाई-बहिनों ने चार पक्की नवकारसी एवं गाड़ी चलाते व भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का नियम लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। साहित्यकार नरेन्द्रसिंहजी आसोलिया ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

23 जून, नांदवेल (उदयपुर)। परमप्रतापी आचार्य भगवन् आदि ठाणा का राजकीय विद्यालय में जय-जयकारों के साथ अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में मंगल पदार्पण हुआ। धर्मप्रेमी ग्रामीण जनता के साथ ही अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा एवं ज्ञानचर्चा का लाभ लिया। गुणशील के संकल्प हुए।

गुरु दर्शन की अभिलाषा में दिन गिन रहे साध्वीवृन्द

1128 दिन बाद हुए दर्शन

24 जून, चंदेसरा (उदयपुर)। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् आदि संतवृन्द का नांदवेल से जयघोषों से गुंजित धर्ममय वातावरण में चंदेसरा के महावीर भवन में मंगल आगमन हुआ। मंगल प्रवेश पश्चात् आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, किन्तु उनके प्राणों का हनन होता है। इससे जीव को पीड़ा होती है, दर्द होता है। इसलिए किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए। अहिंसा का व्यापक अर्थ है कि हमारे भीतर जीने-मरने की आकांक्षा पैदा नहीं हो। “लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जाए” ना जीने की खुशी है ना मरने का गम है, क्योंकि मेरी आत्मा अजर-अमर है। संथारा-संलेखना जब आता है तो उसमें न जीने की आकांक्षा होती है और न मरने की। यह

अहिंसा का रूप बनेगा। संयम का अर्थ आत्म-नियंत्रण है। अपना नियंत्रण अपने हाथ में होना चाहिए।”

श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारी श्रद्धा में नकलीपन नहीं होना चाहिए। संयोग-वियोग में बदलते हैं। हमारा सफर अकेली आत्मा का है। हम अच्छे कार्य करेंगे तो अच्छी जगह जाएँगे और यदि हमने बुरे कार्य किए तो बुरी जगह जाएँगे। गुरु के प्रति हमारी श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए।

साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि आज का दिन खुशियों का पैगाम लेकर आया है। पहले 14 सालों के बाद दर्शन हुए और आज पुनः 1128 दिनों के बाद दर्शन हुए। राम गुरु वह सूर्य का प्रभात है, जिससे अज्ञान-अंधकार मिटता है। गुरु दर्शन में अनेक फल व शक्ति है। साध्वीवृन्द ने “राम गुरु के चरणों में वंदन है, अभिवंदन है” गीतिका प्रस्तुत की। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

25 जून, गुडली (उदयपुर)। परमश्रद्धेय आचार्यदेव एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का गगनभेदी जय-जयकारों व मंगल गीतों के साथ राजकीय स्कूल में पदार्पण हुआ। धर्मसभा में भगवान महावीर की वाणी का वर्षण करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “**धर्म ही वह तत्त्व है, जो कर्मों की निर्जरा कराने वाला है। वही आत्मा पर पड़े हुए कर्म मैल को दूर करने में समर्थ है। हमारी प्रवृत्ति, हमारी क्रिया, हमारे योग का परिस्पंदन निरन्तर कर्मबंध कराने वाले हैं कर्म पुण्य रूप होते हैं या पाप रूप होते हैं? इसकी परिणति दो प्रकार की होती है- पाप के रूप में या पुण्य के रूप में। किन्हीं-किन्हीं कर्मों का परिणाम पाप के रूप में, दुःख के रूप में, कष्ट के रूप में, संक्लेश के रूप में मिलता है। कुछ ऐसे कर्म होते हैं जिनके परिणाम सुख देने वाले एवं चित्त को प्रसन्नता देने वाले होते हैं। पुण्य से शुभ फल प्राप्त होता है। तीर्थकर देवों की वाणी पर आस्था हमें आराधक बनाने वाली होती है, निर्जरा कराने वाली नहीं।”**

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी सुनना अतिदुर्लभ है। वर्तमान में जीने वाला वर्द्धमान बन जाता है। अभवी जीव उच्च साधना करने से भी इस संसार को पार नहीं कर सकता। जिस समय हम जो कार्य कर रहे हैं उस समय हमारा मन उसमें तल्लीन हो जाना चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने “**तूँ साँचो थारो साँचो रे दरबार रे**” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तरुण कावड़िया एवं गणपत कावड़िया ने कहा कि आज तिरण तारण जहाज पधारे हैं। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि हुए। धर्म का जबरदस्त ठाठ लगा रहा।

26 जून, गुडली (उदयपुर)। प्रातःकालीन मंगल बेला में सामूहिक रूप से समता रविवारीय शाखा श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य प्रवर ने फरमाया कि “**आत्मा की लय जुड़ने से परमात्मा के तार झंकृत होंगे। यदि हमारे में प्रीत है तो हमें अच्छाइयाँ ही नजर आएगी। चाहे व्यक्ति में कितनी ही बुराई क्यों न हो, लेकिन प्रीत सदैव आँखों में दिखती है, जिससे हमें बुराई नजर नहीं आएगी। मेरी आँखें अच्छी है तो अच्छाई नजर आएगी और मेरे गलत चश्मा लगा हुआ है तो अच्छाई नजर आनी मुश्किल है। मोह का चश्मा उल्टा होता है।**

श्रद्धा का चश्मा सत्य को दिखाने वाला होता है। जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती वैसे ही हमारे मन-मन्दिर में कोई एक रहेगा तो शान्ति व समाधि मिलेगी। दो रहेंगे तो द्वन्द्व मचेगा। दो घोड़ों की सवारी बहुत खतरनाक होती है। वैसे ही परिवार का ममत्व और परमात्मा की प्रीत ये दोनों चीजें साथ-साथ नहीं टिक सकती। हमारी एक मात्र परमात्मा से प्रीत हो।”

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मेरे भीतर में रुग्णता का एक अंश भी न रहे। हम अपने आध्यात्मिक आरोग्यम् को मजबूत बनाएँ। जैसा हमारा मन रहेगा वैसी हमारी क्रिया होगी। हमारी सोच, व्यवहार, क्रियाएँ, आचरण आदि बिलकुल आरोग्य हो, निरोग हो।

शासन दीपिका साध्वी श्री शान्ताकँवरजी म.सा. ने फरमाया कि आराध्यदेव का दर्शन पाकर निहाल हो गई। शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्यदेव के आगमन को अनंत पुण्यवानी का उदय बताया व अधिकाधिक विराजने की विनती की। कई त्याग-पच्चक्खाण हुए। दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि हुए। गुडली संघ की सेवाएँ सराहनीय रही।

27 जून, देवारी (उदयपुर)। परम आचार्य भगवन् ने धर्मसभा में अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “ संसार के सारे प्राणी दुःख से परिपूर्ण हैं। सभी दुःखी हैं। एक भी व्यक्ति, एक भी प्राणी ऐसा नहीं मिलेगा जो दुःखी न हो। भगवती सूत्र में मोह कर्म को दुःख माना गया है। श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र में बताया गया है कि जिसका मोह क्षय हो गया उसको दुःख नहीं होता है। दुःख यानी मोह। मोह बीज है, दुःख उसकी फसल है। यदि हम दुःखी हैं तो निश्चित रूप से हमारे भीतर मोह-ममत्व रहा हुआ है। कहीं ना कहीं कोई लगाव, अहंकार रहा हुआ है। उस लगाव के कारण हम दुःखी होते हैं। ऐसा संभव नहीं है कि किसी को किसी पदार्थ से लगाव हो और वह दुःखी नहीं हो। कभी उसकी वेदना गहरी होती है तो कभी सामान्य। यदि शरीर भाव में हम जीएँगे तो हमें छोटी से छोटी वेदना भी गहरी लगेगी। हम शरीर भाव से ऊपर हो जाएँगे, आत्मा के तल पर यदि जीएँगे, आध्यात्मिक भाव में हमारा रमण होगा तो भयंकर वेदना भी हमारे लिए सामान्य बन जाएगी।”

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अपनी प्रशंसा सुनने की चाह नहीं होनी चाहिए। अपनी इच्छा को शान्त करना चाहिए। यदि मनुष्य व्रत-नियमों की पालना करे तो देव गति को प्राप्त कर सकता है। भगवान के वचनों को सुनना बहुत कठिन है और उससे भी कठिन है जिनवाणी को जीवन में उतारना। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। स्थानीय संघ प्रमुखों ने आचार्यश्री के आगमन पर हर्ष व्यक्त किया। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी रहा।

28 जून, नाकोड़ा नगर, धवई कॉम्प्लैक्स, उदयपुर। परमप्रतापी आचार्य भगवान एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-13 का अपार जनमैदिनी के जय-जयकारों के साथ धर्मनगरी उदयपुर के नानेश नगर में हेमन्तजी नंदावत के निवास पर पदार्पण हुआ। अपार हर्ष व खुशी का माहौल देखने को मिल रहा था। स्थानीय गुरुभक्त आज अपने बीच आराध्यदेव को पाकर अपने भाग्य की सराहना करते नहीं थक रहे थे।

धर्मसभा में दिव्यमान नक्षत्र की भाँति शोभायमान विश्ववन्दनीय आचार्य भगवान् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि सामायिक-स्वाध्याय करने के बाद हमारा मन शान्त हुआ या नहीं, यह आत्मचिन्तन करें। किसी ने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया उस समय हमारे मन में उसके प्रति कोई शिकायत के भाव पैदा तो नहीं हुए। किस-किस को किस-किस से शिकायत है। 'प्रतिक्रिया' में हम अब तक कितना ऊपर उठ पाए हैं। समाधि और द्वन्द दोनों एक साथ नहीं रख सकते हैं। आज पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वी देखने को मिल जाएँगे किन्तु आज बारह व्रतधारी श्रावक-श्राविका मिलना बहुत कठिन है। बाप की सम्पत्ति के लिए लड़ाई करने के लिए तैयार हो जाएँगे, लेकिन उनके दया, पौषध, सामायिक, स्वाध्याय, धर्माराधना को जीवन में धारण करने के लिए तैयार नहीं हो पाते। मनुष्य जन्म रूपी चिन्तामणि रत्न प्राप्त करने के बाद भी अगर जीवन में बदलाव नहीं आया तो यह जन्म व्यर्थ चला जाएगा।"

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में फरमाया कि हमें दिखावा-प्रदर्शन-आडम्बर से दूर होना चाहिए। "अंदर कुछ बाहर कुछ" यह खोट भक्ति में नहीं चलेगी। सामायिक-स्वाध्याय, गुरुभक्ति के लिए आज हमारे पास समय नहीं और टी.वी., मोबाइल तथा व्यर्थ की बातों में आज हम समय को बर्बाद कर रहे हैं। महिला मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास के प्रत्याख्यान कई लोगों ने लिए। उदयपुर के उपनगरों एवं मेवाड़ व देश के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। केसरबाई हेमन्तजी नंदावत परिवार ने स्वधर्मी सेवा वात्सल्य का लाभ लिया। नाकोड़ा नगर के सभी सम्प्रदाय के धर्मप्रेमी भाइयों की सेवा भावना सराहनीय रही।

मोह को छोड़ने से ही होगी मोक्ष की प्राप्ति

29 जून, सुन्दरवास, अरविन्द नगर (उदयपुर)। परम पूज्य आचार्य भगवान् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-15 का भव्य मंगल प्रवेश सादगीपूर्ण माहौल में महावीर भवन में हुआ।

धर्मसभा में ध्रुव तारे के समान विराजित आचार्यदेव ने ज्ञानपिपासु जनता को सम्बोधित करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "धर्म को जीवन में उतारना है तो भीतर असंयम के भाव न हो, किसी को नीचा दिखाने के भाव न हो। हमें भीतर का समीक्षण करना होगा। मोह को छोड़ने से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी। धर्म के लिए हमारा अंतर्मन साफ होना चाहिए। ईर्ष्या, राग-द्वेष, कषाय से दूर होना होगा। राग-द्वेष समाप्त होगा तभी धर्म जीवन में उतरेगा। भीतर शान्ति होगी तो तूफान नहीं आएगा। धैर्य, सहनशीलता को जीवन में प्राथमिकता देनी होगी। समभाव की साधना को जीवन में आगे बढ़ाना होगा। जिसका आत्मबल, मनोबल मजबूत होगा उसे क्रोध, मान, अहंकार जल्दी नहीं आएगा।"

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध को क्षमा से, मान को नम्रता से, माया को सरलता से और लोभ को सन्तोष से जीतें। साध्वी श्री मुदितप्रजाजी म.सा. ने फरमाया कि सावन को जैसे बरसात का इन्तजार रहता है वैसे ही धर्मनगरी उदयपुर को आराध्यदेव का इन्तजार था, जो आज पूरा हो गया। ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप का खजाना है राम

गुरु अब हमें अठाई, मासखमण, तेला आदि तप कर इनका सच्चा स्वागत करना है।

साध्वी श्री गरिमाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने “आए आज महाकृपालु गुरुवर राम है” भाव गीतिका प्रस्तुत की। स्थानीय महिला मण्डल ने “वन्दन है, अभिवन्दन है गुरुवर का” स्वागत गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय गुरुभक्त एवं महेश नाहटा ने महापुरुषों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया।

माह में एक दिन मोबाइल का त्याग कई लोगों ने लिया। दोपहर में श्री लाघवमुनिजी म.सा. द्वारा सूत्रकृतांग सूत्र का सुन्दर विवेचन किया गया। जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में मुनिश्री ने सुन्दर समाधान देकर जिज्ञासुओं को संतुष्ट किया।

30 जून, सुन्दरवास (उदयपुर)। प्रातःकालीन मंगल बेला में मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। महावीर भवन में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववन्दनीय आचार्य श्री रामेश ने फरमाया कि **“जिसने अपने आपको जान लिया, जिसकी आत्मा जागृत हो गई, उसे उपदेश देने की जरूरत नहीं। भोग-राग, स्नेह-बन्धन को छोड़कर वैराग्य भीतर प्रकट हो गया तो वह स्वयं राह ढूँढ लेगा और आत्मा के शाश्वत सुख की ओर उसका कदम बढ़ जाएगा। धर्म में दृढ़ता से धर्म की महिमा का पता चलता है। जैसे जम्बूकुमार ने स्नेह, राग, बन्धन तोड़कर मुक्ति की राह चुन ली।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अरिहन्त भगवान के बताए मार्ग पर हमें चलना चाहिए। अरिहन्त भगवान के कीर्तन, वन्दन का प्रभाव कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा। मुनिश्री ने गीतिका “**ऐसा अवसर मिला है, मिलेगा कहाँ ? जिनशासन मिला है, मिलेगा कहाँ ?**” प्रस्तुत कर सबको भाविविभोर कर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने “हुकमसंघ के रखवाले, पार लगा दे मेरी नैया” गीत प्रस्तुत किया।

4 उपवास का पारणा डॉ. मोनिकाजी बोकड़िया ने किया। बाहर के दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। महावीर स्वाध्याय मण्डल, सुन्दरवास की सेवाएँ प्रशंसनीय रही। दोपहर में श्री लाघवमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में धर्मचर्चा हुई। उदयपुर के उपनगरों की विनतियाँ निरन्तर श्रीचरणों में हो रही है।

6 जुलाई को मुमुक्षु बहिन अनमोलजी जैन सुपुत्री श्री सुरेशचन्दजी कान्ताजी जैन, टिटलागढ़ (उड़ीसा) की जैन भागवती दीक्षा उदयपुर में सम्भावित है। पूरे उदयपुर व मेवाड़ में वर्ष 2022 के आगामी चातुर्मास को लेकर अपूर्व उत्साह, उल्लास व उमंग का वातावरण है।

इन दिवसों में उदयपुर, कपासन, दिल्ली, भूपालसागर, रतलाम, नागदा जंक्शन, निम्बाहेड़ा, बंगईगाँव, चंगेड़ी, मावली, इन्दौर, मुम्बई, आसाम, कांकरला, कोलकाता, अहमदाबाद, चित्तौड़गढ़, बड़ीसादड़ी, फतेहनगर, खेमपुर, बोहेड़ा, गंगापुर, सूरत, वल्लभनगर, ब्यावर, देवरिया, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, हुबली, बदनावर, जलगाँव, अजमेर, सूरत, गुड़ली, आसानिया की मावड़ी, जोधपुर, नाथद्वारा, बम्बोरा आदि अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने गुरुचरणों में पहुँचकर दर्शन-वन्दन-सेवा सहित प्रवचन श्रवण कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया।

**वर्षों की तमन्ना पूरी हुई,
उदयपुर की धरती पावन हुई।**

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश का सेक्टर-4 में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश : मुमुक्षु बहिन सुश्री अनमोलजी जैन की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न वर्षों की तमन्ना पूरी हुई, उदयपुर की धरती पावन हुई। झूमी धरती झूमे गगन, पधार गए गवरा नंदन।

06 जुलाई 2022, उदयपुर। 22 वर्षों की लम्बी प्रतिकक्षा के बाद मेवाड़ की राजधानी धर्मनगरी उदयपुर में युगनिर्माता, नानेश पट्टधर, रत्नत्रय के महान आराधक, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्य प्रवर 1008 श्रीरामलालजी म.सा., बेले-बेले के तपस्वी, बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-15 का भव्य चातुर्मासिक मंगलप्रवेश अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में गगनभेदी जय-जयकारों व मंगल गीतों के साथ प्रातःकालीन बेला में हुआ।

दोपहर 11:55 बजे मुमुक्षु बहिन सुश्री अनमोलजी जैन सुपुत्र श्री सुरेशजी-कान्ताजी जैन, टिटलागढ़ (उड़ीसा) की जैन भागवती दीक्षा अपार जनसमूह के बीच चतुर्विध संघ की उपस्थिति में सौल्लास सम्पन्न हुई। नवीन नामकरण नवदीक्षिता महासती श्री अनमोलश्रीजी म.सा. की घोषणा होते ही सम्पूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

शासन दीपिका साध्वी श्री शान्ताकँवरजी म.सा. के करकमलों से केशलुंचन का कार्यक्रम हुआ।

नव आयाम : श्रावक से सुश्रावक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने अपने श्रीमुख से 6 जुलाई 2022 को उदयपुर में मुमुक्षु सुश्री अनमोलजी जैन की भागवती दीक्षा के सुअवसर पर श्रावक से सुश्रावक बनने की राह बताते हुवे सर्वजन हितार्थ एक नवीन आयाम का सूत्रपात करते हुए निम्नलिखित 11 बिन्दुओं का विवेचन प्रस्तुत किया। हम सभी इन 11 बिंदुओं का पालन करें और स्वयं को “ज्ञानवान एवं क्रियावान सुश्रावक” बनाएँ-

- (1) उत्क्रांति के नियमों की पालना करें।
- (2) नैतिक अर्थोपार्जन हो।
- (3) पुच्छिसुणं एवं श्री दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन कंठस्थ करें।
- (4) प्रतिमाह चार पक्की नवकारसी करने का लक्ष्य रखें।
- (5) जैन सिद्धांत बत्तीसी कंठस्थ हो।
- (6) निर्दोष भिक्षा देने वाले बनें।
- (7) प्रतिवर्ष 12 दया/पौषध करने का लक्ष्य रखें।
- (8) सूखे समाधे प्रतिदिन सामायिक करने का लक्ष्य रखें।
- (9) श्रावक के बारह ही व्रतों को किसी न किसी अंश में स्वीकारने वाला हो।
- (10) सप्त कुव्यसन त्यागी बनें।
- (11) प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा स्वाध्याय (शास्त्र या धार्मिक पुस्तक का पठन) करें।

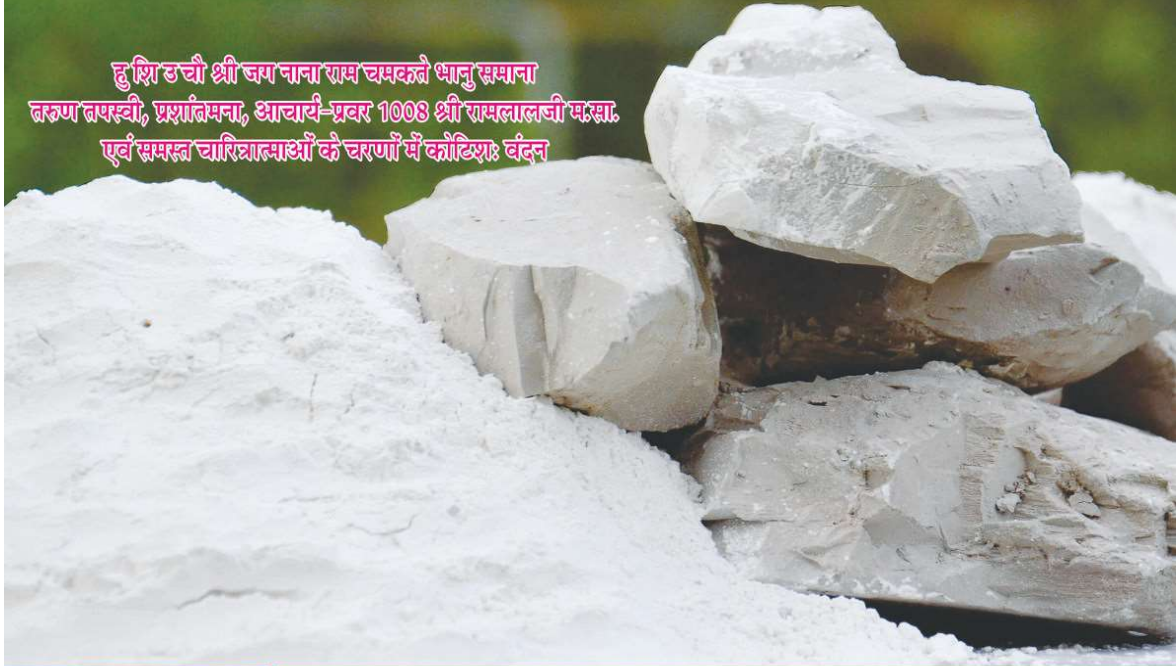
-महेश नाहटा

क्र. स.	प्रत्याख्यान के नाम	आचार्य प्रवर के विचरण दौरान प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम	
1	आजीवन शीलव्रत	चुन्नीलालजी शारदादेवी विरलोट, गणेशलालजी महाजन, रतनलालजी बदामदेवी पोरवाल-निम्बाहेडा, चांदमलजी कमलादेवी कोठारी, कल्पनाजी अशोकजी चेलावत, मिट्टालालजी बसन्तीदेवी सामोता, मिट्टालालजी छाजेड़, मांगीलालजी छाजेड़, सोहनलालजी मनुदेवी बडाला, रोशनलालजी पुष्पादेवी कोठारी, महावीरजी मीनाक्षीजी कोठारी, महावीरजी पटवा, सुजानमलजी कुसुमजी बड़ोला	
2	रात्रिभोजन का त्याग	अनिताजी पोखरना, प्रीतिजी कोठारी, सोनलजी पोखरना, मंजूजी गांग	
3	टी.वी. का त्याग	कमलाजी मारू, झनकारबाई धींग, राजेश्वरीजी चपलोट	
4	उपवास	वर्ष में 40 उपवास	इतिजी बाबेल
		वर्ष में 24 उपवास	लाडबाई बाफना
5	पोरसी	250 पोरसी	इतिजी बाबेल
6	बड़े स्नान का त्याग	वर्ष में 150 दिन बड़े स्नान का त्याग	कैलाशजी कोठारी, मदनजी सुराणा, रमेशजी कोठारी, प्रकाशजी कोठारी, मुकेशजी जैन-चंगेड़ी, चन्द्रशेखरजी जैन, विनोदजी राठौड़, निर्मलजी चपलोट, रमेशजी पोरवाल, सरलाजी कोठारी, रेखाजी जारोली, स्नेहलताजी बागरेचा
		वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	आजादजी लोढ़ा, दीपकजी कावड़िया, शान्ताजी लोढ़ा, प्रकाशजी लोढ़ा, मायाजी मारू, ललितताजी छाजेड़, बसन्तदेवी सामोता, सीमाजी सामोता, अनिताजी खटवड़, सरिताजी सिंघवी, ललितताजी पगारिया, लालदेवी लोढ़ा, कांताजी खटवड़, शान्ताजी वया, सुधाजी नागौरी, शकुन्तलाजी नागौरी, सुशीलाजी नागौरी, मंजूजी माण्डावत
7	पक्की नवकारसी	एक वर्ष पक्की नवकारसी	मायाजी मारू
		50 पक्की नवकारसी	जयजी चौरड़िया
8	बाजार की मिठाई का त्याग	आजादजी लोढ़ा, वसुमतिजी मेहता, संतोषजी पितलिया	
9	जमीकंद का त्याग	प्रियंका जी पितलिया, लाडबाई बाफना, गजेन्द्रजी वया, लालचंदजी वया	
10	वर्षीतप का प्रत्याख्यान	कलाबाई भड़कत्या	
11	सचित्त का त्याग	चन्द्राजी डागा-उदयपुर	
12	21 द्रव्य	त्रिफुलजी पगारिया	
13	माह 10 दिवस का त्याग	प्रकाशचन्दजी सियाल	
14	होटल का त्याग	रेखाजी बंबकी	
15	क्रोध-ईर्ष्या का त्याग	मदनलालजी लोढ़ा	
16	वर्ष में 1 लाख गाथा का स्वाध्याय	मंजूजी कोठारी, ममताजी हींगड़, कैलाशजी हींगड़, सुनीलजी सुराणा	
17	मोबाइल का त्याग (माह में एक दिन)	कैलाशजी कोठारी, मदनजी सुराणा, रमेशजी कोठारी, प्रकाशजी कोठारी, मुकेशजी जैन-चंगेड़ी, चन्द्रशेखरजी जैन, विनोदजी राठौड़, निर्मलजी चपलोट, रमेशजी पोरवाल, सरलाजी कोठारी, हरीसिंहजी भण्डारी, सागरमलजी लोढ़ा, अशोकजी पगारिया, रणजीतजी खटोड़, दिनेशजी छाजेड़, धर्मेशजी लोढ़ा, ललितजी खटोड़, चतरसिंहजी सिसोदिया, सुमनजी सिसोदिया, सोहनलालजी गदिया, पारसमलजी गोखरू, सुजानमलजी पोखरणा, मीठालालजी कोठारी, बंसतीलालजी रायसोनी, शंकरलालजी लोढ़ा, रेखाजी भानावत, मनोरा बोरदिया, अशोकजी मुणोत, रमेशजी मेहता, श्रीकान्तजी चावला, हरीसिंह सिसोदिया, मोतीलालजी डूंगरवाल, सतीशजी जारोली, अमितजी जारोली, आदित्यजी जारोली, राजेशजी पोखरना, सुशील जी पोखरना।	



Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उचौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी मःसा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com



CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

श्रमणोपासक

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ श्री महावीराय नमः ॥

15-16 जुलाई 2022

॥ जय गुरु राम ॥



उदयपुर का कण कण खिला,
गुरु राम का चातुर्मास मिला।



राम महोत्सव 2022

आचार्य श्री रामेश पावन वर्षावास प्रसंग

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्य ज्ञाता,
व्यसन मुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलालजी म.सा.

बहुश्रुत वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर
श्री राजेशमुनिजी म.सा.

आदि ठाणा का पावन वर्षावास 2022 प्रसंग रखे जाने वाले
समस्त आगारों सहित उदयपुर श्रीसंघ को प्राप्त हुआ है।

सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं व श्रीसंघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर श्रीसंघ और परिवार सहित
पधारकर धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

चातुर्मास स्थल - जैन स्थानक भवन, हिरण मगरी सेक्टर 4, उदयपुर 313002 (राज.)

Website - www.udaipurchaturmas.com | Email - udaipurchaturmas@gmail.com

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन संघ
समता युवा संघ

श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति
समता बहु मण्डल

सहयोगकर्ता : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, हि.म. से. 4, उदयपुर

चौका व्यवस्था

अनिल खटोड़
M. 97994-80715

गौतम आंचलिया
M. 97692-20788

आवास-निवास व्यवस्था

सौरभ गौलछा
M. 90015-91024

मनीष कोठारी
M. 90018-33333

चातुर्मास व्यवस्था समिति, उदयपुर

श्रमणोपासक विशेषांक

शीघ्र ही होगा नव आगाज

सादर जय जिनेन्द्र!

समय की गति अति तीव्र है, जिसके साथ चलने का साहस विरले महापुरुष ही कर सकते हैं। समय की माँग एवं आवश्यकता को देखते हुए आचार्य भगवन् निरन्तर जन-जन को धर्म साधना हेतु पुरजोर प्रेरणा दे रहे हैं। जनमानस के आत्मकल्याण हेतु उनका चिन्तन निरन्तर गतिशील है और उनके चिन्तनरूपी आशीर्वचनों व प्रवचनांश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य संघ का मुखपत्र “श्रमणोपासक” अनवरत कर रहा है।

अंधानुकरण में सामान्य जनमानस ने एक ऐसी जीवनशैली अपना ली है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। उसमें ना धर्म के लिए स्थान है, ना साधना का समय। ना चिन्तन करने की चिन्ता है, ना जिनवाणी सुनने की इच्छा। ना कर्मों का भय है, ना ही सम्यक्त्व की समझ। लगभग सभी मिथ्यात्व में डूबते हुए श्रावकाचार को भूलते जा रहे हैं।

महापुरुषों द्वारा आत्मकल्याण हेतु प्रदत्त चिन्तनों को ध्यान में रखते हुए एक ‘विशेषांक’ प्रकाशित किया जाना संभावित है, जिसका विषय **“श्रावकाचार व सम्यक्त्व”** रहेगा।

विशेषांक हेतु आप प्रतिभावान एवं सुज्ञ लेखकों, मनीषियों एवं पाठकों के सुझाव, विचार, रचनाएँ, लेख, कविताएँ, भजन आदि सादर आमंत्रित हैं। आप सुधीगण विशेषांक के सन्दर्भ में अपने विचार अधिकाधिक भेजने की कृपा करें।

विशेषांक हेतु निम्न विषयों पर रचनाएँ आमंत्रित हैं-

1. सम्यक्त्व की महिमा
2. सम्यक्त्व का अर्थ
3. देव, गुरु, धर्म और सम्यक्त्व
4. सम्यक्त्व सम्बन्धी जिज्ञासा-समाधान
5. सम्यक्त्व का उदय व्रतों की चेतना
6. मिथ्यात्व के 10 भेद के प्रयोगात्मक उदाहरण
7. श्रावक का अर्थ
8. श्रावक जीवन व व्रतों की महिमा
9. श्रावक के गुण
10. श्रावकाचार
11. व्रतधारी श्रावक का वातावरण
12. गृहस्थ व श्रावक की विचारधाराओं में अन्तर
13. प्राचीन श्रावक V/s वर्तमान श्रावक
14. श्रावक के तीन मनोरथ
15. ब्रह्मचर्य एक सम्पत्ति है
16. शाकाहार : सर्वोत्तम आहार
17. रात्रिभोजन त्याग : वैज्ञानिक धारणा
18. कषायमुक्त जीवन : आरोग्य जीवन
19. अच्छे श्रोता की क्या पहचान
20. बारह व्रतों का संक्षिप्त स्वरूप
21. स्वधर्मी वात्सल्य की ओर कदम बढ़ाएँ
22. धर्म संस्कार बिन जीवन सूना
23. Jain life style is an ideal life style

विशेष निवेदन है कि आपकी रचनाएँ सुन्दर व स्पष्ट अक्षरों में 1000-1100 शब्दों में समाहित करते हुए अपने नाम, पते व मोबाइल नं. सहित शीघ्रातिशीघ्र व्हाट्सएप्प नं. **9314055390** अथवा ईमेल **news@sadhumargi.com** के माध्यम से भिजवावें।

-सह-सम्पादिका



संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक	
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ	
प्रधान कार्यालय	
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261 helpdesk@sadhumargi.com	
अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक	
गौतम चन्द जैन, मुम्बई	
सह संपादिका	
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर	
श्रमणोपासक सदस्यता	
आजीवन (अर्द्ध मूल्य) (केवल भारत में)	500/-
(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक (केवल भारत में)	60/-
(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक (केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-
संघ सदस्यता	
साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-
साहित्य सदस्यता	
15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-
संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :- E-mail : ho@sadhumargi.com	

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com



व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार : 8955682153	} news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक : 9799061990	
साहित्य : 8209090748	: publications@sadhumargi.com
महिला समिति : 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ : 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा : 7231933008	} examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त : 7976519363	
परिवारांजलि : 7231933008	: anjali@sadhumargi.com
विहार : 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला : 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर : 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन : 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रातः 10.00 से सायं 6.30 बजे तक

लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



Diamond
Dureflex



FIRST TIME IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

Diamond
DUROLON



LUCALOR
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261